# वसन्त के रेशम के कीड़े

माओ तुन



ISBN: 81-87425-78-4 (PB)
81-87425-79-2 (HB)

**मूल्य : रु. 50.00 (पेपर बैक)**
**रु. 100.00 (सजिल्द)**

पहला संस्करण : **जनवरी, 2006**

**परिकल्पना प्रकाशन**
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ-226 020 द्वारा प्रकाशित

क्रिएटिव प्रिन्टर्स, 628/S-28, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

---

VASANT KE RESHAM KE KEEREY: *by* ***Mao Tun***

# कथाक्रम

# वसन्त के रेशम के कीड़े

## 1

बुजुर्ग थुङपाओ नहर के साथ-साथ जाने वाली सड़क के किनारे एक चट्टान पर बैठा था। बगल में एक तरफ उसका लम्बा पाइप पड़ा था। छिङमिङ* का त्यौहार बीते ज्यादा दिन नहीं हुए थे, फिर भी अप्रैल के सूरज का ताप काफी बढ़ चुका था। थुङपाओ की देह अँगारे की तरह दहक रही थी। नहर के किनारे-किनारे सड़क पर पैदल चलते हुए नौका को रस्सी से खींचने वाले मल्लाह एक पतला-सा चुस्त कोट पहने थे, जो सामने से खुला था। वे लोग सामने की तरफ झुककर नौका को लगातार आगे ही आगे खींचते जा रहे थे। उनके चेहरे से पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें टपटप नीचे गिरती जा रही थीं।

दूसरों को इस तरह कठोर परिश्रम करते देख थुङपाओ को और अधिक गरमी लगने लगी। उसके शरीर में खुजलाहट होने लगी। वह अब भी वही फटा-पुराना रूईदार कोट पहने था, जिससे उसने पूरी सरदियाँ गुजार दी थीं। उसका हल्का सूती कोट अब भी साहूकार के यहाँ गिरवी रखा हुआ था। कौन जानता था कि छिङमिङ के त्यौहार के चन्द रोज बाद ही इतनी गरमी हो जायेगी?

निगोड़ा मौसम भी अब पहले जैसा नहीं रहा, थुङपाओ ने मन ही मन कहा और जोर से खखारकर पिच्च से थूक दिया।

नहर का पानी प्रकाश में झिलमिला रहा था और आसपास की हरियाली को प्रतिबिम्बित कर रहा था। दर्पण के समान स्वच्छ और समतल-सपाट जल में यदा-कदा आने-जाने वाली नौकाएँ लहरें उत्पन्न कर रही थीं और तट पर खड़े शहतूत के पेड़ों की लम्बी कतार के प्रतिबिम्ब में नृत्य की सी थिरकन पैदा कर उसे धुँधला बना रही थीं। लेकिन यह स्थिति ज्यादा देर नही रही। धीरे-धीरे पेड़ों के झूमते हुए प्रतिबिम्ब फिर प्रकट होने लगे। कुछ ही क्षणों में वे स्थिर हो गये और पहले की ही तरह स्पष्ट दिखाई देने लगे। शहतूत की गाँठदार शाखाओं में हरी-हरी कोमल कोंपलें फूट रही थीं। नहर के किनारे एक दूसरे से सटे पेड़ों की कतारें दूर क्षितिज

---

* सौर पंचाँग के एक कालखण्ड का सूचक विशेष त्यौहार, जिसे प्रतिवर्ष 5 या 6 अप्रैल को पितृपर्व के रूप में मनाया जाता है।

तक फैली थीं। जिन खेतों में अभी जुताई-बोवाई नहीं हुई थी उनकी सूखी जमीन चटक गई थी और उसमें दरारें पड़ गई थीं। शहतूत के पेड़ इस मौसम में सबसे ज्यादा मूल्यवान होते हैं। थुङ्पाओ के पीछे शहतूत के पेड़ों की एक अन्य लम्बी-सी कतार चुपचाप खड़ी थी। उन पर नन्हीं-नन्हीं कोमल कोंपलें सूरज की गरमी में तेजी से बढ़ती जा रही थीं।

जिस जगह थुङ्पाओ बैठा था उसके पास ही सड़क से लगी एक दुमँजली इमारत खड़ी थी। वह एक रेशम अटेरने की वर्कशाप थी, जहाँ कोयों से रेशम के मुलायम रेशे अटेरे जाते थे। दो हफ्ते पहले उस जगह फौजी टुकड़ी का कब्जा था। आसपास के खेतों में अब भी छोटी-छोटी सुरंगों के अवशेष मौजूद थे। लोग कह रहे थे कि जापानी फौज इस ओर हमला करने वाली है। कस्बे के सब धनी लोग भाग खड़े हुए थे। लेकिन अब फौजी टुकड़ी वहाँ से हट चुकी थी। रेशम अटेरने की वर्कशाप की इमारत खाली हो गई थी और उस पर पहले की ही तरह ताला पड़ गया था। कोयों की बिक्री का मौसम आने से पहले वहाँ शोरगुल और चहल-पहल होने की कोई सम्भावना नहीं थी।

थुङ्पाओ ने नौजवान छन बाबू को—जो छोटे छन बाबू का बेटा था और शहर में रहता था—यह कहते सुना था कि शाङ्हाए (शांघाई) में भारी अशान्ति फैल गई है; वहाँ रेशम बनाने वाले सभी कल-कारखाने बन्द हो गये हैं और अब गाँव की रेशम अटेरने की वर्कशापें भी बन्द होने जा रही हैं। लेकिन उसकी बातों पर उसे यकीन नहीं हुआ था। अपने साठ वर्ष के जीवन-काल में उसने उथल-पुथल और संघर्ष के बहुत से दौर देखे थे। लेकिन ऐसा समय कभी नहीं देखा था जब शहतूत की चमकदार हरी पत्तियों को डाल पर ही सूखने दिया गया हो और उन्हें भेड़ों के चारे के रूप में इस्तेमाल करना पड़ा हो। बेशक, अगर रेशम के कीड़ों के अण्डे परिपक्व ही न होते तो दूसरी बात थी। मगर यह सब भला भगवान की मर्जी के बिना कैसे हो सकता था! उसकी इच्छा के भला कौन टाल सकता था!

"अभी छिङमिङ के त्यौहार को कुछ ही दिन हुए हैं कि इतनी गरमी होने लगी है!" थुङ्पाओ ने शहतूत की हरी कोंपलों पर नजर डालते हुए बड़े आश्चर्य से कहा। उसे जहाँ एक ओर अचम्भा हो रहा था, वहाँ खुशी भी हो रही थी। जहाँ तक उसे याद है, उसकी जिन्दगी में अब तक सिर्फ एक वर्ष ऐसा आया था जब छिङमिङ के त्यौहार के मौके पर उसे रूईदार कोट में गरमी महसूस हुई थी। जब उसकी उम्र कोइ बीस वर्ष की थी और रेशम के कीड़ों के अण्डे सेने में उसे "दो सौ फीसदी" सफलता मिली थी। उसी वर्ष उसका विवाह भी हुआ था। उन दिनों उसका परिवार अपेक्षाकृत खुशहाल था। उसके पिता खेत जोतने वाले अनुभवी बैल की तरह काम में जुटे रहते थे—कोई काम ऐसा नहीं था जिसे वे न जानते हों, कोई काम ऐसा नहीं था जिसे वे न कर सकते हों। उसके बुजुर्ग दादा भी—जिन्होंने सबसे पहले

परिवार को समृद्धि का रास्ता दिखाया था—बढ़ती उम्र के साथ-साथ स्वस्थ व सम्पन्न होते जा रहे थे, हालाँकि "लम्बे बाल वालों"* की कैद में उन्हें भी बरसों कठोर जीवन बिताना पड़ा था।

तब बुजुर्ग छन बाबू अभी जीवित था। उसके पोते, यानी छोटे छन बाबू ने अभी अफीम का सेवन शुरू नहीं किया था ओर छन परिवार का आज जैसा पतन नहीं हुआ था। यही नहीं, हालाँकि छन परिवार एक धनी शरीफजादों का परिवार था, और थुङपाओ का परिवार एक मामूली किसान का परिवार था, फिर भी उसे न जाने क्यों यह लगता था कि दोनों परिवारों का भाग्य एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। बरसों पहले "लम्बे बाल वालों" ने अपनी एक ग्रामीण मुहिम के दौरान थुङपाओ के दादा और बुजुर्ग छन बाबू को कैद कर लिया था और उनसे सात साल तक एक ही कैम्प में मुशक्कत कराई थी। लेकिन उन दोनों ने "लम्बे बाल वालों" का बहुत-सा सोना चुरा लिया था और भाग खड़े हुए थे—लोग इस घटना की चर्चा आज भी करते थे। उन दिनों बुजुर्ग छन बाबू का रेशम का व्यापार फलने-फूलने लगा था। इधर थुङपाओ के परिवार का रेशम के कीड़े पालने का धन्धा भी चमक उठा था। केवल दस वर्ष के अन्दर ही थुङपाओ के दादा ने बीस मू** धान के खेत और दस मू से कुछ अधिक का शहतूत का बगीचा खरीदने के अलावा एक अच्छा खासा मकान भी बनवा लिया था। थुङपाओ के परिवार से तुङछुन गाँव के सारे लोग ईर्ष्या करने लगे थे और छन परिवार कस्बे के सबसे समृद्ध परिवारों में गिना जाने लगा था।

लेकिन बाद में दोनों ही परिवानों का ह्रास हो गया। आज थुङपाओ के पास अपनी कोई जमीन नहीं रह गई थी। यही नहीं, उस पर तीन सौ चाँदी के य्वान*** का कर्जा भी चढ़ चुका था। छन परिवार भी तबाह हो चुका था। लोग कहते थे,

---

* उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में चीन के उत्पीड़ित किसानों ने सामन्ती छिङ राजवंश के खिलाफ इतिहास की एक लम्बी और उग्र क्रान्ति (1851-64) छेड़ दी थी, जो थाइफिङ क्रान्ति कहलाती है। इस क्रान्ति को छिङ शासकों ने बरतानिया, फ्रांस और अमरीका की हस्तक्षेपकारी सेनाओं की सहायता से कुचल दिया था।

थाइफिङ सेना के सैनिकों को छिङ शासक बड़े तिरस्कार के साथ "लम्बे बाल वाले" कहकर पुकारते थे तथा उनसे बेहद डरते और नफरत करते थे। उन्हें जनताके बीच बदनाम करने के लिए वे तरह-तरह की झूठी अफवाहें भी फैलाते थे।

यद्यपि थुङपाओ की आर्थिक स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही थी, फिर भी उसके अन्दर एक धनी किसान के चरित्र की सभी विशेषताएँ मौजूद थीं। अपने वर्ग के अन्य लोगों की ही तरह उसकी मानसिकता भी सामन्ती जमींदार शासकों के ही समान थी।

** 1 मूल=एकड़ का छठा भाग।

*** चीनी मुद्रा की एक इकाई, जो दस च्याओ या सौ फ़न के बराबर होती है।

"लम्बे बाल वालों" ने मरने के बाद मृत्युलोक में छन परिवार पर दावा कर दिया है और यमराज के दरबार में फैसला हो गया है कि छन परिवार चोरी का सारा सोना उसके असली मालिक को लौटा दे; इसलिए छन परिवार की आर्थिक स्थिति तेजी से बिगड़ती जा रही है। थुङ्पाओ भी इस बात पर विश्वास करने लगा था। अगर दैत्य-दानवों की काली छाया न पड़ती, तो भला छोटे छन बाबू जैसे शरीफ आदमी को अफीम की लत कैसे लग जाती?

लेकिन एक बात थुङ्पाओ बिल्कुल नहीं समझ पाता था : छन परिवार के पतन का असर आखिर उसके अपने परिवार पर क्यों पड़ा है? उसके परिवार ने तो "लम्बे बाल वालों" का सोना अपने पास नहीं रखा था। यह सच था कि जब उसके दादा "लम्बे बाल वालों" के कैम्प से भाग रहे थे, तो वे गश्त लगा रहे एक "लम्बे बाल वाले" नौजवान से जा टकराए थे और उन्हें मजबूरन उसकी जान लेनी पड़ी थी। यह बात उसके पिता ने बताई थी। तब उनके सामने और कोई चारा नहीं रह गया था। होनी को भला कौन टाल सकता था! यह सब होने पर भी थुङ्पाओ को अच्छी तरह याद था कि उसके परिवार के लोग "लम्बे बाल वाले" नौजवान की आत्मा को शान्त करने के लिए न जाने कितनी बार पूजा-अनुष्ठान करा चुके थे। उसकी पीड़ित आत्मा मृत्युलोक को छोड़कर अब तक न जाने कितनी बार जन्म ले चुकी होगी! हालाँकि थुङ्पाओ को साफ-साफ याद नहीं था कि उसके दादा कैसे आदमी थे, पर अपने पिता के मेहनती और ईमानदार होने के बारे में उसे तनिक भी सन्देह न था—यह बात वह खुद अपनी आँखों से देख चुका था। थुङ्पाओ स्वयं भी एक निहायत शरीफ आदमी था। बड़ा बेटा आसि और बहू दोनों बड़ी मेहनत और किफायत से घर-गिरस्ती चला रहे थे। सिर्फ छोटा बेटा आत्वो जरा सनकी किस्म का था। लेकिन सभी नौजवान कुछ न कुछ सनकी जरूर होते हैं। वैसे इस लड़के में कोई खास ऐब नहीं था।

थुङ्पाओ ने अपना झुर्रीदार चेहरा ऊपर उठाया—अनेक वर्षों तक धूप में तपने के कारण वह झुलसकर स्याह हो चुका था। बड़ी कातर दृष्टि से उसने नहर को देखा, उसमें तैरती नावों को देखा और किनारे खड़े शहतूत के पेड़ों को देखा। ये सब बिल्कुल वैसे ही थे जैसे उसने बीस वर्ष की उम्र में देखे थे। लेकिन अब दुनिया बिल्कुल बदल चुकी थी उसके परिवार में चावल के बदले कद्दू खाया जाने लगा था और उस पर तीन सौ चाँदी के य्वान का कर्जा चढ़ चुका था।...

दूर कहीं नहर के मोड़ पर मोटर-नौका की सीटी ने समूचे वातावरण का मौन भंग कर डाला। वहाँ भी एक रेशम अटेरने की वर्कशाप थी। नहर के तट को मजबूत बनाने के लिए सलीके से लगाए गये पत्थरों की कतारें दूर से कुछ धुँधली नजर आ रही थीं। वर्कशाप की तरफ से एक छोटी-सी मोटर-नौका धुआँ छोड़ती शान से आ रही थी। वह तीन अन्य बड़ी-बड़ी नौकाओं को खींच रही थी। सहसा नहर का

शान्त जल उद्वेलित हो उठा ओर चंचल लहरें दोनों किनारों की ओर उमड़ने लगीं। एक किसान लम्बे बाँस से छोटी-सी नाव खेता हुआ अपनी नाव समेत किनारे आ लगा और छिछले पानी में उगे नरकट के झुरमुट को पकड़कर खड़ा हो गया। लहरों के आघात से उसकी छोटी-सी नाव हिचकोले खाने लगी। देहात का हराभरा वह शान्त वातवरण मोटर-नौका के इंजन के कोलाहल और बदबूदार धुएँ से दूषित हो उठा।

थुङपाओ की आँखों से घृणा की चिनगारियाँ निकल रही थीं। उसने मोटर-नौका को अपनी तरफ आते, पास से गुजरकर आगे निकलते और सीटी बजाकर दूसरे मोड़ के पास अदृश्य होते देखा था। विदेशी दरिन्दों के तौर-तरीकों से वह बड़ी घृणा करता था। किसी विदेशी दरिन्दे से वह खुद कभी नहीं मिला था, लेकिन उसके पिता एक बार एक विदेशी दरिन्दे का हुलिया उसे बता चुके थे, जिसे बुजुर्ग छन बाबू ने खुद देखा था—लाल रंग की भौंहें, हरे रंग की आँखें और अकड़कर चलना! बुजुर्ग छन बाबू भी विदेशी दरिन्दों से सख्त नफरत करता था। "विदेशी दरिन्दे हमारी सारी दौलत लूट ले गये है," वह अक्सर कहा करता था। जब थुङपाओ ने बुजुर्ग छन बाबू को अन्तिम बार देखा था, उस समय थुङपाओ की उम्र सिर्फ आठ-नौ वर्ष की रही होगी। इसलिए उसके बारे में वह जो कुछ भी जानता था वह सब उसने केवल दूसरे लोगों से सुना था। लेकिन जब भी थुङपाओ को उसकी यह बात याद आती—"विदेशी दरिन्दे हमारी सारी दौलत लूट ले गये हैं"—तो दाढ़ी पर हाथ फेरते और बार-बार सिर हिलाते बुजुर्ग छन बाबू की आकृति उसकी आँखों के सामने नाच उठती।

विदेशी दरिन्दों ने आखिर यह सब कैसे किया, इसकी स्पष्ट जानकारी थुङपाओ को न थी। फिर भी उसे पक्का यकीन था कि बुजुर्ग छन बाबू की बात सही है। कुछ चीजें वह खुद भी साफ-साफ देख चुका था। जब से बाजार में विदेशी माल—कैम्बरिक, कपड़ा, तेल इत्यादि—आने लगा था, जब से नहर में विदेशी मोटर-नौकाओं का आना-जाना शुरू हुआ था, तब से बाजार में उन तमाम चीजों के दाम गिरते जा रहे थे जिन्हें वह स्वयं पैदा करता था और उन तमाम चीजों के दाम बढ़ते जा रहे थे जिन्हें वह बाजार से खरीदता था। नतीजा यह हुआ कि उसके पिता द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति सिकुड़ती गई और अन्त में पूरी तरह खत्म हो गई। अब तो उसकी हालत इतनी बिगड़ गई थी कि उस पर कर्ज भी चढ़ गया था। स्पष्ट था कि थुङपाओ अकारण ही विदेशी ददिन्दों से घृणा नहीं करता था।

विदेशियों के बारे में उसके विचार गाँव में किसी से छिपे न थे। पाँच साल पहले 1927 में किसी ने उससे कहा था : नई क्वोमिन्ताङ सरकार कहती है कि वह विदेशी दरिन्दों को "बाहर खदेड़ना" चाहती है। थुङपाओ को उसकी बात पर बिल्कुल यकीन नहीं हुआ था। कारण यह था कि कस्बे में जाकर वह क्वोमिन्ताङ

के प्रचार-दल के नौजवान सदस्यों को तकरीरें करते देख चुका था, जो चिल्ला-चिल्ला कर "विदेशी दरिन्दरों को बाहर खदेड़ दो!" के नारे लगाते थे, लेकिन स्वयं पश्चिमी ढंग की पोशाक पहनते थे। उसका ख्याल था कि उनका विदेशी दरिन्दों से अवश्य कोई गुप्त सम्बन्ध है और उन्हें गाँव के लोगों को बहकाने के लिए जानबूझकर भेजा गया है। क्वोमिन्ताङ ने सचमुच कुछ समय बाद इस नारे का परित्याग कर दिया और कीमतों व टैक्सों में लगातार वृद्धि होती गई। थुङपाओ को पक्का यकीन था कि यह सब विदेशी दरिन्दों के साथ सरकार की साँठगाँठ का ही परिणाम है।

पिछले वर्ष एक ऐसी घटना हुई थी जिससे वह बेहद बौखला उठा था : किसानों को बाजार में सिर्फ विदेशी नस्ल के कोयों के अच्छे दाम मिले थे। खरीदारों ने स्थानीय नस्ल के कोयों के मुकाबले विदेशी नस्ल के कोयों के हर बण्डल पर दस य्वान ज्यादा दिए थे। थुङपाओ और उसकी बहू के बीच पहले कभी कोई विवाद नहीं था, लेकिन इस समस्या को लेकर उन दोनों में भी झगड़ा खड़ा हो गया था। बहू केवल विदेशी नस्ल के कीड़े पालना चाहती थी, और थुङपाओ का सबसे छोटा लड़का आत्वो अपनी भाभी से सहमत था। हालाँकि बड़े लड़के आसि ने अपनी राय साफ-साफ नहीं बताई थी, मगर अन्दर से वह भी इन दोनों का समर्थक था। बाद की घटनाओं ने साबित कर दिया था कि उनकी राय सही थी। इसलिए इस वर्ष उसे समझौता करना ही पड़ा था और यह फैसला करना पड़ा था कि पाँच शीटों में से चार में स्थानीय नस्ल के कीड़ों के अण्डे रखे जायेंगे और एक में विदेशी नस्ल की कीड़ों के।

"हालात दिन-ब-दिन बदतर होते जा रहे हैं! साल-दो-साल में ये लोग विदेशी शहतूत के पेड़ों की माँग भी करने लगेंगे। कैसा जमाना आ गया है! मैं जिन्दगी से बिल्कुल ऊब गया हूँ।" थुङपाओ ने शहतूत के पेड़ों को एक नजर देखते हुए मन ही मन कहा।

थुङपाओ ने अपना लम्बा पाइप उठा लिया और बौखलाकर सूखी मिट्टी के एक ढेले पर दे मारा। सूरज आसमान के बीचोंबीच पहुँच चुका था और थुङपाओ की छाया का आकार सिमटकर कोयले के टुकड़े के बराबर रह गया था। रूईदार कोट के अन्दर वह पसीने से तर हो गया। उसने अपने कोट के सारे बटन खोल लिए ओर सामने के दोनों सिरों से अपने को पंखा झलने लगा। कुछ देर बाद वह उठ खड़ा हुआ और घर की तरफ चल दिया।

शहतूत के पेड़ों की कतार के पीछे दूर तक धान के खेत फैले थे। ज्यादातर खेतों में जुताई हो चुकी थी और मिट्टी को पलटने के बाद बड़े सलीके से लीकें बना दी गई थीं। लेकिन सूरज की गरमी से मिट्टी बिल्कुल सूख गई थी और उसमें दरारें पड़ गई थीं। कहीं-कहीं अगैती फसलें तैयार खड़ी थीं। एक खेत में सरसों के सुनहरे फूल मदहोश करने वाली महक छोड़ रहे थे। सामने मकानों का जो समूह

नजर जा रहा था वही थुङपाओ का गाँव था, जहाँ उसका परिवार तीन पीढ़ियों से रह रहा था। गाँव के मकानों से रसोई का धुआँ आकाश में सर्पाकार उठ रहा था।

शहतूत के बगीचे को पार करने के बाद थुङपाओ धान के खेतों की सँकरी मेड़ पर चलने लगा। उसने मुड़कर फिर एक बार शहतूत के पेड़ो की कतार को देखा, जिन पर हरी-हरी कोमल कोंपलें फूट रही थीं। खेतों के उस पार से बारह वर्ष का एक लड़का दौड़ता हुआ आया और जोर से चिल्लाकर बोला :

"बाबा! जल्दी आओ! माँ खाना खाने बुला रही है।"

वह थुङपाओ का पोता नन्हा पाओ था।

"आ रहा हूँ!" थुङपाओ ने उत्तर दिया। उसकी नजर अब भी शहतूत के पेड़ों पर टिकी थी। अपनी जिन्दगी में उसने सिर्फ दो बार छिङमिङ के त्यौहार के फौरन बाद उँगली के आकार की छोटी-छोटी कोंपलों को फूटते देखा था। शायद इस वर्ष उसके परिवार में ढेर सारे रेशम के कीड़े हो जायेंगे। पाँच शीट अण्डों से ढेर सारे कीड़ें पैदा हो जायेंगे। अगर पिछले वर्ष की तरह इस बार की बाजार में मन्दी न आई, तो शायद वे लोग कर्ज का कुछ हिस्सा जरूर उतार सकेंगे।

नन्हा पाओ अपने दादा के पास आ खड़ा हुआ। वह भी गाँठदार शाखों में फूट रही हरी-हरी कोमल कोंपलों को निहारने लगा और खुश होकर ताली बजाता हुआ गाने लगा :

देखो, आया छिङमिङ का त्यौहार अनोखा,
डाल-डाल कोमल पँखुरियाँ फूट रही हैं;
पाल रही हैं रेशम के कीड़े बालाएँ,
बजा-बजा कर ताली खुश हो झूम रही हैं।

थुङपाओ का झुर्रीदार चेहरा खिल उठा। उसने सोचा, नई कोंपलों को देखकर बच्चे का इस तरह गाना एक अच्छा शकुन है। बच्चे के घुटे हुए सिर पर उसने बड़े प्यार से हाथ फेरा। थुङपाओ के बुझे हुए दिल में, जो गरीबी व अभाव के कारण बिल्कुल संज्ञाशून्य हो चुका था, फिर एक बार नई आशा अँकुरित होने लगी।

## 2

मौसम में काफी गरमाहट आ चुकी थी। उँगली के आकार की छोटी-छोटी कोमल पत्तियाँ सूरज की गरमी में बढ़कर हथेली के आकार की हो गई थीं। थुङपाओ के गाँव के आसपास के शहतूत के पेड़ खास तौर पर हरेभरे हो गये थे। दूर से देखने पर ऐसा लगता था मानो किसी ने भूरे रंग के जँगले पर हरे ब्रीकेड की विशाल चादर फैला दी हो। जैसे-जैसे दिन बीतते गये, गाँव वालों के दिल में नई आशा

जागने लगी। रेशम के कीड़े पालने की मुहिम बिना किसी आवाहन के चारों तरफ फैल गई। जो साज-सामान एक वर्ष से बेकार पड़ा था, वह फिर बाहर निकल आया और उसकी मरम्मत की जाने लगी। गाँव के निकट बहने वाले सोते के किनारे स्त्रियों व बच्चों के समूह हँसी-मजाक करते और शोरगुल मचाते हुए अपने-अपने साज-सामान की धुलाई-सफाई में लग गये।

स्त्रियों व बच्चों में एक भी ऐसा नहीं था जिसे तन्दुरुस्त कहा जा सकता। वसन्त का मौसम शुरू होने के बाद से सभी लोग सिर्फ आधापेट भोजन कर रहे थे। उनके तन फटे-पुराने कपड़ों से ढके हुए थे और उनकी हालत भिखारियों से भी गई-गुजरी थी। फिर भी उनका जोश देखने लायक था। सभी लोग असीम धैर्य और आशा से ओतप्रोत थे। हालाँकि उन पर कर्ज का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा था, फिर भी उनके सीधे-सादे दिमाग पर केवल एक ही विचार हावी था—अगर इस बार रेशम के कीड़ों की पैदावार अच्छी हुई, तो सब कुछ ठीक हो जायेगा!... वे लोग कल्पना कर रहे थे कि ये चमकदार हरी पत्तियाँ एक महीने के अन्दर किस तरह बरफ जैसे श्वेत कोयों में बदल जायेंगी, ऐसे मूल्यवान कोयों में जिनसे चाँदी के य्वान कमाए जा सकेंगे। इसलिए भूखेपेट रहकर भी अच्छे दिनों की आस में वे बड़े प्रसन्न नजर आ रहे थे।

सोते के किनारे काम करने वाली स्त्रियों में थुङपाओ की बहू भी थी। अपने बाहर साल के बेटे नन्हे पाओ की मदद से वह बाँस की खपचियों से बनी ट्रे धो चुकी थी। सोते के निकट एक चट्टान पर बैठकर उसने अपने माथे का पसीना आँचल से पोछ डाला। उस पार अन्य स्त्रियों के साथ काम करने वाली एक बीसवर्षीय युवती उसे सम्बोधित कर जोर से बोली :

"क्या तुम इस साल भी विदेशी कीड़े पाल रही हो?"

यह थुङपाओ के नौजवान पड़ोसी लू फूछिङ की बहिन ल्यूपाओ थी। वह सोते के उस पार रहती थी।

थुङपाओ की बहू की मोटी भौंहें एकदम सिकुड़ गयीं। उसके स्वर से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह अपने दिल की भड़ास निकालने को तैयार बैठी हो।

"मुझसे क्यों पूछती हो? हमारे यहाँ तो बस बुड्ढे बाबा की ही चलती है! जो कहते हैं, वही होता है!" वह जोर से चिल्लाई। "वे विदेशी कीड़ों के सख्त विरोधी हैं। एक शीट से ज्यादा नहीं पालने देते। जहाँ 'विदेशी' शब्द आया कि आगबबूला हो जाते हैं। वैसे विदेशी चाँदी के सिक्के लेने में उन्हें कोई एतराज नहीं है! सिर्फ यही विदेशी चीज उन्हें पसन्द है!"

सोते के किनारे काम करने वाली स्त्रियाँ हँस पड़ीं। तभी पीछे खलिहान से एक हृष्टपुष्ट नौजवान आता दिखाई दिया। सोते के निकट पहुँचकर उसने लकड़ी के चार पुलनुमा कुन्दों पर पाँव रखा और उसे पार कर लिया। नौजवान को देखते ही

थुङ्पाओ की बहू ने अपना जिहाद बन्द कर दिया और ऊँची आवाज में बोली :

"आत्वो, ट्रे घर ले जाने में मेरी मदद नहीं करोगे? भीग जाती हैं तो मरे कुत्ते जैसी भारी-भरकम हो जाती हैं!"

एक भी शब्द बोल बिना आत्वो ने छः ट्रे सिर पर रख लीं। उनसे टपटप पानी की बूँदें टपक रही थीं। अच्छी तरह सन्तुलन कायम करने के बाद तैरने की मुद्रा में हाथ हिलाता हुआ वह आगे बढ़ गया। आत्वो जब अच्छे मूड में होता, तो कभी किसी का अनुरोध नहीं टालता था। गाँव की कोई स्त्री अगर उससे कोई भारी चीज उठाने अथवा सोते से कोई चीज निकालने का अनुरोध करती, तो वह अक्सर मान जाता और मदद कर देता। लेकिन आज उसने बड़े बेमन से सिर्फ छः ट्रे सिर पर उठाईं तथा दोनों हाथ हिलाता हुआ और कमर मटकाता हुआ घर की ओर चल पड़ा। देखने पर ऐसा लगता था मानो उसने एक साथ छः बड़े-बड़े टोपे सिर पर रख लिए हों। हर कदम पर वह कूल्हे मटकाता हुआ शहर की स्त्रियों की नकल उतार रहा था। उसे देखकर गाँव की स्त्रियाँ हँसते-हँसते लोटपोट हो गयीं। थुङ्पाओ के पड़ोसी ली कनशङ की पत्नी होह्म ने हँसते हुए चुटकी ली :

"आत्वो भैया, यहाँ आओ। जरा मेरी भी दो-चार ट्रे उठा लो!"

आत्वो मुस्कराकर बोला : "पहले मेरे लिए कोई अच्छा-सा सम्बोधन तो बताओ!" वह आगे बढ़ता गया और कुछ ही क्षणों में अपने मकान की ड्योढ़ी पर जा पहुँचा। छहों ट्रे उसने सिर से उतारकर छाया में रख दीं।

"'मुन्ना भैया' कैसे रहेगा," होह्म कहकहे लगाती हुई बोली। उसका रंग गोरा-चिट्टा था, लेकिन चेहरा बिल्कुल आकर्षणहीन था। हँसती थी, तो पूरा मुँह खुल जाता था और छोटी-छोटी आँखें लगभग बन्द हो जाती थीं। पहले वह शहर के किसी परिवार में नौकरानी थी। बाद में थुङ्पाओ के पड़ोसी ली कनशङ की घरवाली बन गई थी। उसका पति समय से पहले ही बूढ़ा हो गया था। वह हमेशा कुढ़ा-कुढ़ा सा रहता था और पूरे दिन किसी से एक भी शब्द नहीं बोलता था। शादी को अभी छः महीने भी नहीं हुए थे कि होह्म की स्वच्छन्द प्रेम-लीलाओं की चर्चा गाँव में घर-घर होने लगी थी।

"बेशर्म कहीं की!" सोते के उस पार से किसी स्त्री का भर्त्सनापूर्ण स्वर सुनाई पड़ा।

होह्म की छोटी-छोटी आँखें तुरन्त फैल गयीं। "यह कौन कलमुँही है?" वह गुस्से में भरकर बोली। "गालियाँ ही देनी हैं तो मुँह पर क्यों नहीं देती? सामने क्यों नहीं आती?"

"बिना कारण ही क्यों खफा हो रही हो? मैं तो मर्दों के पीछे दौड़ने वाली एक बेशर्म औरत की बात कर रही थी। अगर यह टोपी तुम्हारे सिर पर फिट होती हो, तो मेरा क्या दोष?" ल्यूपाओ ने उत्तर दिया। सोते के उस पार से उसी का भर्त्सनापूर्ण

स्वर सुनाई पड़ा था। पूरे गाँव में वह एक बेहद चंचल और शोख युवती के रूप में मशहूर थी।

सोते के दोनों किनारों से उन दोनों ने एक-दूसरे पर पानी उछालना शुरू कर दिया। जिन स्त्रियों को झगड़ा पसन्द था वे किसी एक पक्ष में शामिल हो गयीं और बच्चे किलकारियाँ मारने लगे। थुङ्पाओ की बहू अपेक्षाकृत अधिक सौम्य थी। उसने बची-खुची ट्रे उठा लीं और नन्हे पाओ को साथ लेकर घर की राह ली। आत्वो हँसता हुआ घर से सारा दृश्य देख रहा था। वह जानता था कि ल्यूपाओ और होह्वा क्यों लड़ रही हैं। उसे यह देखकर खुशी हो रही थी कि होह्वा कैंची की तरह जबान चलाने वाली ल्यूपाओ को भी जमकर गालियाँ दे रही है।

तभी थुङ्पाओ कन्धे पर लकड़ी का ट्रे-स्टैण्ड उठाए घर से बाहर निकला। स्टैण्ड के पायों को दीमक खा चुकी थी और मरम्मत की जरूरत थी। आत्वो को स्त्रियों पर हँसते देखकर थुङ्पाओ का चेहरा विकृत हो उठा। वह अच्छी तरह जानता था कि यह लड़का शिष्टाचार की सीमाओं का बिल्कुल ध्यान नहीं रखता। आत्वो और होह्वा को हमेशा एक साथ बातें करते और हँसते देखकर उसे खासतौर पर परेशानी होती थी। "यह कुतिया एक चुड़ैल से कम नहीं है। इसके चक्कर में पड़ोगे, तो हमारा सारा घर तबाह हो जायेगा," इन शब्दों में वह अपने छोटे बेटे को कई बार चेतावनी भी दे चुका था।

"आत्वो!" वह गुस्से में भरकर गरजा। "खड़े-खड़े क्या तमाशा देख रहे हो? भाई घर के अन्दर साज-सामान की मरम्मत कर रहा है। जाओ, उसकी मदद करो!" थुङ्पाओ की आँखें अँगारे उगलने लगीं। जब तक लड़का घर के भीतर नहीं चला गय तब तक थुङ्पाओ उसे घूरता रहा।

जब लड़का चला गया, तो उसने ट्रे-स्टैण्ड की मरम्मत शुरू कर दी। उसने पहले बड़ी सावधानी से जाँच की। उसके बाद धीरे-धीरे मरम्मत का काम शुरू कर दिया। थुङ्पाओ बरसों पहले बढ़ई का काम सीख चुका था। लेकिन अब वह काफी बूढ़ा हो चुका था। उँगलियों में ताकत भी नहीं रह गई थी। कुछ ही क्षण काम करने के बाद उसका दम फूल गया। उसने सिर उठाया और मकान की तरफ नजर डाली। बाँस के एक लम्बे लट्ठ पर पाँच शीटें टँगी थीं, जिन पर रेशम के कीड़ों के चिपपिपे अण्डे चिपके हुए थे।

बहू ड्योढ़ी के दूसरे छोर पर बाँस की बड़ी-सी ट्रे पर कागज चिपका रही थी। पिछले साल किफायत बरतने के लिए उन्होंने पुराने अखबार का कागज खरीदकर लगाया था। थुङ्पाओ अब भी यही समझता था कि कम अण्डे सेने का मुख्य कारण यही था—उसका ख्याल था कि ऐसे काम के लिए लिखे हुए कागज को इस्तेमाल करना एक अपशकुन होता है। लिखने का अर्थ है विद्वत्ता का परिचय देना, और विद्वत्ता का यथोचित सम्मान करना आवश्यक है। इस वर्ष पूरे परिवार ने एक जून

फाका रखकर कुछ पैसे बचाए थे और उनसे ट्रे पर चिपकाने वाला विशेष कागज खरीदा था। हल्के पीले रंग के मुलायम, समतल और मजबूत कागज की परतों को आसि की पत्नी ने ट्रे पर चिपका दिया। हर ट्रे पर कागज की तीन छोटी-छोटी तस्वीरें भी चिपका दी गयीं, जिन्हें कागज के साथ ही खरीदा गया था। एक तस्वीर पर "सुख-समृद्धि की तश्तरी" बनी थी और बाकी दो पर एक घुड़सवार योद्धा बना था, जिसके हाथ में पताका थी। स्थानीय विश्वास ने अनुसार वह "रेशम के कीड़ों का रक्षक" था।

"तुम्हारे पिता की जमानत पर जो तीस चाँदी के य्वान कर्ज लिए थे उनसे हम शहतूत के पत्तों के सिर्फ बीस गट्ठर खरीद पाए," थुङ्पाओ ने बहू से कहा। ट्रे-स्टैण्ड की मरम्मत करते-करते थकान के मारे उसका दम फूल रहा था। "परसों तक घर मे एक भी चावल का दाना बाकी नहीं रह जायेगा। तब क्या होगा?"

बहू के पिता ने जमानत पर अपने मालिक से थुङ्पाओ को कम सूद पर कर्ज दिला दिया था—सूद की दर केवल 25 प्रतिशत प्रतिमास थी! शर्त केवल यह थी कि रेशम के कीड़े पालने का मौसम खत्म होते ही असल और सूद दोनों तुरन्त चुकाने होंगे।

ट्रे पर कागज चिपकाने के बाद आसि की पत्नी ने उन्हें धूप में रख दिया। "तुमने सारी रकम पत्तियों पर क्यों खर्च कर दी?" उसने नाराज होकर कहा। "पिछले साल की ही तरह इस बार भी बहुत सी पत्तियाँ बच जायेंगी!"

"कैसी अपशकुन की बात कहती हो!" थुङ्पाओ व्यंग्यभरे स्वर में बोला। "क्या अगले अनेक वर्षों तक पिछले साल जैसी ही हालत बनी रहेगी? हमारे पेड़ों से एक दर्जन गट्ठर से ज्यादा पत्तियाँ नहीं निकल पायेंगी। पाँच शीट अण्डों से निकलने वाले कीड़ों को खिलाने के लिए भला ये काफी कैसे हो सकती हैं?"

"ठीक है, जो बात तुम कहते हो भला वह आज तक कभी गलत भी हुई है?" बहू जरा तैश में आकर बोली। "मैं तो सिर्फ एक बात जानती हूँ। चावल होगा तो पेट भर सकेंगे, नहीं होगा तो भूखे रहना पड़ेगा!" पिछले वर्ष थुङ्पाओ ने विदेशी कीड़े पालने से साफ इंकार कर दिया था, जिससे उसके परिवार के पास सिर्फ स्थानीय नस्ल के कोये रह गये थे और उन्हें बाजार में बेचना मुमकिन नहीं हो सका था। तब से बहू की राय अक्सर ससुर की राय से मेल नहीं खाती थी।

थुङ्पाओ का चेहरा गुस्से से लाल हो उठा। लेकिन बात बढ़ न जाये, यह सोचकर दोनों ने चुप्पी साध ली।

अण्डे सेने का समय निकट आता जा रहा था। उस छोटे से गाँव के दो के दो दर्जन परिवार भारी तनाव, संकल्प और संघर्ष के दौर से गुजर रहे थे। वे बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाए हुए थे, ऐसी उम्मीदें जिन्हें पूरा करने के लिए उनकी भूख-प्यास भी गायब हो चुकी थी।

थुङ्पाओ का परिवार इधर-उधर से कर्जा लेकर जैस-तैसे गुजारा चला रहा था। गाँव के दूसरे परिवारों का हाल भी उससे बेहतर न था। एक भी परिवार ऐसा न था जिसके पास एक बोरी अतिरिक्त चावल हो! हालाँकि पिछले वर्ष शरद की फसल अच्छी हुई थी, मगर जमींदारों व सूदखोरों तथा टैक्सों व शुल्कों ने किसानों के लिए कुछ भी बाकी न छोड़ा था। अब गाँव वालों की सारी आशाएँ वसन्त के रेशम के कीड़ों पर केन्द्रित थीं। सभी तरह के कर्ज चुकाने का समय भी "रेशम के कीड़े पालने के मौसम के अन्त में" आने वाला था।

मन में अनेक आशाओं-आशँकाओं का तानाबाना बुनते हुए वे लोग आमने-सामने की लड़ाई में मौत से जूझने के लिए तत्पर सिपाहियों की तरह वसन्त के कीड़े पालने की मुहिम की तैयारी करने लगे।

कूय्वी* का त्यौहार—जो हर साल हल्की फुहार के साथ आता है—ज्यादा दूर नहीं रह गया था। गाँव के सभी परिवारों के रेशम के कीड़ों के अण्डों पर हल्का हरा रंग चढ़ने लगा था। खेत-खलिहानों में जब कभी गाँव की स्त्रियाँ एक-दूसरे से मिलतीं तो व्यग्रता और हर्ष की मिलीजुली भावना के साथ बड़े उत्साह से बातें करतीं।

"ल्यूपाओ के यहाँ तो अण्डे सेने की सारी तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है!"

"होह्वा कह रही है, उसका परिवार कल अण्डे सेना शुरू कर देगा! इतनी जल्दी!"

"पुजारी ह्वाङ ने ज्योतिषी से सुना है कि इस वर्ष वसन्त में शहतूत की पत्तियाँ चार य्वान प्रति गट्ठर के हिसाब से बिकेंगी!"

थुङ्पाओ की बहू ने रेशम के कीड़ों के अण्डों के पाँचों समूहों की जाँच की। उनकी हालत अच्छी न थी। बीज के बराबर छोटे-छोटे अण्डे अब भी बिल्कुल काले थे; उनमें अभी जरा भी हरापन नहीं आया था। उसके पति आसि ने उन्हें रोशनी में ले जाकर गौर से देखा। मगर एक भी अण्डा ऐसा नहीं दिखाई दिया जो पक रहा हो। थुङ्पाओ की बहू बेहद चिन्तित हो उठी।

"तुम इन्हें सेने का जुगाड़ तो करो। हो सकता है यह नस्ल कुछ धीरे परिपक्व हो," पति ने दिलासा दिया।

वह बिल्कुल मौन रही। एक भी शब्द न बोली।

थुङ्पाओ के झुर्रीदार चेहरे पर मायूसी छा गई। वह बोला कुछ नहीं, पर समझ गया कि आसार अच्छे नहीं हैं।

अगले दिन आसि की पत्नी ने फिर एक बार अण्डों की जाँच की। वह हैरान रह गई! बहुत से अण्डों पर हरा रंग चढ़ने लगा था—एकदम चमकदार हरा रंग। उसने फौरन अपने पति को, ससुर को, देवर को... यहाँ तक कि अपने नन्हे बेटे को भी बता दिया। अब अण्डे सेने का काम शुरू किया जा सकता था! उसने वे

*सौर पंचाँग के एक कालखण्ड का सूचक विशेष त्यौहार, जो प्रतिवर्ष 19 या 20 अप्रैल को आता है।

पाँचों शीटें उठा लीं जिन पर अण्डे चिपके हुए थे और उन्हें अपने निर्वसन वक्ष से सटा लिया। जरा भी हिलेडुले बिना वह बिल्कुल स्थिर होकर बैठी रही। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी नवजात शिशु को अंक से लगाए हो। उस रात वह अण्डों के उन पाँचों समूहों को साथ लेकर सोई। पति को आत्वो के बिस्तर पर सोना पड़ा। रेशम के कीड़ों के छोटे-छोटे अण्डों के स्पर्श से उसकी त्वचा में बड़ी खुजलाहट पैदा हो रही थी। फिर भी वह प्रसन्न थी, किन्तु कुछ घबराई हुई भी थी। उसे ठीक वैसा ही लग रहा था जैसा तब लगा था जब वह पहली बार गर्भवती हुई थी और गर्भस्थ शिशु उसके पेट में इधर-उधर हिलने-डुलने लगा था।

थुङ्पाओ का पूरा परिवार बड़ी बेचैनी और उत्सुकता से अण्डों के परिपक्व होने की प्रतीक्षा कर रहा था। केवल आत्वो अपवाद था। उसका विचार था, इस साल ढेर सारे अण्डे सेने में कामयाबी जरूर मिलेगी, लेकिन जो लोग यह समझते हैं कि इस जिन्दगी में धनवान बन जायेंगे वे निरे मूर्ख हैं। यह सुनते ही थुङ्पाओ ने दुखी होकर कहा कि आत्वो की चंचल जबान उनके परिवार को तबाह कर देगी। फिर भी वह लड़का अपनी बात पर अड़ा रहा।

इल्लियों की यथोचित बढ़वार के लिए एक साथ-सुथरा छप्पर तैयार किया गया। सेने की प्रक्रिया के दूसरे दिन थुङ्पाओ ने लहसुन की एक गाँठ मिट्टी खोदकर छप्पर की दीवार के पास लगा दी। अगर कुछ ही दिनों में लहसुन के कल्ले फूट गये, तो इसका मतलब यह होगा कि अण्डे सेने के काम में सफलता मिलेगी। यह प्रयोग वह हर साल करता था, लेकिन इस साल पहले से कहीं ज्यादा आस्था के साथ कर रहा था। उसके हाथ काँप रहे थे। पिछले वर्ष लहसुन की भविष्यवाणी बिल्कुल सच साबित हुई थी। इस बात की कल्पनामात्र से उसके रोंगटे खड़े हो गये।

गाँव का हर परिवार "अण्डे सेने" के काम में जुटा हुआ था। खेत-खलिहानों में या सोते के किनारे एक भी स्त्री नजर नहीं आ रही थी, मानो गैरसरकारी "मार्शल-ला" लागू हो रहा हो। जिन किसानों के बीच काफी मेलजोल था उन्होंने भी एक-दूसरे के यहाँ आना-जाना छोड़ दिया था। किसी दूसरे के घर जाने से रेशमकीट देवता के नाराज होने की आशँका थी और यह कोई छोटा-मोटा अपराध न था! लोग जब भी आपस में मिलते, धीमी आवाज में दुआ-सलाम करने के बाद फौरन अपनी-अपनी राह चले जाते। यह वास्तव में एक "पवित्र" मौसम था!

थुङ्पाओ का सारा परिवार बहुत बेचैन था। अण्डों के पाँच समूहों में अब तक सिर्फ कुछ ही अण्डों से इल्लियाँ निकलीं थीं। कूव्वी का त्यौहार आने में सिर्फ एक दिन बाकी रह गया था। आसि की पत्नी का अनुमान था कि तब तक अधिकाँश अण्डों से इल्लियाँ नहीं निकल पायेंगी। कूव्वी कोई बुरी बात न थी। लेकिन ठीक उसी दिन इल्लियों का बाहर निकलना बहुत बड़ा अपशकुन समझा जाता था। सेने

की प्रक्रिया को जारी रखना अब जरूरी नहीं रह गया था और अण्डों को बड़ी सावधानी से छप्पर के भीतर रख दिया गया था। थुङ्पाओ ने दीवार के पास लगाई गई लहसुन की गाँठ पर चुपके से नजर डाली। उसका दिल बैठ गया। अब भी पहले की ही तरह दो कल्ले दिखाई दे रहे थे। पास जाकर गौर से देखने की हिम्मत न हुई। मन ही मन भगवान से प्रार्थना करता रहा कि परसों दोपहर तक लहसुन की गाँठ में बहुत से नए कल्ले फुट जायें।

अन्त में इल्लियों के पैदा होने का दिन आ गया। आसि की पत्नी ने चावल का बर्तन आँच पर रख दिया और भाप निकलने की बेचैनी से प्रतीक्षा करती रही। थुङ्पाओ ने धूप और मोमबत्तियाँ जला दीं, जिन्हें वह इस मौके के लिए खरीद लाया था। इनको बड़ी श्रद्धा के साथ उसके "पाकशाला के देवता" की मूर्ति के सामने रख दिया। दोनों बेटे खेतों से कुछ जंगली फूल तोड़ लाए। नन्हे पाओ न बत्ती-बनाने के काम आने वाली घास और जंगली फूलों के बिल्कुल बारीक टुकड़े कर दिए। हर चीज तैयार थी। सूरज आकाश के मध्य में जा पहुँचा था। चावल के बर्तन में भाप ऊपर की तरफ जोर मार रही थी। आसि की पत्नी यकायक उठ खड़ी हुई और एक "कागज का पवित्र फूल" और दो कलहंस के पंख जूड़े में खोंसकर छप्पर के अन्दर जा पहुँची। थुङ्पाओ ने तराजू की डण्डी को और आसि ने घास व जंगली फूलों के बारीक टुकड़ों को उठा लिया। बहू ने उन शीटों को बाहर निकाल लिया जिन पर इल्लियाँ चिपकी हुई थीं और उन पर घास व जंगली फूलों के बारीक टुकड़े बुरक दिए। इसके बाद उसने थुङ्पाओ से तराजू की डण्डी ले ली और कपड़े के टुकड़ों को उस पर टाँग दिया। जूड़े से कलहंस के दोनों पंख निकालकर वह उन्हें धीरे-धीरे कपड़े के टुकड़ों पर फेरने लगी। वह इल्लियों को और घास व जंगली फूलों के बारीक टुकड़ों को पंख से झाड़कर बड़ी ट्रे में डालने लगी। पहला समूह, दूसरा समूह.... अन्तिम समूह विदेशी नस्ल की इल्लियों का था। उन इल्लियों का अलग ट्रे में डाल दिया गया। अन्त में उसने "कागज का पवित्र फूल" अपने जूड़े से निकाल लिया और कलहंस के पंख के साथ ट्रे के एक किनारे पर खोंस दिया।

यह एक पवित्र रस्म थी, जो सदियों के चली आ रही थी। लगता था जैसे युद्धभूमि में जाने के लिए तैयार योद्धा शपथ ले रहे हों! थुङ्पाओ और उसके परिवार की आगामी एक महीने में भीषण संग्राम करना होगा, दिन-रात कठोर परिश्रम करना होगा तथा खराब मौसम, बुरी किस्मत और तरह-तरह की विघ्न-बाधाओं से डट कर लोहा लेना होगा!

ट्रे में रेंगतीं इल्लियाँ बहुत तन्दुरुस्त थीं। उनका रंग काफी काला था। थुङ्पाओ और उसकी बहू ने चैन की साँस ली। लेकिन जब थुङ्पाओ पाओ ने चुपचाप फिर एक लहसुन की गाँठ पर नजर डाली तो उसका चेहरा उड़ गया और रंग पीला गया। उसमें अब तक सिर्फ चार कल्ले फूटे थे। ओह! यह साल भी क्या पिछले

साल की ही तरह जायेगा?

## 3

लेकिन यह "भविष्यवक्ता" लहसुन उतना सही साबित नहीं हुआ। थुङ्पाओ के परिवार के रेशम के कीड़े अच्छी तरह बढ़ते-पनपते रहे। हालाँकि इल्लियों की पहली नींद और दूसरी नींद के दौरान लगातार बारिश होती रही और छिङमिङ के त्यौहार के मुकाबले मौसम कुछ ठण्डा रहा, फिर भी ये "नन्हे लाड़ले" बेहद तन्दुरुस्त बने रहे।

गाँव के दूसरे परिवारों मे भी रेशम के कीड़ों की बढ़वार अच्छी हो रही थी। पूरे गाँव में सक्रियता व प्रसन्नता की लहर दौड़ गई थी। यहाँ तक कि गाँव का छोटा-सा सोता भी खुशी से किलकारियाँ मारने लगा था। सिर्फ होह्वा का परिवार ही एक अपवाद था। वे लोग केवल एक शीट इल्लियाँ पाल रहे थे। तीसरी नींद के बाद भी उनके कीड़ों का वजन सिर्फ 20 चिन* से कम रह गया था। लम्बी नींद से ठीक पहले लोगों ने देखा कि होह्वा का पति सोते की तरफ जा रहा है और अपने परिवार की तीन ट्रे इल्लियाँ पानी में फेंक रहा है। उस जिद्दी बूढ़े-खूसट की किस्मत का सितारा हमेशा डूबा रहता था।

इस दर्दनाक घटना के बाद गाँव की स्त्रियाँ होह्वा के परिवार से "दूर" रहने लगीं। उसके दरवाजे से दूर रहने और उससे कन्नी काटने के लिए वे अक्सर लम्बे रास्ते जाना पसन्द करती थीं। अगर वे कहीं दूर से भी उसे या उसके गुमसुम पति को देख लेतीं, तो फौरन मुँह फेर लेतीं और दूसरी तरफ चली जातीं। उन्हें डर था कि कहीं होह्वा या उसके पति को देखने मात्र से अथवा उनके साथ बातचीत करने मात्र के उन पर इस अभागे दम्पति के दुर्भाग्य का साया न पड़ जाये!

थुङ्पाओ ने आत्वो को सख़्त हिदायत दे दी कि वह होह्वा से हरगिज न बोले। "अगर मैंने तुम्हें उस बदजात औरत के साथ फिर कभी देखा, तो तुमसे बिल्कुल नाता तोड़ लूँगा!" उसने ड्योढ़ी में खड़े होकर ज़ोर से धमकाया, जिससे उसकी आवाज़ होह्वा भी सुन ले।

नन्हे पाओ को भी सचेत कर दिया गया कि वह होह्वा के दरवाजे के पास न खेले और उसके परिवार के किसी भी सदस्य से न बोले।

थुङ्पाओ अपने छोटे बेटे आत्वो को रोज दिन में कई बार डाँटता-फटकारता था, लेकिन वह नालायक लड़का पिता की बात बिल्कुल नहीं सुनता था। यही नहीं, वह मन ही मन अपने पिता की खिल्ली भी उड़ाता था। परिवार में सिर्फ आत्वो ही ऐसा था जो जादू-टोने और अन्धविश्वासों को बिल्कुल फिजूल की बात समझता था। इस बीच वह होह्वा से बात नहीं कर पाया था। दरअसल उसे इसकी फुरसत

* 1 चिन=0.5 किलोग्राम।

ही नहीं मिल पायी थी।

लम्बी नींद पूरी होने के बाद थुङपाओ के रेशम के कीड़ों का वजन 300 चिन हो गया। परिवार के सभी लोग ने, जिनमें बारह वर्ष का नन्हा पाओ भी शामिल था, पलभर के लिए भी आँख झपकाए बिना दो दिन दो रात लगातार काम किया। इस बार कीड़े आसामान्य रूप से स्वस्थ थे। अपनी साठ वर्ष की उम्र में थुङपाओ ने इससे पहले ऐसे कीड़े सिर्फ दो बार देखे थे। एक बार तब जब उसकी शादी हुई थी और दूसरी बार तब जब उसका बड़ा बेटा आसि पैदा हुआ था।

लम्बी नींद पूरी होने के बाद पहले ही दिन वे 'नन्हें लाड़ले' सात गट्ठर पत्तियाँ खा चुके थे। अब वे एकदम हरे, मोटे-ताजे और तन्दरुस्त दिखायी दे रहे थे। इसके विपरीत थुङपाओ के परिवार के लोग पहले से ज़्यादा दुबले हो गये थे और दो रात लगातार न सो पाने के कारण उनकी आँखें एकदम लाल हो गई थीं। कोई नहीं जानता था कि कोये बनाने से पहले ये "नन्हें लाडले" और कितनी पत्तियाँ खायेंगे। थुङपाओ ने आसि से कुछ पत्तियाँ और खरीदने की बात कही। वह बोला :

"नौजवान छन बाबू हमें और उधार नहीं देगा। क्या तुम्हारे ससुर के मालिक से और कुछ पैसा मिल सकेगा?"

"अभी दस गट्ठर पत्तियाँ और आने वाली हैं; उनसे एक दिन का काम और चल जायेगा" आसि ने उत्तर दिया। उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे और पलकें नींद के बोझ से लदी हुईं थीं।

"सिर्फ एक दिन का? तुम सपना तो नहीं देख रहे? थुङपाओ ने नाराज होकर कहा। कल का दिन छोड़कर उन्हें तीन दिन की खुराक और चाहिए। उनके लिए हमें पत्तियों के तीस गट्ठर और लाने होंगे। पूरे तीस गट्ठर! समझे?"

खलिहान से जोर-जोर से बोलने की आवाज़ें आने लगीं। शहतूत की पत्तियों के पाँच गट्ठर पँहुचाने वालों के साथ आत्वो भी आ पहुँचा था। सभी लोग बाहर निकलकर टहनियों से पत्तियाँ अलग करने के काम में जुट गये। आसि की पत्नी जल्दी-जल्दी छप्पर से बाहर निकल आई। सोते से उस पार ल्यूपाओ के परिवार ने सिर्फ थोड़े से रेशम के कीड़े पाले थे। इसलिए जब भी फुरसत होती, वह भी मदद करने आ पहुँचती। आसमान में अनगिनत तारे छिटक रहे थे। हल्की-सी हवा भी चलने लगी थी। गाँव के इस छोर से उस छोर तक सभी जगह किलकारियों और कहकहों से रात्रि की नीरवता भंग हो रही थी।

"पत्तियों के दाम लगातार चढ़ते जा रहे हैं।" किसी ने रूखी-सी आवाज़ में कहा। "आज तीसरे पहर कस्बे में चार य्वान का एक गट्ठर बिक रहा था! "

थुङपाओ परेशान हो उठा। चार य्वान फी गट्ठर के हिसाब से तीस गट्ठरों के लिए एक सौ बीस यवान चाहिए। आखिर इतनी बड़ी रकम वह कहाँ से लाएगा? लेकिन हिसाब लगाया जाये तो उसे लगा इस बार पाँच सौ चिन से कम कोये नहीं

होंगे। अगर सौ चिन कोये पचास यवान में भी बिके, तो पाँच सौ चिन के दो सौ पचास य्वान अवश्य मिल जायेंगे। यह सोचकर उसे कुछ तसल्ली हुई। तभी पत्तियाँ अलग करने वालों में से किसी ने धीमी आवाज़ में कहा :

"सुना है पूरब की तरफ के गाँवों में इस बार रेशम के कीड़ों की पैदावार अच्छी नहीं हुई है। इसलिए पत्तियों के भाव ज्यादा चढ़ने का सवालइ ही नहीं उठता।"

थुङपाओ ने आवाज पहचान ली। वह ल्यूपाओ थी। उसे कुछ तसल्ली हुई।

ल्यूपाओ और आत्वो एक बड़े-से टोकरे के पास खड़ पत्तियाँ अलग कर रहे थे। तारों की धीमी रोशनी में दोंनो एक दूसरे से सटकर खड़े थे। शहतूत की टहनियों के ढेर ने दोनों को आँशिक रूप से छिपा लिया था। ल्यूपाओ की जाँघ पर अचानक किसी ने चुटनी काटी। वह अच्छी तरह जानती थी कि वह कौन है। फिर भी उसने अपनी हँसी दबा ली। लेकिन दूसरे ही क्षण जब किसी के हाथ ने उसके उरोजों को स्पर्श किया, तो वह उछल पड़ी और उसके मुँह से एक हल्की सी चीख निकल आई।

"उइ माँ!"

"क्या हुआ?" आसि की पत्नी ने पूछा। वह टोकरे के दूसरी तरफ खड़ी पत्तियाँ अलग कर रही थी।

ल्यूपाओ का चेहरा लाल हो गया। उसने एक नजर आत्वो की तरफ देखा और फिर सिर झुकाकर पत्तियाँ अलग करने लगीं। "कुछ नही," उसने उत्तर दिया। "मुझे शायद किसी कीड़े ने काट खाया है!"

आत्वो ने दाँतों से होंठ दबाकर अपनी हँसी रोक ली। गत दो सप्ताह से उसे सिर्फ आधापेट खाना मिला था और वह बहुत कम सो पाया था। शरीर से दुबला हो जाने पर भी उसकी जिन्दादिली में कोई कमी न आई थी। वह अपने पिता से अलग किस्म का आदमी था। वह न तो कभी निराश होता था, और न यह मानता था कि एक बार अच्छी पैदावार होने पर, चाहे वह रेशम के कीड़ों की हो या धान की, उनके परिवार को कर्ज के बोझ से छुटकारा मिल जायेगा और खोई जमीन फिर वापस मिल जायेगी। वह जानता था कि केवल कठोर परिश्रम के भरोसे ही, उसके लिए चाहे वे लोग अपना खून-पाससीना एक क्यों न कर दें, उन्हें अपनी मुसीबतों से "छुटकारा" नहीं मिल सकता। फिर भी वह बड़ी मेहनत और लगन से काम करता था। उसे मेहनत करने में बेहद आनन्द आता था, उतना ही जितना ल्यूपाओ के साथ छेड़छाड़ करने में।

अगले दिन थुङपाओ शहतूत की पत्तियों के लिए पैसा उधार लेने कस्बे में जा पहुँचा। घर में प्रस्थान करने से पहले उसने बहू से मशविरा कर लिया था। उन्होंने फैसला किया था कि अपने परिवार के शहतूत के बगीचे को गिरवी रखकर पैसा उधार ले लिया जायें बगीचे में प्रति वर्ष पन्द्रह गट्ठर पत्तियाँ होती थीं और यह थुङपाओ

के परिवार की सम्पत्ति का अन्तिम अंश था।

जब थुङ्पाओ तीस गट्ठर पत्तियों काआआर्डर देकर घर लौटा और दस गट्ठरों की पहली खेप उसके यहाँ पहुँच गई, तब तक "नन्हे लाड़लों" को भूख से कुलबुलाते कोई आधा घण्टा बीत चुका था। अपने छोटे-छोटे नोकदार मुँह हिलाते हुए वे भोजन की तलाश में इधर-उधर रेंग रहे थे। उन्हें देखकर बहू को तरस आ रहा था। जब पत्तियाँ ट्रे में फैला दी गयीं, तो छप्पर के अन्दर सर्र-सर्र और कुरमुर-कुरमुर की आवाज इतनी जोर से आने लगी कि एक-दूसरे की बात सुनना मुश्किल हो गया। कुछ ही देर में सारी पत्तियाँ खत्म हो गयीं और सभी ट्रे फिर खाली हो गयीं। पत्तियों का एक ढेर और डाल दिया गया। कीड़ों को लगातार पत्तियाँ खिलाते जाने के काम में थुङ्पाओ के परिवार के लोग इतने व्यस्त थे कि उन्हें साँस लेने की भी फुरसत न थी। लेकिन यह संकटकाल का अन्तिम दौर था। अब से दो दिन बाद ये "नन्हे लाड़ले" कोये बनाने के काम में जुट जायेंगे। इस अन्तिम संघर्ष में सब लोग अपनी पूरी शक्ति लगा देना चाहते थे।

आत्वो तीन दिन से बिल्कुल नहीं सोया था, फिर भी उसके चेहरे पर थकान के आसार नजर नहीं आ रहे थे। अगली सुबह तक उसने अकेले ही छप्पर की देखभाल करने का बीड़ा उठा लिया और बाकी लोगों को आराम करने भेज दिया। आसमान में चाँदनी छिटक रही थी और मौसम में कुछ ठण्ड महसूस होने लगी थी। छप्पर के एक कोने में आत्वो ने आग सुलगा ली और उसके पास बैठ गया। रात के लगभग ग्यारह बजे उसने रेशम के कीड़ों की सभी ट्रे एक बार फिर पत्तियों से भर दीं। पत्तियों के बीच से फिर एक बार सर्र-सर्र और कुरमुर-कुरमुर की आवाज जोर पकड़ने लगी। उसकी आँख लग गई। कुछ देर बाद अचानक चर्र की आवाज हुई और उसकी नींद खुल गयी। एक क्षण के लिए उसने अँधेरे में घूरकर देखा और फिर आँखें बन्द कर लीं। उसके कानों में अब भी पत्तियों के बीच से आने वाली सर्र-सर्र की आवाज गूँज रही थी।

यकायक उसका सिर घुटनों से जा टकराया और उसकी नींद खुल गई। उसने देखा, दरवाजे का पर्दा आवाज करता हुआ खुला और एक परछाईं फौरन बाहर निकल गई। आत्वो एकदम उठ खड़ा हुआ और बाहर की तरफ लपका। चाँद की रोशनी में उसने देखा कोई खलिहान पार करता हुआ तेजी से सोते की तरफ बढ़ रहा है। पलक मारते ही आत्वो ने उसे धर दबोचा। आत्वो को पक्का यकीन था कि उसने चोर को पकड़ लिया है।

"आत्वो, तुम चाहे मुझे जान से मार डालो, लेकिन दूसरों के हवाले हरगिज न करना!"

आवाज सुनते ही आत्वो स्तब्ध रह गया। चन्द्रमा के उज्ज्वल प्रकाश में उसने उस बदसूरत गोरे चेहरे को और उन गोल-गोल, छोटी-छोटी आँखों को एकदम पहचान

लिया। उन कातर आँखों में भयानकता का कोई चिन्ह न था। आत्वो ने धमकाकर कहा :

"यहाँ क्या करने आई थी तू?"

"तुम्हारे कुछ 'नन्हे लाड़लों' को लेने।"

"उन्हें कहाँ रख आई है?"

"सोते में बहा आई हूँ!"

आत्वो का चेहरा काला स्याह पड़ गया। वह जानता था कि इस तरह वह बाकी कीड़ों को बददुआ दे रही है। "तू सचमुच एक जहर की पुड़िया है! आखिर हमने तेरा क्या बिगाड़ा है?"

"क्या कहते हो? कुछ नहीं बिगाड़ा? हाँ, बिगाड़ा है! जरूर बिगाड़ा है! हमारे परिवार में रेशम के कीड़ों की पैदावार अच्छी नहीं हुई। फिर भी हमने किसी को हानि नहीं पहुँचाई। तुम लोगों के कीड़ें तो अच्छी हालत में हैं। फिर भी तुमने हमें कोढ़ियों की तरह समाज से बिल्कुल अलग-थलग कर दिया है! दूर से देखते ही मुँह फेर लेते हो! तुम लोग हमारे साथ ऐसा बरताव करते हो जैसे हम इन्सान ही न हों!"

वह उठ खड़ी हुई। उसकी आँख के झरोखों से हृदय की भीषण व्यथा झाँक रही थी। आत्वो आँखों में आँखें डालकर उसे एकटक देखता रहा। "मैं तुझ पर हाथ नहीं उठाऊँगा," उसने कहा। "जा, दफा हो जा!"

होह्म की ओर देखे बिना ही आत्वो छप्पर के अन्दर लौट गया। अब उसकी नींद बिल्कुल गायब हो चुकी थी। होह्म सिर्फ कुछ ही कीड़े चुरा ले गई थी। बाकी "नन्हे लाड़ले" सही-सलामत थे। होह्म के प्रति घृणा कर रुख अपनाया जाये या सहानुभूति का, इसका फैसला आत्वो नहीं कर पाया। उसका अन्तिम वाक्य अब भी उसके मस्तिष्क में गूँज रहा था। उसे लगा, मानव सम्बन्धों में अनन्त काल से कोई न कोई कमी अवश्य मौजूद रही है; लेकिन यह कमी क्या है और क्यों मौजूद रही है इसका पता लगाना उसके बूते के बाहर था। कुछ देर में यह समस्या भी उसके दिमाग से निकल गई। रेशम के कीड़े लगातार पत्तियाँ खाते जा रहे थे, फिर भी किसी जादुई चमत्कार की तरह उनकी भूख ज्यों-की-त्यों बनी हुई थी!

उस रात कोई और घटना नहीं हुई। पौ फटते ही थुङ्पाओ और उसकी बहू पाली बदलने आ पहुँचे। उन्होंने "नन्हे लाड़लों" की ट्रे उठाकर उन्हें रोशनी में देखा। रेशम के कीड़ों का रंग सफेद होता जा रहा था तथा उनका आकार धीरे-धीरे छोटा और मोटा होता जा रहा था। उन्हें अच्छी तरह बढ़ता देख दोनों बहुत खुश हुए।

लेकिन सूर्योदय के समय जब आसि की पत्नी सोते पर पानी लेने गई, तो उसे ल्यूपाओ मिल गई। ल्यूपाओ का चेहरा एकदम गम्भीर था।

"आधी रात से कुछ पहले मैंने उस चुड़ैल को तुम्हारे घर से निकलते देखा,"

उसने धीरे से कहा। "आत्वो उसके साथ था। दोनों खड़े-खड़े काफी देर बातें करते रहे। तुम्हें अपने परिवार के लोगों की तरफ जरा ध्यान देना चाहिए।"

आसि की पत्नी का रंग उड़ गया। वह एक भी शब्द न बोली और पानी की बाल्टी उठा घर लौट गई। इस घटना की चर्चा पहले उसने पति से की, फिर ससुर से। गजब हो गया है! यह नीच औरत अब लोगों के रेशम के कीड़े चुराने उनके छप्परों में घुसने लगी है! थुङपाओ गुस्से से आगबबूला हो उठा। उसने फौरन आत्वो को बुलाकर पूछा। लेकिन लड़का साफ मुकर गया। उसने कहा, ल्यूपाओ शायद सपना देख रही थी। थुङपाओ पूछताछ करने ल्यूपाओ के पास जा पहुँचा। उसने सौगन्ध खाकर कहा, यह बात बिल्कुल सच है और वह अपनी आँखों से देख चुकी है। थुङपाओ दुविधा में पड़ गया; वह नहीं समझ पाया कि दोनों में से कौन ठीक है और किस पर विश्वास किया जायें घर लौटकर "नन्हे लाड़लों" पर नजर डाली तो वे पहले की ही तरह मोटे-ताजे दिखाई दिए। एक भी कीड़ा दुबला-पतला न था।

इसके बाद थुङपाओ और उसके परिवार की खुशियों का ज्वार कुछ मन्दा पड़ गया। उन्हें मालूम था कि ल्यूपाओ की बात का कोई न कोई आधार जरूर है। वे सिर्फ यह सोच रहे थे कि आत्वो ने उस छिनाल के साथ छप्पर के अन्दर नहीं बल्कि बाहर ड्योढ़ी में खिलवाड़ किया होगा!

जब थुङपाओ को याद आया कि लहसुन की गाँठ में अभी सिर्फ तीन-चार कल्ले ही फूटे हैं, तो वह बड़ा मायूस हो गया। उसे अपना भविष्य अन्धकारमय प्रतीत होने लगा। अतीत काल में क्या ऐसे मौके नहीं आए थे जब रेशम के कीड़े ढेर सारी पत्तियाँ खाने के बाद तो खूब मोटे-ताजे हो गये थे, लेकिन कोये बनाने से पहले ही सूख गये थे और मर गये थे? हाँ, ऐसा पहले कई बार हो चुका था। लेकिन थुङपाओ ऐसी किसी भी सम्भावना की कल्पना नहीं करना चाहता था। इस तरह का विचार अगर दिमाग के किसी भी कोने में आया, तो वह दुर्भाग्य का कारण बन सकता था।

## 4

"नन्हे लाड़लों" ने कोये बनाने शुरू कर दिए। लेकिन थुङपाओ के परिवार की चिन्ता ज्यों-की-त्यों बनी रही। उसका सारा धन खर्च हो चुका था और सारी शक्ति लग चुकी थी। उसके पास अभी कोई चीज ऐसी न थी जिसे उपलब्धि समझा जा सके। इस बात की भी गारण्टी नहीं थी कि इस बार उसके परिवार को फायदा ही होगा। फिर भी वे लोग भरपूर रफ्तार से काम कर रहे थे। जिस रैक में रेशम के कीड़े कोये बनाने की तैयार कर रहे थे, उसके नीचे आग सुलगाकर उसे गरम रखना

जरूरी था। थुङपाओ और उसका बड़ा बेटा आसि कमर झुकाकर धीरे से कभी इस तरफ बैठ जाते तो कभी उस तरफ। कोये बनाने वाले कीड़ों की धीमी सरसराहट सुनकर उसके चेहरे खिल उठते और जब यह आवाज एक क्षण के लिए भी रुक जाती, तो उनके दिल की धड़कन बन्द हो जाती। अत्यन्त चिन्तित होने पर भी उन्हे पास जाकर कीड़ों को देखने का साहस नहीं हो रहा था। जब कभी वे रैक के नीचे से झाँककर देखते और रेशम के कीड़े एक तरल पदार्थ की धार उनके मुँह पर छोड़ देते, तो क्षणिक असुविधा होने पर भी उनक चेहरे खुशी से चमक उठते। धार जितनी तेज होती, उन्हें उतना ही अच्छा लगता।*

आत्वो अब तक कई बार झाँक-झाँककर देख चुका था। नन्हा पाओ अपने चाचा से बार-बार पूछता कि कीड़ो की हालत कैसी है। मगर आत्वो मुँह बिचका देता और कोई उत्तर न देता।

जब "कताई" के तीन दिन पूरे हो गये तो आग बुझा दी गई आसि की पत्नी से अब न रहा गया। उसने नजर डालकर देख ही लिया। उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। अन्दर सभी कुछ बरफ की तरह सफेद हो गया था। रेशम के कीड़ों की कताई में मदद करने के लिए जो बुरुश अन्दर डाल दिया गया था वह पूरी तरह कोयों से ढक गया था। आसि की पत्नी ने अपनी जिन्दगी में कोयों की इतनी भरपूर "फसल" पहले कभी नहीं देखी थी।

सारा परिवार खुशी से झूम उठा। अब वे लोग एक ठोस बुनियाद पर खड़े थे। "नन्हे लाड़लों" ने साबित कर दिया था कि वे अन्तःकरण-शून्य नहीं हैं और उन्होंने चार य्वांन प्रति गट्ठर वाली कीमती शहतूत की पत्तियाँ व्यर्थ ही नहीं खाई हैं। एक महीने तक भूखे-प्यासे रहने और रतजगा करने का फल परिवार को मिलने जा रहा था। आखिर भगवान के भी आँखें हैं!

गाँव में जगह-जगह फिर खुशियाँ मनाई जाने लगीं। इस वर्ष इस छोट-से-गाँव पर रेशम के कीड़ों की देवी की विशेष कृपा रही थी। कुल दो दर्जन परिवारों में से अधिकाँश परिवारों की कोयों की फसल अच्छी हुई थी। थुङपाओ के परिवार की फसल भी औसत से ज्यादा अच्छी हुई थी।

एक बार फिर गाँव की स्त्रियों और बच्चों के झुण्ड खलिहानों में और सोते के किनारे जमा होने लगे। सभी लोग पहले से ज्यादा दुबले मालूम हो रहे थे। उनकी आँखें धँस गई थीं और गले बैठ गये थे। गाँव का हर आदमी अत्यन्त प्रफुल्लित ओर प्रसन्न था। पिछले एक महीने के भीषण संघर्ष की चर्चा करते समय उनके कानों में चाँदी के चमकदार य्वानों की खनखनाहट गूँज उठती थी। मास्तिष्क में चित्त को प्रसन्न करने वाले तरह-तरह के विचार घूम रहे थे—साहूकार के पास गिरवी

* रेशम के कीड़े तरल पदार्थ की धार उस समय छोड़ते हैं जब वे कोये बनाना शुरू करने लगते हैं।

रखे हुए गरमियों के कपड़े छुड़ा लायेंगे, नाग-नौका उत्सव के अवसर पर खूब मोटी-ताजी मछली खायेंगे...

लोगों में उस घटना की भी चर्चा होने लगी जिसका सृजन होह्वा और आत्वो ने कुछ ही दिन पहले किया था। ल्यूपाओ जिससे भी मिलती, कह देती : "होह्वा कैसी बेशर्म है! आत्वो के दरवाजे पर जाकर मुँह काला कर आई!" पुरुष सुनते तो खिलखिलाकर हँस पड़ते। स्त्रियाँ सुनतीं तो भगवान का नाम लेकर होह्वा को कोसने लगतीं। कहने लगतीं, थुङपाओ के परिवार का भाग्य अच्छा है जो उसे किसी अनिष्ट का सामना नहीं करना पड़ा। लगता है, उस पर बुद्ध भगवान और पुरखों की दयादृष्टि है।

हर परिवार में कोयों की अच्छी फसल हुई थी। चमकदार सफेद कोयों को देखने लोग एक-दूसरे के घर जा रहे थे। थुङपाओ की बहू के पिता अपने छोटे लड़के के साथ कस्बे से आ गये थे। वे अपने साथ कुछ मिठाइयाँ व फल और एक नमकील मछली भी लाए थे। नन्हा पाओ बरफ में उछलने-कूदने वाले मेमने की तरह खुशी से नाचने लगा।

कस्बे से आया बुजुर्ग मेहमान सोते के किनारे विलो के पेड़ के नीचे बैठकर थुङपाओ से बातचीत कर रहा था। कस्बे में उसे एक ऐसा आदमी समझा जाता था "जो जिन्दगी का लुत्फ उठाना जानता है।" मन्दिर के सामने बैठकर घण्टों पेशेवर कथावाचकों के प्रवचन सुनते-सुनते उसे बहुत सी प्रसिद्ध प्राचीन कथाएँ जबानी याद हो गई थीं। बैठे-बैठे गप्पें मारने की उसमें अद्भुत क्षमता थी। जो भी विचार मन में आता, झट प्रकट कर देता था। इसलिए थुङपाओ ने उसके बात को कोई खास महत्व नहीं दिया जब उसने आगे बढ़कर धीरे से कान में कहा :

"तुम लोग अपने कोये बेचोगे या घर में खुद ही रेशम कातोगे?"

"जरूर बेचेंगे," थुङपाओ ने तपाक से उत्तर दिया।

बुजुर्ग मेहमान ने अपनी जाँघ पर जोर से हाथ मारकर एक गहरी साँस ली। वह अचानक उठ खड़ा हुआ और शहतूत के नंगे पेड़ों की कतार के पीछे खड़ी रेशम अटेरने की वर्कशाप की तरफ इशारा करता हुआ बोला :

"थुङपाओ, कोयों की फसल तो समेटी जा चुकी है, लेकिन रेशम अटेरने की वर्कशापों के दरवाजों पर अब भी ताला पड़ा हुआ है। वे लोग इस वर्ष एक भी कोया नहीं खरीद रहे। ओह, कैसा जमाना आ गया है! सारी दुनिया में उथल-पुथल मची हुई है! रेशम अटेरने की वर्कशापों के खुलने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे! मेरी बात कान खोलकर सुन लो!"

थुङपाओ को उसके कथन पर हँसी आ गई। वह उसकी बात मानने को तैयार न था। आखिर मान भी कैसे सकता था? उस इलाके में रेशम अटेरने की दर्जनों वर्कशापें थीं। सभी कैसे बन्द हो सकती थीं? उसने यह भी सुना था कि जपानियों

के साथ समझौता हो चुका है और अब लड़ाई नहीं होगी। जो चीनी सैनिक वर्कशापों में पड़ाव डाले हुए थे, वे भी काफी पहले ही उन्हें खाली कर चुके थे।

मेहमान ने बातचीत का विषय बदलते हुए कस्बे की ताजा खबरें सुनानी शुरू कर दीं और उन्हें दिलचस्प बनाने के लिए प्राचीन कहानियों के दृष्टान्त और उद्धरण देने लगा। अन्त में उसने उन तीस चाँदी के खानों का जिक्र छेड़ दिया जिन्हें थिङपाओ ने उसकी जमानत पर उधार लिया था। उसने बताया कि उसका मालिक यह रकम वसूल करने के लिए तकाजा कर रहा है।

यह सब सुनकर थुङपाओ परेशान हो उठा। जब उसका मेहमान लौट गया, तो वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ गाँव के नजदीक नहर के साथ-साथ जाने वाली सड़क पर स्थित रेशम अटेरने की दो वर्कशापों को देखने गया। उनके दरवाजे सचमुच बन्द थे। आसपास एक भी आदमी न था। पिछले वर्ष इन्हीं दिनों यहाँ खूब चहल-पहल थी और जमकर व्यापार हो रहा था। न जाने कितने चमकदार तराजुओं से माल-तोला जा रहा था।

उसे कुछ घबराहट महसूस होने लगी। लेकिन घर लौटने पर जब उसकी नजर बरफ के समान सफेद मोटे-ताजे कोयों पर पड़ी, तो उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। कितने खूबसूरत हैं ये! क्या बाजार में इनकी माँग नहीं है? यह असम्भव है! कोये बटोरने का काम उसे जल्दी-जल्दी निपटाना था। अभी वह भगवान को भी अच्छी तरह धन्यवाद नहीं दे पाया था। धीरे-धीरे रेशम अटेरने की वर्कशापों का सवाल उसके दिमाग से बिल्कुल निकल गया।

लेकिन गाँव का माहौल दिन-ब-दिन बदलता जा रहा था। जो लोग चन्द रोज पहले खुशियाँ मना रहे थे, वे अब परेशान नजर आने लगे। कस्बे से खबर आई कि आसपास के किसी इलाके में रेशम अटेरने की एक भी वार्कशाप अभी नहीं खुली। सड़क पर स्थित वर्कशापों का भी यही हाल था। पिछले वर्ष इस मौसम में रेशम के कोये खरीदने वालों का गाँव में ताँता लग गया था। लेकिन इस वर्ष एक भी खरीदार नजर नहीं आ रहा था। उनके बदले महाजन और सरकारी टैक्स वसूल करने वाले आ पहुँचे थे। अगर कोई उनसे कोयों के रूप में कर्ज या टैक्स के भुगतान की बात करता, तो वे एकदम भड़क उठते।

चारों ओर दावे करने, कोसने और मायूसी के साथ आहें भरने की आवाजें सुनाई दे रही थीं। गाँव वालों ने सपने में भी न सोचा था कि कोयों की इतनी शानदार फसल होने पर भी उनकी हालत आम दिनों से ज्यादा बदतर हो जायेगी। उन्हें लगा, जैसे मेघरहित निर्मल आकाश से सहसा बिजली गिर गई हो! थुङपाओ जैसे लोगों को, जिनकी फसल खास तौर पर अच्छी हुई थी, सबसे ज्यादा सदमा पहुँचा।

"इस दुनिया का न जाने क्या होगा?" थुङपाओ ने छाती पीटकर और पाँव पटककर घोर निराशा के स्वर में कहा।

गाँव वालों के सामने मौजूद इस संकट से छुटकारा पाने का कोई न कोई रास्ता खोज निकालना जरूरी थी। ज्यादा दिन रखने पर कोयों के खराब होने का डर था। इसलिए उन्हें बेच देने या स्वयं रेशम अटेरने के सिवाय कोई चारा नहीं रह गया था। कई परिवारों ने अपनी चर्खियाँ निकाल लीं, जिन्हें उन्होंने बरसों से इस्तेमाल नहीं किया था। उन्होंने सोचा, पहले कोयों से रेशम अटेरा जाये, बाकी फिर देखा जायेगा। थुङपाओ ने भी ऐसा ही करना चाहा।

"हम अपने कोयों को नहीं बेचेंगे; रेशम अटेरने का काम खुद ही करेंगे!" थुङपाओ ने कहा। "विदेशी दरिन्दों की कम्पनियों के आने से पहले अपने कोयों को कौन बेचता था?"

लेकिन आसि की पत्नी ने एतराज किया। बोली : "हमारे पास पाँच सौ चिन से ज्यादा कोये हैं। उनके लिए चर्खियाँ कहाँ से लायेंगे?"

उसकी बात सच थी। पाँच सौ चिन कोये कम न थे। इतना रेशम अटेरने का काम वे लोग खुद हरगिज पूरा नहीं कर सकते थे। तो क्या दूसरों से मदद ली जाये? इसका मतलब था अतिरिक्त खर्च का बोझ उठाना। आसि अपनी पत्नी से सहमत था। आत्वो ने गलत योजना बनाने का सारा दोष पिता के मत्थे मढ़ दिया।

"अगर आपने मेरी बात मान ली होती, तो हम लोग सिर्फ एक शीट विदेशी नस्ल के कीड़े पालते और देसी कीड़े बिल्कुल न पालते। तब हमारे शहतूत के पेड़ों की पन्द्रह गट्ठर पत्तियों से ही काम चल जाता और हमें कर्ज बिल्कुल न लेना पड़ता।"

थुङपाओ इतना परेशान हो गया कि उसके मुँह से एक भी शब्द न निकल पाया।

अन्त में आशा की किरण दिखाई देने लगी। पुजारी ह्वाङ ने कहीं सुना था कि ऊशी शहर के आसपास रेशम अटेरने की वर्कशापों में काम हो रहा है। ह्वाङ वास्तव में एक साधारण किसान था। मगर दूसरों के सामने हमेशा पाण्डित्य बघारता रहता था और ताओपंथी "जादू-टोने" में विश्वास रखता था। इसलिए लोग उसे "पुजारी ह्वाङ" कहकर पुकारने लगे थे। थुङपाओ की उससे खूब बनती थी। पुजारी ह्वाङ से सारी बात मालूम करने के बाद थुङपाओ ने ऊशी जाने के बारे में बड़े लड़के से सलाह-मशविरा किया।

"नाव से कुल फासला 270 ली* है। आने-जाने में शायद छः दिन लगेंगे," थुङपाओ ने परेशान होकर कहा। "यह कालेपानी जाना नहीं तो और क्या है! लेकिन हमारे सामने अब चारा ही क्या रह गया है? कोयों को तो खा नहीं सकते। ऊपर से कर्ज देने वालों के तकाजे बढ़ते जा रहे हैं।"

आसि सहमत हो गया। उन्होंने किसी से एक नाव माँगी और माल ढकने के लिए पाँच-सात चटाइयाँ खरीद लीं। तय हुआ कि आत्वो भी साथ जायेगा। अच्छे

---

* 1 ली=0.5 किलोमीटर।

मौसम का लाभ उठाकर रेशम के कोये बेचने वाले इस "अभियान दल" ने ऊशी की ओर कूच कर दिया।

पाँच दिन बाद वे लोग लौट आए। पर सारा माल नहीं बिक पाया। एक टोकरी कोये अनबिके रह गये। नाव से पूरे 270 ली यात्रा करने के बाद जब वे लोग रेशम अटेरने की वर्कशाप में पहुँचे, तो वर्कशाप वालों ने माल खरीदने के लिए बेहद कड़ी शर्तें पेश कीं—विदेशी नस्ल के कोयों की कीमत सिर्फ पैंतीस य्वान प्रति बण्डल और देसी नस्ल के कोयों की कीमत सिर्फ बीस य्वान प्रति बण्डल लगाई; पतले कोयों को किसी भी कीमत पर नहीं लिया। हालाँकि थुङपाओ के सभी कोये बढ़िया किस्म के थे, फिर भी वर्कशाप वालों ने अच्छे-अच्छे कोये चुन-चुन कर निकाल लिए और एक टोकरी कोयों को रद्दी करार दे दिया। थुङपाओ और उसके बेटों को कुल एक सौ दस य्वान मिले, जिनमें से दस य्वान यात्रा में खर्च हो गये। बाकी सौ य्वान अन्त में खरीदी गई तीस गट्ठर शहतूत की पत्तियों के लिए लिया गया कर्ज चुकाने के लिए भी काफी न थे। वापसी में थुङपाओ गुस्से से इतना बौखला गया कि बीमार पड़ गया। दोनों बेटों को उसे उठाकर घर लाना पड़ा।

आसि की पत्नी के सामने उन नब्बे चिन कोयों से रेशम अटेरने के सिवाय और कोई चारा न था जिन्हें वे लोग लौटा लाए थे। उसने ल्यूपाओ के परिवार से कुछ चर्खियाँ माँगी और छः दिन तक लगातार रेशम अटेरती रही। घर में चावल का एक भी दाना नहीं रह गया था। आसि रेशम की लच्छियों को बेचने बाजार गया, तो कोई खरीदने को तैयार न हुआ। साहूकार भी उन्हें रहन रखने में आनाकारी करने लगा। काफी मिन्नत-खुशामद के बाद ही वह रेशम की लच्छियाँ गिरवी रखने और छिङमिङ के त्यौहार से पहले रहन रखा हुआ एक बोरी चावल लौटाने को तैयार हुआ।

यह थी उस गाँव की दास्तान! वसन्त के रेशम के कीड़ों की भरपूर फसल होने के बाद भी थुङपाओ के गाँव के लोग और ज्यादा कर्ज से लद गये। थुङपाओ के परिवार ने पाँच शीट कीड़े पाले और कोयों की शानदार फसल प्राप्त की। लेकिन एक महीने भूखे-प्यासे रहकर और रतजगा करके उन्होंने जो कठोर परिश्रम किया था, वह सारा का सारा मिट्टी में मिल गया। अन्त में उन पर तीस चाँदी के य्वान का कर्जा और चढ़ गया और उन्हें साहूकार के पास रहन रखा हुआ परिवार का शहतूत का बगीचा भी गँवाना पड़ा।

1 नवम्बर 1932

# शरद की फसल

## 1

चीनी पंचाँग का पाँचवाँ महीना समाप्त होने को था। तब कहीं थुङ्पाओ के स्वास्थ्य में कुछ सुधार हुआ। बीमारी के दौरान उसने कोई दवा नहीं खाई थी। केवल मन्दिर के धूपदान की कुछ राख फाँक ली थी, जिसे उसकी बहू पुजारी से माँग लाई थी। निर्धनता की आग में तपे उसके बूढ़े शरीर में रोग-व्याधियों से अकेले ही लड़ने की अद्भुत क्षमता थी।

पर ज्यों ही उसने अपना पैर खाट से नीचे रखा, उसे कुछ अजीब-सा लगा। उसकी टाँगें बिल्कुल दुबली-पतली और अशक्त हो चुकी थीं। धरती पर पाँव रखते ही वह डगमगाने लगा, मानो किसी रूई के ढेर पर खड़ा हो। लाख कोशिश करने पर भी वह सीधा खड़ा नहीं हो पाया।

"इतने दिनों तक खाट पर पड़े-पड़े हड्डियाँ जंग खा गई हैं!" वह मन ही मन बुदबुदाया और युवकों की तरह तनकर खड़ा होने की कोशिश करने लगा। लेकिन जब मुँह-हाथ धोने वाले तसले के पानी में उसने अपना प्रतिबिम्ब देखा, तो मुँह से एक चीख-सी निकल पड़ी। क्या यह सचमुच उसी का चेहरा था? पिचके गाल, पतली नाक, धँसी हुई आँखें, उलझे बाल, जबड़े की ओर झुकी हुई बादामी रंग की मूँछें, मुट्ठी की तरह बाहर को निकली हुई कण्ठमणि—देखने में वह आधा इंसान भी नहीं रह गया था। थुङ्पाओ तसले के पानी में अपने प्रतिबिम्ब को टकटकी लगाकर देखता रहा। सहसा उसकी आँखों में आँसू उमड़ पड़े और टपटप तसले में गिरने लगे।

गत अनेक वर्षों में यह पहला अवसर था जब इस फौलादी बुजुर्ग किसान की आँखों में आँसू दिखाई दिए थे। परिवार के लिए थोड़ी-बहुत धन-दौलत जमा करने के कठोर संघर्ष में पिछले चालीस वर्षों में वह केवल दो चीजों—देवी-देवताओं और स्वास्थ्य—का उपासक रहा था। उसे पक्का विश्वास था कि देवी-देवताओं के संरक्षण के बिना बुद्धिमान से बुद्धिमान आदमी भी अपनी धन-सम्पत्ति को नहीं बढ़ा सकता। दूसरी तरफ वह यह बात भी अच्छी तरह जानता था कि अगर स्वास्थ्य ही न रहा, तो देवी-देवताओं का संरक्षण प्राप्त होने पर भी जीविका कमाना सम्भव नहीं है।

जिस एकमात्र देवता पर थुङपाओ की सच्ची आस्था थी वह था धन का देवता। महीने में दो बार—शुक्ल पक्ष की पहली तिथि को और पूर्णिमा के दिन—वह गाँव के बाहर के बाहर छोटी-सी पुलिया के पास धन के देवता के टूटे-फूटे मन्दिर में अवश्य जाता और देवमूर्ति के सामने बड़ी श्रद्धा से साष्टाँग लेट जाता। यह सिलसिला उसके जीवन में पिछले चालीस वर्षों से बराबर चला आ रहा था।

लेकिन अब गम्भीर बीमारी के कारण वह सिर्फ तीस फीसदी इंसान और सत्तर फीसदी हैवान लगने लगा था। उसे जितना आघात बीमारी से पहुँचा था, उतना रेशम के कोये मिट्टी के भाव बिकने से नहीं। अपने परिवार के उद्धार की अब उसे कोई उम्मीद नहीं रह गई थी।

"बिस्तर पकड़े अभी लगभग एक ही महीना तो हुआ है। पर देखो तो, मेरा क्या हाल हो गया है!" बड़े बेटे आसि की पत्नी को थुङपाओ ने धीमी-सी आवाज में कहा। आसि की पत्नी रसोईघर में चूल्हा जला रही थी।

उसे कोई उत्तर नहीं मिला। आसि की पत्नी के बाल बिखरे हुए थे। वह आग सुलगाने के लिए चूल्हे के इतने करीब जाकर जोर-जोर से फूँक मार रही थी कि बालों के जलने की आशँका पैदा हो गई थी। घर में चारों तरफ सफेद धुआँ भर गया था तथा वह सामने और पीछे के दरवाजों से बाहर निकलने लगा था। सरकण्डे अभी अच्छी तरह सूखे नहीं थे, इसलिए जल नहीं पा रहे थे। थुङपाओ का बारह साल का पोता नन्हा पाओ खलिहान से दौड़ता हुआ आ पहुँचा। पर धुएँ से उसका दम घुटने लगा। वह खाँसता-खाँसता कहता जा रहा था कि उसे जोर की भूख लगी है। थुङपाओ भी खाँसता-खखारता हुआ लड़खड़ाते पाँवों से बहू की मदद करने चूल्हे के पास जा पहुँचा। ठीक उसी समय चूल्हे की आग सुलग उठी और सरकण्डे चटचट की हल्की-सी आवाज के साथ जलने लगे। शहतूत की कुछ टहनियाँ चूल्हे में डालने के बाद आसि की पत्नी ने अन्त में अपना सिर उठा लिया। उसकी आँखों मे आँसू थे—ये आँसू धुएँ के कारण आए थे या किसी दूसरे कारण, यह पता लगाना कठिन था। यह स्त्री अक्सर बहुत कम बोलती थी और दिन-रात कठोर परिश्रम करती रहती थी। पर आज उसकी आँखों में भी आँसू उमड़ आए थे।

थुङपाओ और उसकी बहू दोनों ही गीली आँखों से चुपचाप एक दूसरे को देखते जा रहे थे। चूल्हा अच्छी तरह सुलग चुका था और उसमें से आग की लाल-लाल लपटें उठ रही थीं। आग के उज्ज्वल प्रकाश में बहू का चेहरा चमक उठा। यद्यपि रोशनी के कारण उसका पीलापन, बिल्कुल छिप गया था, तथपि यह साफ नजर आ रहा था कि उसका चेहरा कितना दुबला हो गया है। नन्हा पाओ भी कँकाल-मात्र रह गया था। उसकी बढ़वार पहले ही काफी कम थी, पर अब तो वह महज एक छोटे-से मुरझाए-कुम्हलाए बन्दर जैसा लगने लगा था! कमरे की धुँधली रोशनी में जब थुङपाओ ने उसका हाथ पकड़ा था, तो उसे आभास हो गया था कि यह बालक

पहले से कहीं ज्यादा दुबला हो गया है। पर तब वह इतने स्पष्ट रूप से नहीं देख पाया था। थुङपाओ अत्यन्त खिन्न हो उठा। उसका हृदय रो पड़ा।

"तुझे क्या हो गया है, नन्हे पाओ? बिल्कुल टी.बी. का मरीज लगता है!" गड्ढे में धँसी बड़ी-बड़ी आँखों से बहू की तरफ देखते हुए थुङपाओ ने हाँफते-हाँफते कहा।

फिर भी कोई उत्तर न मिला। आसि की पत्नी ने अपने फटे-पुराने वस्त्र से आँसू पोंछ लिए।

चूल्हे पर चढ़े बर्तन से सफेद-सफेद भाप महकने लगी। नन्हे पाओ ने नजदीक जाकर भाप को सूँघा और मुँह बिचकाकर माँ से बोला :

"फिर वही कद्दू! माँ, तुम बार-बार कद्दू क्यों बनाती हो? कभी-कभार स्वाद बदलने के लिए सफेद चावल भी तो बना दिया करो।"

बहू ने लपककर शहतूत की टहनी उठा ली, मानो अपने लाड़ले बेटे पर इस्तेमाल करने जा रही हो। पर उसने टहनी को जोर से फर्श पर दे मारा और उसे टुकड़े-टुकड़े करके चूल्हे में डाल दिया। वह चुप रही, न तो आँख उठाकर किसी की तरफ देखा और न कोई उत्तर ही दिया।

"सफेद चावल तभी पकाए जा सकेंगे तेरे बापू लौट आयेंगे," थुङपाओ ने बच्चे को आश्वासन दिया। "बापू तेरे नाना के पास गये हैं--कुछ पैसों का इन्तजाम करने। मिल जायेंगे तो चावल खरीद लायेंगे। तब तेरे लिए चावल पकायेंगे।"

काँपते हुए कमजोर हाथ से उसने अपने नन्हे पोते के घुटे हुए सिर को प्यार से थपथपाया। यह सच था। उस दिन सुबह-सबेरे ही आसि कस्बे में अपने ससुर से यह अनुरोध करने गया था कि वे अपनी जमानत पर ऊ बाबू से, जो खास तौर पर "गाँव वालों को कर्ज देने" का कारोबार करता था, पाँच-दस य्वान का एक और कर्जा दिला दें।

नन्हे पाओ को अपने दादा पर यकीन न हुआ। "चावल खरीदने के लिए पैसे उधार लेने" की बात वह अपने माँ-बाप से पिछले डेढ़ महीने में न जाने कितनी बार सुन चुका था। फिर भी वे लोग रोज कद्दू और कचालू खा रहे थे। कचालू उसे इतने बुरे नहीं लगते थे। गरमागरम कचालू नमक के साथ खाने में फिर भी कुछ मजा आता था। लेकिन यह कमबख्त कद्दू पकने के बाद एकदम पिलपिला हो जाता था। शक्कर मिलाए बिना इसे रोज-रोज कैसे खाया जा सकता था? सबसे बुरी बात तो यह थी कि पिछले दो हफ्तों से दिन में दो बार यही बेस्वाद कद्दू बन रहा था! विचारमात्र से नन्हे पाओ को उबकाई आने लगी। भूख के मारे उसकी आँतें उलटने लगीं, आँखों में आँसू आ गये। वह एकटक अपने दादा की ओर देखता रहा। उसे लग रहा था कि उसके माँ-बाप और दादा का हृदय अत्यन्त कठोर है। काश, उसका चाचा आत्वो जल्दी घर लौट आता! अगर उसका हट्टाकट्टा नौजवान

चाचा आ जाता, तो शायद पिछली बार की ही तरह इस बार भी उसके लिए कुछ तिल के केक ले आता और चुपचप उसे खिला देता।

आत्वो तीन दिन से घर नहीं लौटा था। नन्हे पाओ को रह-रह कर उसकी याद सता रही थी!

देगची में कद्दू की लपसी पक चुकी थी और उसमें से सी-सी की आवाज के साथ भाप निकल रही थी। थुङ्पाओ ने ढक्कन उठाकर देखा। कद्दू आधी देगची से कम था। उसका पानी सूख चुका था। बर्तन के किनारों पर लगे कद्दू के कुछ टुकड़े एकदम लाल हो गये थे। थुङ्पाओ बौखला उठा। बहू की फिजूलखर्ची उसे कतई पसन्द न थी। रेशम के कीड़े पालने का मौसम शुरू होने से पहले भी कुछ दिनों तक उसके परिवार ने चावल की जगह कद्दू ही उबालकर खाया था लेकिन तब उन्होंने इसे काफी पानी में पकाया था और परिवार के पाँचों बड़े-छोटे सदस्यों ने कद्दू की लपसी के कई कटोरे खाकर पेट की आग बुझाई थी। बीमारी के कारण खाट पकड़े उसे अभी एक महीने से कुछ ही ज्यादा समय तो हुआ था, लेकिन परिवार के ये जवान लोग अभी से "शाहखर्ची" करने लगे थे। यह हरगिज ठीक न था। थुङ्पाओ का पिचका मुंह क्रोध से तमतमा उठा। काँपते पैरों से वह घर के एक कोने में पड़ी बड़ी-सी नाँद के पास जा पहुँचा और देगची में डालने के लिए डोई में पानी भर लाया। लेकिन उसके वापस लौटने से पहले ही बहू कद्दू की लपसी कटोरों में डालकर मेज पर रख चुकी थी।

"पानी डालने की जरूरत नहीं है," वह भर्राई हुई आवाज में बोली। "आज खाना खाने वाले सिर्फ हम तीन ही तो हैं। शाम के लिए बचाने की भी जरूरत नहीं है। नन्हे पाओ के बापू शाम तक हुछ न कुछ चावल जरूर ले आयेंगे।... आ बेटे, खाना खा ले। आज लपसी में ज्यादा पानी नहीं है। स्वाद अच्छा होगा। एक कटोरा और खा लेना।"

उसने बड़ी होशियारी के साथ देगची के किनारों पर लगे कद्दू के टुकड़ों को खुरचकर निकाल लिया। थुङ्पाओ गुस्से से आगबबूला हो उठा। अपना कटोरा उठाकर वह काँपते हुए पैरों से ड्योढी में जा पहुँचा ओर ऊँची-सी दहलीज पर बैठकर धीरे-धीरे कद्दू की लपसी खाने लगा। उसे एक अजीब-सी बेचैनी महसूस हो रही थी, जिसका कारण बताना उसके लिए सम्भव नहीं था।

सामने खलिहान तेज धूप में नहा रहा था। कुछ दूरी पर एक छोटा-सा सोता बह रहा था। वह चाँदी की पट्टी जैसी प्रतीत हो रहा था। पर उसमें पानी बहुत कम रह गया था। तट पर खड़े बिलो के पेड़ों की झुकी-झुकी शाखें धूप में कुम्हला गई थीं। सोते के दोनों तट एकदम शान्त थे; कहीं कोई कुत्ता या चोजा भी नजर नहीं आ रहा था। भरी दुपहरी में वहाँ अक्सर स्त्रियाँ व बच्चे कपड़े या बर्तन-भांडे धोते-माँजते दिखाई देते और पुरुष दोपहर का भोजन करने के बाद खलिहान के पास पेड़ों की

छाँह तले लेटकर हुक्का गुड़गुड़ाते रहते। या थुङपाओ जैसे लोग अपनी ड्योढ़ी की दहलीज पर बैठकर खाना खाते हुए अड़ोसी-पड़ोसियों से बतियाते नजर आते। लेकिन आज जबकि समूचा ग्रामीण अंचल उजली धूप में नहा रहा था और सोते का पानी कलकल बह रहा था, यह सारा स्थान बिल्कुल वीरान दिखाई दे रहा था। थुङपाओ आज सिर्फ डेढ़ महीने बाद ही ता बाहर ड्योढ़ी में आया था। फिर भी गाँव की शक्ल कितनी बदल गई थी! वह पहचानने में ही नहीं आ रहा था—ठीक वैसे ही जैसे नन्हा पाओ दुबला होने के कारण मुश्किल से पहचाना जा रहा था।

थुङपाओ ने कद्दू की लपसी काफी पहले ही ख़्म कर ली होती, लेकिन वह उसे बड़े यांत्रिक ढंग से धीरे-धीरे खा रहा था और गड्ढों में धँसी बड़ी-बड़ी आँखों से सोते को और उससे कुछ ही दूर स्थित झोंपड़ियों को एकटक देखता जा रहा था। यह सोचने की उसने जरा भी कोशिश नहीं की कि आज गाँव वाले क्यों नहीं दिखाई दे रहे। उसे तो सिर्फ इस बात पर ताज्जुब हो रहा था कि जब से वह बीमार पड़ा है तब से दुनिया कितनी बदल गई है! वह खुद भी बदल गया था, उसके परिवार के लोग—बहू और नन्हा पाओ—भी बदल गये थे और अब वह गाँव भी बदल गया था जहाँ उसका परिवार इतने लम्बे अरसे से रहता चला आ रहा था और जिसे वह इतनी अच्छी तरह जानता था। अचानक उसे लगा जैसे रोना आ जायेगा—वह एक ऐसा आदमी था जिसे रोना बहुत कम आता था। हाथ का कटोरा सहज रूप से नीचे रखकर उसने अपने दोनों हाथों से सिर थाम लिया। मन में विचारों का भीषण तूफान उठ रहा था।

थुङपाओ को "लम्बे बाल वालों" की वे सब कहानियाँ याद आने लगीं जिन्हें उसने अपने पिता और दादा से सुना था। वे कहा करते थे : "लम्बे बाल वालों" ने अनेक गाँवों का "सफाया कर दिया था", उनकी पूरी आबादी को "मौत के घाट उतार दिया था" और उनकी तमाम मूल्यवान चीजों को "लूट लिया था"। इस वर्ष के शुरू में, जब जापानी दरिन्दों ने शाङहाए पर हमला किया, तो "सम्भ्रांत" लोगों न कहा था, " 'लम्बे बाल वालों' का उत्पात फिर शुरू हो गया है!" लेकिन बाद में थुङपाओ को सुनने में आया था कि जापनियों के साथ युद्धविराम समझौता हो गया है। जिन दिनों वह बीमार था, उन दिनों "लम्बे बाल वालों" की चर्चा किसी ने नहीं की थी। फिर भी गाँव की हालत "लम्बे बाल वालों" के आक्रमण के दिनों जैसी ही हो गई थी! उसे अपने दादा की बात अब भी याद थी कि "लम्बे बाल वाले" कभी-कभी सभी लोगों को मारते नहीं थे बल्कि उन्हें मजबूरन अपने गिरोह में भरती कर लेते थे। उसके दादा कहा करते थे कि उन दिनों लोगों को अपने माल-असबाब समेत गाँव छोड़कर "लम्बे बाल वालों" के साथ जाना पड़ता था और सारा गाँव एकदम वीरान हो जाता था। क्या सभी अड़ोसी-पड़ोसी कहीं "लम्बे बाल वालों" के गिरोह में शामिल होने तो नहीं चले गये? उसने सुना था, दूसरे इलाकों

में "लम्बे बाल वालों" अनेक वर्षों से सक्रिय हैं। पर थुङपाओ के गाँव के किसान "भले लोग" कहलाते थे। यह कैसे हो सकता था कि जिस दौरान वह बीमारी के कारण बेहोश रहा उन चन्द दिनों में ही वे सब लोग "लम्बे बाल वालों" के गिरोह में शामिल हो गये हों? वह जितना ज्यादा सोचता जाता, यह बात उसे उतनी ही ज्यादा असम्भव प्रतीत होती जाती।

अचानक उस किसी के पैरों की आहट करीब आती सुनाई दी। सिर उठाकर देखा तो सामने एक चौड़े नीरस चेहरे पर दो छोटी-छोटी आँखें चमकती नजर आईं। आगन्तुक स्त्री थुङपाओ की पड़ोसिन होह्वा थी। वह सोते के उस पार रहती थी और मर्दों के पीछे दौड़ने वाली बदचलन स्त्री के रूप में गाँवभर में बदनाम थी! उन दिनों वह भी कुछ दुबली हो गई थी, पर देखने में पहले से ज्यादा अच्छी लगने लगी थी। उसकी छोटी-छोटी आँखों में पहले से ज्यादा आकर्षण पैदा हो गया था। थुङपाओ की दयनीय हालत देखकर उसकी आँखों से सहानुभूति और विस्मय की भावना उमड़ रही थी। लेकिन थुङपाओ को तुरन्त वह घटना याद आ गई जब यह स्त्री उसके परिवार के रेशम के कीड़ों को हानि पहुँचाने आई थी। इस घटना के बाद से उसका सारा परिवार होह्वा से घृणा करने लगा था। बीमारी से उठने के बाद, अपने परिवार के लोगों को छोड़कर, थुङपाओ की मुलाकात जिस व्यक्ति से सबसे पहले हुई वह यही "चुड़ैल" थी! इससे बड़ा अपशकुन और क्या हो सकता था! नफरत जाहिर करने के लिए उसने जोर से जमीन पर थूका और सिर झुकाकर होह्वा की तरफ से मुँह फेर लिया।

कुछ देर बाद थुङपाओ ने सिर उठाकर देखा, तो होह्वा जा चुकी थी और धूप उसके पैरों तक पहुँच चुकी थी। कस्बे से गाँव की तरफ आने वाली नौका के प्रस्थान का समय हो गया था। बड़ा बेटा आसि पैसा लेकर आने ही वाला होगा; शायद कुछ चावल भी खरीद लाए। यह सोचते ही थुङपाओ के मुँह में पानी आ गया। वह हररोज कद्दू की लपसी खा-खा कर बिल्कुल ऊब चुका था। चावल के जायकेदार भात की कल्पनामात्र से उसकी राल टपकने लगी।

"नन्हे पाओ। ओ नन्हे पाओ! जरा इधर तो आओ!" उसने पुकारा। चावल का विचार आते ही उसके मस्तिष्क में भूख से बिलबिलाते पोते की दयनीय आकृति उभर आई। बीमारी से उठने के बाद यह पहला मौका था जब थुङपाओ ने एक स्वस्थ आदमी की तरह जोर से पुकारा था।

कोई उत्तर नहीं मिला। नजर ऊपर उठाकर और जोर से पुकारा तो नन्हा पाओ तिल के केक जैसी गोलाकार चीज हाथ में उठाए होह्वा के घर से निकलकर दौड़ा-दौड़ा आ पहुँचा। यह देखकर थुङपाओ के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। नटखट बालक अपने हाथ की चीज को हिला-हिलाकर थुङपाओ को दिखाता हुआ बोला :

"यह देखो, बाबा! यह देखो, तिल का केक!" और उसने खुशी-खुशी सारा केक

अपने मुँह में डाल लिया।

थुङ्पाओ देखता रह गया। एक क्षण के लिए उसके चेहरे पर ईर्ष्याभरी मुस्कान खेल गई। पर दूसरे ही क्षण वह मायूस हो गया। धीमी-सी आवाज में बोला :

"किसने दिया है?"

"हो...हो..." नन्हा पाओ केवल इतना ही कह पाया, क्योंकि उसके मुँह में केक भरा था।

थुङ्पाओ पहले ही समझ गया था। उसकी भौंहें तन गयीं। तन-बदन में आग लग गई। नन्हा पाओ "दुश्मन" की दी हुई चीज खा रहा था—कितनी शर्म की बात थी! आखिर होह्वा के परिवार के पास तिल के केक होना कहाँ तक उचित था! वह दाँत पीसने लगा और गुस्से से तिलमिला उठा। लेकिन फिर भी नन्हे पाओ पर हाथ न उठा पाया। तब तक नन्हा पाओ सारा केक चट कर चुका था। वह प्रसन्न मुद्रा में बोला :

"बाबा, यह केक मुझे होह्वा काकी ने दिया है। होह्वा काकी बड़ी अच्छी है। उसके पास तिल के केक हैं!"

"बकबक बन्द कर!" थुङ्पाओ ने गुस्से से आगबबूला होकर पोते की ओर हाथ उठाया, मानो उसे थप्पड़ जड़ने वाला हो।

लेकिन नन्हा पाओ बिल्कुल नहीं डरा। "सच बाबा, उसके पास तिल के केक हैं!" उसने अपनी बात दोहराई। "कस्बे से लाई है। कहती है कल चावल लेने जायेगी। सफेद चावल!"

थुङ्पाओ चौंककर उठ खड़ा हुआ। उसका सारा शरीर काँप रहा था। पिछले एक-डेढ़ महीने से उसे चावल के दर्शन भी नहीं हुए थे। किसी दूसरे परिवार के पास चावल होने की बात सुनकर मन में ईर्ष्या जाग उठा स्वाभाविक था। और सबसे बुरी बात तो यह थी कि वह परिवार होह्वा का था, जिससे वह हमेशा नफरत करता था!

"तो क्या हुआ?" वह बौखलाया, मानो आसमान में कोई काला बादल फट पड़ा हो। "कहीं से मार लाई होगी! किसी दिन पकड़ी जायेगी तो मौत के घाट उतार दी जायेगी! ऐसे लोगों के साथ ऐसा ही होना चाहिए।"

लेकिन मन की भड़ास निकालते समय थुङ्पाओ ने अपनी आवाज कुछ धीमी रखी। पोते की ओर कनखियों से देखते हुए उसने मन ही मन सोचा : अगर होह्वा "लड़ने" आ पहुँची, तो वह क्या कहेगा? बिना सबूत के किसी पर लुटेरा होने का इलजाम लगाना आखिर हँसी-खेल तो था नहीं। पर ताज्जुब की बात तो यह थी कि होह्वा पर अब तक इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई थी। अबोध नन्हे पाओ ने फिर एक बार बालहठ के साथ अपनी बात दोहराई। बूढ़े दादा के आक्रोश की आग में घी उँडेलता हुआ वह बोला :

"ऐसा नहीं है, बाबा! होह्वा काकी बड़ी अच्छी है। उसके पास तिल के कुछ

केक अभी बाकी हैं। मुझे देने का वायदा कर चुकी है!"

थुङ्पाओ के चेहरे का रंग पीला पड़ गया। वह चुपचाप उठा और बाँस की छड़ी के पास जा पहुँचा। माहौल बदलता देख नन्हा पाओ सिर पर पाँव रखकर भाग खड़ा हुआ—मार से बचने के लिए वह सीधा होह्वा के घर जा पहुँचा। थुङ्पाओ उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था। पर अचानक उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। पैर रबड़ की तरह मुलायम हो गये। छड़ी को एक तरफ फेंककर वह जमीन पर बैठ गया। तभी सोते के उस पार से कोई आदमी आता दिखाई दिया। एक छोटा-सा पुल पार करने के बाद वह थुङ्पाओ के करीब जा पहुँचा और बोला :

"बधाई हो थुङ्पाओ भैया! अच्छा, तो आज से तुम चलने-फिरने लगे हो!"

हालाँकि थुङ्पाओ की आँखों के सामने अब भी अँधेरा छाया हुआ था, फिर भी उसने आगन्तुक की आवाज को पहचान लिया। वह पुजारी ह्वाङ था। उससे मिलकर थुङ्पाओ प्रसन्न हो गया। दोनों पुराने दोस्त थे। जब वह बीमार था तो पुजारी ह्वाङ अक्सर मिजाजपुर्सी के लिए आया करता था। गाँव वाले उन दोनों को दो "बेढंगे" कहकर पुकारते थे। थुङ्पाओ को यह नाम इसलिए दिया गया था क्योंकि वह हर "विदेशी" चीज से बेहद नफरत करता था। पुजारी ह्वाङ को यह नाम इसलिए दिया गया था क्योंकि वह शिष्ट समाज में प्रयुक्त होने वाले उन दो-चार शब्दों को हमेशा दोहराता रहता था जिन्हें उसने कस्बे के लोगों से सीखा था। उसका हर वाक्य शिष्टाचार की प्राचीन शब्दावली से लदा होता था। जिस ढंग से वह इन शब्दों को दोहराता रहता उससे गाँववालों को ऐसा लगता था मानो कोई ताओपंथी पुजारी मंत्रपाठ कर रहा हो। थुङ्पाओ गाँव के उन चन्द लोगों में था जो पुजारी ह्वाङ की लच्छेदार शब्दावली को समझते थे। वह अपने बड़े बेटे से अक्सर कहता रहता था कि पुजारी ह्वाङ जैसे विद्वान का खेतीबाड़ी करना "प्रतिभा का घोर अपव्यय" है।

थुङ्पाओ ने अपना सारा दुखड़ा पुजारी ह्वाङ को सुना दिया।

"पुजारी जी, कैसा दमघोटू माहौल पैदा हो गया है! मुझे बिस्तर पकड़े अभी एक महीने से कुछ ही ज्यादा समय तो हुआ है। पर इस बीच दुनिया कितनी बदल गई है! गाँव की हालत ऐसी हो गई है मानो उसे "लम्बे बाल वालों" ने रौंद डाला हो। और वह बदजात चुड़ैल न जाने कहाँ से तिल के कुछ केक उठा लाई है। नन्हा पाओ उसकी ओर खिंचता चला जा रहा है। बड़ा बेशर्म है! तुम क्या सोचते हो, पुजारी जी? क्या मुझे उसक पिटाई नहीं करनी चाहिए?" थुङ्पाओ ने बाँस की छड़ी उठा ली और उसे जमीन पर पटकने लगा।

पुजारी ह्वाङ कस्बे के मन्दिर में बैठने वाले उस ज्योतिषी के अन्दाज में थुङ्पाओ की सारी बात चुपचाप सुनता रहा जो अपनी गूढ़ विद्या के बारे में यह दावा करता फिरता था कि यह उसके परिवार में "तीन पीढ़ियों से चली आई है।" जब तक थुङ्पाओ बोलता रहा, पुजारी ह्वाङ सिर हिलाता रहा और उसाँसे भरता रहा। अन्त

में धीमी-सी आवाज में बोला :

"लगता है, संसार में विद्रोह भड़क उठेगा, उथल-पुथल मच जायेगी। बड़े भैया, जानते हो गाँव वाले कहाँ गये हैं? गल्ले के व्यापारियों और धनवानों के चावल-गोदामों पर धावा बोलने! यह सब परसों पाएछीपाङ के किसानों ने शुरू किया; आज हमारे गाँव के लोग गये हैं। तुम्हारा छोटा साहबजादा भी उन्हीं के साथ गया है। पर बड़े भैया, तुम तो अभी-अभी बीमारी से उठे हो। सोच लो कि छोटे बेटे की सरगरमियों के बारे में तुम्हें कोई इत्तला नहीं है। माफ करना, मुझसे गलती हो गई है। मैं तुम्हें जरूरत से ज्यादा बता गया हूँ!"

थुङपाओ को अब सारी बात समझ में आ गई। वह उछल पड़ा। उसकी आँखों से अँगारे बरसने लगे। पर तभी उसे लगा जैसे किसी ने उसके सिर पर जोर से प्रहार कर दिया हो। वह फिर एक बार चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा। उसके होंठ काँप रहे थे। अच्छा, तो वे लोग धनवानों के चावल-गोदामों पर धावा बोलने गये हैं! इस खबर से उसे भय और प्रसन्नता की अनुभूति एक साथ हुई। प्रसन्नता इसलिए क्योंकि वह समझ गया कि होह्रा के तिल के केकों के बारे में उसका अनुमान सही था। उन्हें जायज तरीके से हासिल नहीं किया गया था। भय इसलिए क्योंकि उसका बेटा आत्वो भी उन लोगों के साथ गया था और अगर सजा मिली तो वह भी नहीं बच पाएगा।

"क्षमा करो, बड़े भैया! मुझे क्षमा करो!" पुजारी ह्वाङ घबड़ाकर बोला। "तुम्हारा स्वास्थ्य अत्यन्त मूल्यवान है, अत्यन्त मूल्यवान है! मेरी बात से तुम्हारा मन क्षुब्ध हो उठा है। मुझे क्षमा करो! तसल्ली रखो! मैंने सुना है कि अफसर लोग ज्यादा सख्ती नहीं दिखायेंगे। अपने साहबजादे को सिर्फ खबरदार कर देना। सब ठीक हो जायेगा!"

"हाँ पुजारी जी, यह सच है। इस कमबख्त का कोई ईमान-धरम थोड़े ही है। मेरे मन में बरसों से यह डर बना हुआ था कि कहीं हमें सताने के लिए उस 'लम्बे बाल वाले' की आत्मा फिर से जन्म न ले ले जिसकी मेरे दादा ने हत्या कर दी थी। लगता है, ठीक यही हुआ है! वह घर ही न लौटा, तो दूसरी बात है। अगर लौटा, तो मैं उसे जिन्दा ही गाड़ दूँगा! पुजारी जी, यह बताकर तुमने मुझ पर भारी एहसान किया है। मैं तो अब तक बिल्कुल अँधेरे में था!"

थुङपाओ के होंठ गुस्से से फड़फड़ा रहे थे। आँख बन्द करते ही उसे मरहूम "लम्बे बाल वाले" की रूह दिखाई देने लगती थी। पुजारी ह्वाङ ने सपने में भी नहीं सोचा था कि इस खबर से थुङपाओ इतना ज्यादा क्षुब्ध हो उठेगा। अपनी वाचालता पर उसे बड़ी ग्लानि हो रही थी। थुङपाओ के कृतज्ञतापूर्ण कथन को बड़ी नम्रता से अस्वीकार करता हुआ वह तुरन्त बोल पड़ा :

"इसमें एहसान की क्या बात है, बड़े भैया? एहसान की क्या बात है? अच्छा,

अब मैं चलता हूँ। एक छोटा-सा काम निपटाना है। अपनी तन्दुरुस्ती का ख्याल रखना।"

यह कहकर पुजारी ह्वाङ चलता बना। थुङपाओ अकेला रह गया। वह अतीत की याद में खो गया। आसमान में सूरज तेजी से चमक रहा था। पर थुङपाओ को उसके ताप का जरा भी एहसास नहीं हो रहा था। "लम्बे बाल वालों" के बारे में जिन किस्से-कहानियों को उसके पिता और दादा ने सुनाया था, उनकी धुँधली-सी स्मृति उसके मस्तिष्क में उभरने लगी। उसे पिछली शताब्दी का आठवाँ दशक याद आ गया, जब सम्राट क्वाङश्वी अभी सिंहासन पर बैठा ही था। तब पूरी काउण्टी के किसानों ने बगावत कर दी थी। लेकिन मानचू शासकों ने तुरन्त बड़ी निर्दयता से बागियों का दमन कर दिया था--खून से लथपथ नरमुण्डों को धरती पर लुढ़कते उसने अपनी आँखों से देखा था। काफी सोच-विचार करने के बाद वह केवल इस निष्कर्ष पर पहुँचा था :

"अगर बगावतों से ही कोई फायदा होता, तो 'लम्बे बाल वाले' बरसों पहले गद्दीनशीन हो चुके होते!"

उसे लग रहा था, जब से वह बीमार पड़ा है और उसने खाट पकड़ी है, तबसे सारी दुनिया ही बदल गई है। किसी समय उसके परिवार के पास गुजारे से कुछ ज्यादा ही गल्ला या पैसा हुआ करता था। लेकिन इधर कुछ वर्षों से वह लगभग दिवालिया हो चुका था। साथ ही शासन-सत्ता की अनुल्लंघनीयता के बारे में वह अपने मन में अब भी भ्रम पाले हुए था। वर्तमान उथल-पुथल का ख्याल आते ही वह अत्यन्त भयभीत हो उठता था।

## 2

सूरज डूबने से कुछ पहले ही थुङपाओ का बड़ा बेटा आसि घर लौट आया। उसे एक भी दमड़ी उधार नहीं मिल पाई थी। फिर भी तीन तओ* चावल लाद लाया था।

"ऊ बाबू ने साफ कह दिया, पैसा नहीं है। वह बहुत बौखलाया हुआ था!" आसि ने चावल की बोरी दो नाँदों में खाली करते हुए भारी मन से कहा। "लेकिन फिर उसे मुझ पर दया आ गई। तीन तओ चावल उधार देने को राजी हो गया। उसकी दुकान के पिछवाड़े न जाने कितना चावल भरा पड़ा है। बेचारे किसान दाने-दाने को तरस रहे हैं! तीन तओ चावल के बदले फसल के बाद हमें पाँच तओ चावल लौटाना होगा--तिस पर भी एहसान जता रहा था। दौलतमन्द लोग इसी तरह अपनी दौलत बढ़ाते जाते हैं!" इतना कहकर वह घर के पीछे के आँगन में लकड़ी की

* 1 तओ=0.275 बुशल या 0.1 तान

सुअरशाला के सामने जा पहुँचा और पत्नी के कान में कुछ फुसफुसाने लगा।

थुङपाओ ने बड़ी मायूसी के साथ पहले अपने बेटे व बहू की तरफ और फिर चावल से भरी दोनों नाँदों की तरफ देखा। अपने बेटे के तौर-तरीके आज उसे कुछ बेतुके-से जान पड़ रहे थे। वह तीन तओ चावल आखिर कहाँ से लाया, यह बात अभी स्पष्ट नहीं हो पाई थी। ज्यादा गहराई से पूछताछ करने में थुङपाओ कुछ डर रहा था। आत्वो की "बदतमीजी" की वजह से वह बहू से पहले ही झगड़ा मोल ले चुका था और बहू "औंधी खोपड़ी" कहकर उसकी खिल्ली उड़ा चुकी थी।

"जाकर आत्वो की शिकायत क्यों नहीं दर्ज करा देते?" बहू ने व्यंग्य किया था। "जब आएगा तो उसे जिन्दा ही गड़ देना और अपने धनी आकाओं से इनाम में सोने के य्वानपाओ* हासिल कर लेना!"

हालाँकि उत्तर में थुङपाओ ने प्राचीन ऋषियों का यह कथन उद्धृत किया था—"चाहे कितनी ही कँगाली क्यों न आ जाये, मनुष्य को नेकी का रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए"—फिर भी उसके शब्दों का बहू पर कोई असर न हुआ था। वह फौरन बोल पड़ी थी : "नेकी" कोई खाने की चीज तो है नहीं जिससे पेट की आग बुझाई जा सके। वह तो कद्दू से भी गई-बीती चीज है! कद्दू को कम से कम चावल की जगह खाया तो जा सकता है!

इस कलह से थुङपाओ की परेशानी और अधिक बढ़ गई थी। वह जानता था कि आसि एक "वफादार और शरीफ" नागरिक है। पर पत्नी की बात टालना उसके बूते के बाहर था। दोनों को सुअरशाला के पास कानाफूसी करते देख थुङपाओ के तन-बदन में आग लग गई। वह गुस्से से दाँत पीसने लगा। मगर लाचार था। बहू-बेटे की तरफ देखते-देखते उसके मस्तिष्क में सुअरशाला की दास्तान फिर उभर आई। उसे पाँच-छः वर्ष पहले उसने खुद अपने ही हाथों से बनाया था। उस पर काफी खर्चा हुआ था; दस य्वान से ज्यादा की तो सिर्फ लड़की ही आई थी। मगर पिछले साल से उसका परिवार उसे बिल्कुल इस्तेमाल नहीं कर पाया था। इस साल भी सुअर के नन्हे बच्चे खरीदने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। सुअरशाला के लिए एक शुभ स्थान चुनने के उद्देश्य से ज्योतिषी बुलाकर उन्होंने व्यर्थ ही पैसा बर्बाद किया था।

सुअरशाला को देखकर उसे बेहद कुढ़न अनुभव हो रही थी। वह उठा और लड़खड़ाता हुआ अपने बेटे और बहू के पास चला गया।

"सुना है छोटा छन बाबू पुरानी लकड़ी की तलाश में है," वह आसि से बोला। "कल उठा ले जाओ इस मनहूस सुअरशाला की लकड़ी को और बेच आओ!" हमारे पास सुअर खरीदने के लिए पैसे कहाँ हैं? यह बिल्कुल बेकार पड़ी है। हमें

* जूते के आकार का सोने या चाँदी का टुकड़ा, जिसे सामन्ती चीन में सिक्के के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

क्या फायदा पहुँचा रही है?"

कानाफूसी बन्द करके आसि और उसकी पत्नी थुङपाओ की तरफ देखने लगे। संध्या की लाल-लाल किरणों में बहू का मुखमण्डल चमक उठा। उसके दोनों गालों पर लालिमा छा गई।

"यह सब करने से क्या फायदा होगा?" आसि की पत्नी ने तुरन्त उत्तर दिया। "लकड़ी बिल्कुल सड़-गल चुकी है, पुरानी पड़ चुकी है। छोटा छन बाबू शायद ही ले।"

"जरूर ले लेगा!" थुङपाओ ने आग्रहपूर्वक कहा। "कम से कम मेरी वजह से जरूर ले लेगा। हमारे परिवार के साथ उसके तीन पुश्त पुराने सम्बन्ध हैं। इंकार कैसे कर सकता है?"

थुङपाओ के इस आत्मविश्वास का आधार शायद वह "गौरवशाली अतीत" था जब उसके दादा और छोटे छन बाबू के दादा एक साथ "लम्बे बाल वालों" के कैम्प से भाग आए थे। इस घटना के बाद से छन परिवार में उसके दादा का बहुत सम्मान होने लगा था। थुङपाओ के साथ भी वे लोग बेहद अच्छा बर्ताव करते थे। कभी-कभी छोटा छन बाबू उसे "बड़े भैया थुङपाओ" कहकर भी पुकारता था। इससे थुङपाओ के मन में यह विश्वास और भी प्रबल हो उठा था कि अपने से श्रेष्ठ लोगों का सम्मान करना ही सफलता प्राप्त करने का एकमात्र सही रास्ता है।

जब बहू मुँह फुलाकर चली गई, तो थुङपाओ न तैश में आकर बेटे से पूछा :

"आत्वो का क्या इरादा है? साफ-साफ बाताओ! क्या तुम यह समझते हो कि मैं कुछ नहीं जानता? जब तक मैं जिन्दा हूँ, घर में मेरा ही शासन चलेगा!"

छत की मुँडेर पर बैठा एक कौवा बड़ी मनहूस आवाज में काँव-काँव करने लगा। आसि ने खपरैल का एक टुकड़ा उठाकर उसकी ओर फेंका और खखारकर थूक दिया। पिता के सामने वह चुपचाप सहमति में सिर हिलाता जा रहा था। आखिर वह बोल भी कैसे सकता था? कह भी क्या सकता था? पिता एक बात कहता, पत्नी दूसरी बात कहती और छोटा भाई तीसरी। वह स्वयं एक सीधा-सच्चा आदमी था। इसलिए सभी की बात उसे सही मालूम पड़ती थी। उसकी अपनी कोई राय न थी।

"वे लोग सिर उड़ा देंगे! पूरे से पूरे परिवार का सफाया कर देंगे! मैं यह सब कई बार देख चुका हूँ!"

"लेकिन... यहाँ तो इतने सारे लोग हैं। क्या वे हम सबको मार डालेंगे!" आसि ने दबी जबान से कहा। पर पिता की आक्रोशभरा आँखों और माथे पर उभरी नसों को देखकर आसि सहम गया और तुरन्त बोल पड़ा, "चिन्ता की कोई बात नहीं, बापू। आत्वो तो सिर्फ तमाशा देखने गया है। आज वे लोग कस्बे की तरफ नहीं गये..."

"तुम बिल्कुल पागल हो!" बेटे की बात काटते हुए थुङपाओ बोला। पुजारी ह्वाङ ने मुझे सब कुछ बता दिया है! क्या वे झूठ बोल रहे हैं?" थुङपाओ को अब इस बात का पक्का विश्वास हो गया था कि उसके दोनों बेटों और बहू के बीच जरूर कोई मिलीभगत है।

"मैं सच कहता हूँ, वे लोग कस्बे में नहीं गये। पुजारी ह्वाङ को बिल्कुल गलत खबर मिली है!" पिता के आग्रह से परेशान होकर आसि ने सच्चाई उगल दी : "वे लोग पूरब की तरफ याङच्याछूयाओ गाँव में गये हैं। सारी कार्यवाही का संचालन बूढ़ी औरतें और नौजवान लड़कियाँ कर रही हैं; पुरुष तो सिर्फ नाव खेने में मदद कर रहे हैं। आत्वो भी मदद कर रहा है। असली बात यह है!"

यह सब बताकर आसि दरअसल अपनी पत्नी की हिदायतों का उल्लंघन कर रहा था। पर दो तथ्य अब भी ऐसे थे जिन्हें वह छिपा गया था। एक यह कि "मदद करने वाला" आत्वो वास्तव में इस अभियान का नेता था; दूसरा यह कि आसि खुद भी अपनी पत्नी की इस राय से सहमत था कि अगर पैसा उधार लेने और चावल खरीदने में सफलता न मिली, तो कल उसे भी "नाव खेने में मदद करने के लिए" जाना चाहिए।

थुङपाओ ने आसि की ओर सन्देहभरी दृष्टि से देखा और चुपचाप खड़ा रहा।

अन्धकार धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। रसोईघर की चिमनी से धुआँ उठ रहा था। नन्हा पाओ सामने के कमरे में गाना गा रहा था। आसि को पत्नी ने पुकारा तो वह खुश हो गया। बूढ़े पिता से पिण्ड छुड़ाने का उसे अच्छा बहाना मिल गया था। जाते-जाते वह एक क्षण के लिए रुका और एक ठण्डी-सी उसाँस भरकर पिता से बोला :

"तीन तओ चावल कम से कम आठ-नौ दिन तो चल ही जायेंगे। आज रात आत्वो लौटेगा ता उससे कह दूँगा, आगे से नाव खेने में मदद करने न जाये।"

"मैं अब भी सोचता हूँ, सुअरशाला को तोड़ दिया जायें आँधी-वर्षा में इसकी हालत दिन-ब-दिन ज्यादा खराब होती जायेगी। लकड़ी बेचकर कुछ पैसे तो खरे हो जायेंगे।"

जो बात थुङपाओ ने कही उसका आशय कुछ इस प्रकार था : हम लोग अभी इतने कँगाल नहीं हुए कि "सम्राट के कानून" तोड़ने की नौबत आ जाये! एक कुशल बढ़ई की तरह उसने सुअरशाला को उँगली से ठोक-बजा कर देखा और फिर घर के भीतर चला गया।

खलिहान से लोगों के हँसने-बोलने की आवाजें आने लगीं। गाँव वाले "अभियान" से लौट रहे थे। नन्हा पाओ अपने चाचा को ढूँढ़ने खरगोश की तरह सरपट दौड़ता हुआ खलिहान में पहुँच गया। उसकी माँ भी झटपट चूल्हे में लकड़ियाँ डालकर खलिहान में जा पहुँची। उन लोगों की खबर लेने के लिए वह बेचैन थी। चूल्हे पर

चढ़ी देगची का ढकना भाप के दबाव से नाच रहा था। उसमें से गरमागरम चावल की महक चारों तरफ फैल रही थी। थुङ्पाओ के मुँह में पानी आ गया और पेट में चूहे कूदने लगे। लेकिन उसका मन कहीं और अटका हुआ था। वह सोच रहा था : छोटे बेटे आत्वो को, जो जंगली घोड़े की तरह बिल्कुल बेलगाम होता जा रहा था, कैसे काबू किया जाये और धान रोपने के मौसम की कैसे तैयारी की जायें धान रोपने में अभी एक महीने से कुछ ज्यादा समय बाकी था। गाँवभर में शायद अकेला थुङ्पाओ ही ऐसा था जो अभी से धान रोपने की चिन्ता करने लगा था।

उस रात बाकी लोगों के साथ न तो आत्वो घर लौटा ओर न उसका पड़ोसी लू फ़छिङ ही, जो सोते के उस पार रहता था! मालूम हुआ, ये दोनों नौजवान याङच्याछ्याओ मे ही रात बितायेंगे। दूसरे दिन उन्हें याच्वेथान तक "नाव खेने में मदद करने" की योजना में शामिल होना था, जहाँ तीन गाँवों के किसानी एकत्रित होने वाले थे। वहाँ से सब लोग कस्बे की ओर कूच करने वाले थे। यह खबर आसि की पत्नी को लू फ़छिङ की बहिन ल्यूपाओ ने दी थी। सारे गाँव में इस योजना की खूब चर्चा हो रही थी। पर थुङ्पाओ को बताने का साहस किसी को न था। हर आदमी उसके मिजाज को जानता था।

"अच्छा हुआ, वह घर नहीं लौटा। पाजी कहीं का! मैं उसे घर से निकाल दूँगा!" थुङ्पाओ ब्यालू के समय बौखलाया। उसकी नजर अपने बड़े बेटे पर गड़ी हुई थी। लगता था, जो कुछ हो रहा है उसकी कुछ भनक थुङ्पाओ के कानों में पड़ चुकी है।

आसि ठगा-सा रह गया। उसकी पत्नी ने कनखियों से अविश्वासपूर्वक ससुर की ओर देखा और भुनभुनाने लगी।

उस रात थुङ्पाओ अच्छी तरह न सो सका। ज्यों ही आँखें मूँदता, तरह-तरह के सपने दिखाई देने लगते। सपने ज्यादा लम्बे न होते। पर ज्यों ही एक सपना टूटता, वह हड़बड़ाकर उठ बैठता। लगता, जैसे किसी ने उस पर छड़ी से प्रहार किया हो। बेहद थकान होने पर भी उसे सोने में डर महसूस होने लगा था। पलकें इतनी भारी हो गई थीं मानो उन पर किसी ने मनों बोझ रख दिया हो। अर्धनिद्रा की अवस्था में कभी-कभी बगल के कमरे से बड़े बेटे की आवाज उसके कानों में पड़ रही थी। वह सोचकर कि पति-पत्नी घर-गिरस्ती के मसलों पर सलाह-मशविरा कर रहे होंगे, उसने खास ध्यान नहीं दिया। लेकिन अचानक आसि की आवाज बुलन्द हो गई। थुङ्पाओ को साफ-साफ सुनाई दिया :

"आत्वो, बापू तुमसे सख्त नाराज है।! कह रहे थे, तुम्हें जिन्दा ही गाड़ देंगे! मैं जानता हूँ, तुम सही रास्ते पर हो। लेकिन बापू बूढ़े हो गये हैं, वक्त की नजाकत को नहीं समझते। मुझे सिर्फ तुम्हारी चिन्ता है। कानून की नजरों में तुम एक गम्भीर अपराध कर रहे हो। मुठभेड़ होने पर अगर बाकी लोग भाग खड़े हुए और

तुम अकेले ही रह गये, तो क्या होगा?...''

क्या वह सपना तो नहीं देख रहा था? लेकिन नहीं, थुङपाओ आसि की सारी बात साफ-साफ सुन चुका था। उसके रोंगटे खड़े हो गये। वह आँखें फाड़कर अपने चारों ओर देखने लगा। कुहनी के बल बिस्तर से उठने की कोशिश करते हुए उसने जोर से बड़े बेटे को पुकारा।

कोई उत्तर न मिला। नन्हा पाओ नींद में हँस रहा था। आसि की पत्नी ने परेशान होकर अस्पष्ट आवाज में कुछ कहा। इसके फौरन बाद खाटों की चरमराहट सुनाई दी और फिर खर्राटों की आवाज आने लगी।

थुङपाओ की नींद एकदम गायब हो चुकी थी। वह अँधेरे में आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार घूम रहे थे। उसे तीस साल पहले का वह "सुनहरा जमाना" याद आ गया जब उसके परिवार का भाग्य दिनोंदिन चमकता जा रहा था। लेकिन आज उस खुशहाली की यादगार चन्द पुराने बहीखाते ही रह गये थे। इस साल रेशम के कीड़े पालने में उसे फिर एक बार घाटा उठाना पड़ा था।... सहसा उसे अपने परिवार की "सच्चाई" की परम्परा याद आ गई, जो उसके दादा के जमाने से चली आ रही थी। जब बुजुर्ग छन बाबू जिन्दा था, तो वह अक्सर उसके परिवार की प्रशंसा करता रहता था। बीस वर्ष की उम्र से ही थुङपाओ ने अपना आचरण कस्बे के ''शरीफजादों'' की तरह ढाल लिया था। हालाँकि वह सिर्फ खुरपी-कुदाली ही चलाता था, फिर भी वह एक ''सच्चा'' इंसान था। पर अब उस पर न जाने किसका साया पड़ गया था? भगवान ने भी आँखें फेर ली थीं। वरना उसके घर आत्वो जैसा बेटा न पैदा होता! क्या आत्वों के अन्दर सचमुच उस ''लम्बे बाल वाले'' नौजवान की रूह तो नहीं उतर आई जिसे थुङपाओ के दादा ने मजबूर होकर आज से साठ बरस पहले जान से मार डाला था? सोचने मात्र से थुङपाओ को पसीना आ गया—आत्वो के तौर-तरीके ठीक ''लम्बे बाल वालों'' जैसे ही तो थे! कोई पाँच बरस पहले जब बहुत से लोग ''जमींदार-शरीफजादों का नाश हो!''के नारे लगा रहे थे, तो क्या आत्वो ने उस विशाल तलवार को बाहर निकालकर घुमाया नहीं था जिसे थुङपाओ के दादा ''लम्बे बाल वालों'' के कैम्प से भागते समय उठा लाए थे? यह वही तलवार थी जिससे उन्होंने ''लम्बे बाल वाले'' नौजवान का सिर उड़ा दिया था। शायद भाग्य में यही बदा था कि यह तलवार एक दिन थुङपाओ का बेटा आत्वो उठाएगा!

थुङपाओ के मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। वह जितना ज्यादा सोचता जाता, उतना ही ज्यादा भयभीत होता जाता। पर एक छोटी-सी बात उसके दिमाग में हरगिज नहीं आ सकती थी। उसकी कल्पना थुङपाओ दस लाख वर्ष में भी नहीं कर सकता था। जिस समय वह अपने छोटे बेटे पर गुस्से से भुनभुना रहा था, ठीक उसी समय याङच्याछ्याओ के तीस किसानों का जत्था भोर के धुँधलके में

गाँव की तरफ बढ़ रहा था। जत्थे का नेतृत्व आत्वो और उसका पड़ोसी लू फूछिङ कर रहे थे! गाँव के किसान पूरी रात बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करने क बाद, अब बाहर निकलकर जत्थे का हार्दिक स्वागत करने की तैयारी कर रहे थे!

दीवार की दरारों के बीच से आसमान मछली के पेट की तरह भूरा नजर आने लगा। खलिहान में गौरैया चहचहाने लगीं। गाँव का एकमात्र मुर्गा—जो पुजारी ह्वाङ की मूल्यवान सम्पत्ति था—बाँग देने लगा। दूर से ही उसकी आवाज ऐसी लग रही थी मानो कोई अबला विलाप कर रही हो।

सहसा थुङपाओ को झपकी आ गई। अर्धनिद्रा की हालत में उसने देखा : "लम्बे बाल वालों" की तलवार उसके सामने चमचमा रही है और एक हृष्टपुष्ट हाथ तलवार के दस्ते को मजबूती से थाम हुए है। सहसा उसे बड़ी-बड़ी गोल-गोल आँखों और घनी काली भौंहों वाला एक चेहरा नजर आया। "आत्वो!" भयमिश्रित आक्रोश से भरे स्वर में थुङपाओ जोर से चिल्लाया और हड़बड़ाकर उठ बैठा। दिन चढ़ चुका था। आसि की पत्नी लपसी पका रही थी। चूल्हे में आग की लाल-लाल लपटें नाच रही थीं। अपने को समेटता-सम्भालता थुङपाओ खाट से नीचे उतर गया।

अचानक खलिहान की तरफ से भारी शोरगुल सुनाई पड़ा। कुछ ही क्षणों में घण्टे-घड़ियाल जोर-जोर से बजने लगे।

"ओह! किसके घर में आग लग गई है?" यह कहता हुआ थुङपाओ तेजी से बाहर निकल गया।

जब खलिहान में पहुँचा, तब कहीं उसे सारी बात समझ में आई। वहाँ जो दृश्य देखा वह ठीक वैसा ही था जैसा उसने सम्राट क्वाङश्वी के शासन-काल के शुरू में किसान "विद्रोह" के समय देखा था! याङच्याछ्याओ के किसान—मर्द, औरतें, नौजवान और बूढ़े—कन्धे से कन्धा मिलाए जत्थों में खलिहान पार कर रहे थे। "भाइयो और बहिनो, आओ! हम सब एकसाथ कूच करें!" वे लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे। आत्वो भी उनके साथ था। घड़ियाल को दरअसल वही बजा रहा था। आत्वो आगे बढ़ा और सीधा पिता के सामने जा पहुँचा। उसे देखते ही थुङपाओ का चेहरा तमतमा उठा, आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं।

"अरे ओ मूर्ख! वे लाग जरूर तेरा सिर उड़ा देंगे!"

"हाँ बापू, मरने का यह भी एक तरीका है," आत्वो ने हँसते हुए उत्तर दिया। "पर अगर चावल न मिले, तो क्या हम भूख से तड़प-तड़पकर नहीं मर जायेंगे? हम लोग जा रहे हैं! भैया कहाँ हैं? भाभी कहाँ हैं? हम सब एक साथ जा रहे हैं।"

क्रोध से पागल थुङपाओ से आत्वो को मुक्का मारने के लिए हाथ उठाया ही था कि आसि लपककर उन दोनों के बीच जा पहुँचा।

"आत्वो!" उसने अनुरोध किया, "मेरी बात सुनो! आज न जाओ। कल मैं तीने तओ चावल उधार ले आया हूँ। हमारे पूरे परिवार के खाने को हो जायेंगे!"

आत्वो की घनी काली भौहें फैल गयीं। उसके चेहरे का रंग बदलने लगा। लेकिन उसके कुछ कहने से पहले ही पीछे से एक नौजवान सामने आ गया। यह आत्वो का पड़ोसी लू फ़छिङ था। फ़छिङ ने हँसते हुए आसि को एक तरफ धकेल दिया और जोर से बोला :

''अच्छा, तो तुम्हारे पास तीन तओ चावल है? बड़ी खुशी की बात है! याङच्याछ्याओ के लोगों ने अभी सुबह का खाना भी नहीं खाया। भाइयो और बहिनो, सब लोग इस तरफ आओ! मेरे साथ चलो!''

क्या कहा? क्या उसके परिवार का चावल ये लोग चट कर जायेंगे? आसि को अपने कानों पर विश्वास न हुआ। याङच्याछ्याओ के किसान खुशी-खुशी उसके घर में घुस गये। थुङपाओ के मुँह से चीख निकल पड़ी, जैसे किसी ने उसके कलेजे पर छुरी चला दी हो। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया, पैर डगमगाने लगे। मजबूर होकर उसे जमीन पर बैठना पड़ा। आसि आपे से बाहर हो गया और फ़ूछिङ पर झपटकर उसका गला दबोचने लगा।

''पागल हो गये हो क्या?'' फ़ूछिङ ने अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा। ''यह क्या कर रहे हो, आसि भैया? जरा मेरी बात भी तो सुनो! आत्वो, देखो तो, इन्हें क्या हो गया है?''

आसि फ़ूछिङ को छोड़कर आत्वो पर टूट पड़ा। अपने छोटे भाई पर ताबड़तोड़ घूँसे जमाता हुआ वह रुआँसा होकर बोला :

''साँप भी अपने बिल के आस पास के कीड़ों को नहीं खाता! पर एक तुम हो कि लोगों को बुला-बुलाकर अपने ही घर का चावल लुटा रहे हो! तुम अपने ही घर को बर्बाद करने पर आमादा हो!''

एक हाथ आत्वो की गर्दन में डालकर वह मजबूती से उसका सिर दबोचे हुए था। फ़ूछिङ उन दोनों को अलग नहीं कर पाया। जमीन पर बैठे थुङपाओ ने, जो गुस्से से लालपीला हो रहा था, दोनों को छुड़ाने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। भाग्यवश फ़ूछिङ की छोटी बहिन ल्यूपाओ वहाँ आ पहुँची। उसकी मदद से फ़ूछिङ दोनों भाइयों को एक-दूसरे से अलग करने में सफल हो गया।

''तुम्हारे पास साधन थे तो तुम चावल उधार ले आए,'' आत्वो हाँफता हुआ बोला। ''लेकिन दूसरे लोगों के सामने क्या रास्ता रह गया है? आखिर वे लोग क्या करें? तुम्हारे पास मुट्ठीभर चावल मौजूद हैं, इसलिए तुम उनके साथ नहीं जाना चाहते। लेकिन अगर आदमियों की कमी के कारण हम लोग अपना मिशन न पूरा कर पाये, तो क्या होगा?—भरोसा रखो, तुम्हारा चावल तुम्हें जरूर लौटा दिए जायेंगे। हमारे साथ कस्बे में चलो। तुम्हारा हिस्सा तुम्हें जरूर मिलेगा।''

आसि घुटनों के बल जमीन पर बैठा हुआ था—काठ की मूर्ति की तरह। फ़ूछिङ एक साथ से उसका कन्धा थपथपा रहा था और दूसरे से अपनी गर्दन पर लगी

खरोंच को सहला रहा था।

"हमने फैसला किया है कि जितना चावल यहाँ मिलेगा उसे सब लोग मिल-बाँटकर खायेंगे और जिससे चावल लेंगे उसे अपने साथ कस्बे तक जरूर ले जायेंगे। यह सिर्फ मेरा ही फैसला नहीं है, आसि भैया। हम सबका फैसला है।"

"इतने ज्यादा गुस्ताख, इतने ज्यादा जंगली तो 'लम्बे बाल वाले' भी नहीं थे।" थुङ्पाओ बुदबुदाया। उसकी आँखें झुकी हुई थीं। लोगों को उनके मुँह पर डाँटने-फटकारने का साहस उसे न था।

अब सारी बात थुङ्पाओ की समझ में आ चुकी थी। उसने मन ही मन कहा : ठीक है, जाओ तुम लोग कस्बे में! वहाँ तुम्हें अपनी करतूतों का फल मिल जायेगा! भगवान के भी आँखें हैं! तब कहीं तुम्हें इस बूढ़े की नसीहत याद आएगी। मैं कुत्ते की देह पर जिन्दगी बिताने वाला कोई पिस्सू थोड़े ही हूँ! इतनी लम्बी जिन्दगी में आखिर मैंने भी एक-दो बातें जरूरत सीखी हैं!

तभी याङच्याछ्र्याओ के किसान शोरगुल मचाते हुए थुङ्पाओ के घर से बाहर निकले। वे लोग अपने साथ चावल से भरी दोनों नाँदें भी लेते गये। आसि की पत्नी उनके पीछे-पीछे दौड़ी। उसके बाल बिखरे हुए थे और वह रोती-बिलबिलाती हुई कहती जा रही थी :

"ये चावल हमारे हैं! इन्हें कहाँ ले जा रहे हो? तुम लोगों को हमारा अनाज छीनने का क्या हक है? तुम लोग लुटेरे हो! हत्यारे हो!"

पर उसकी तरफ किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया। किसानों ने दोनों नाँदों को खलिहान के बीचोंबीच रख दिया और किसी ने फिर से घड़ियाल बजाना शुरू कर दिया। आसि की पत्नी को पीछे खींचने में ल्यूपाओ को अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ी।

"जिसके पास चावल हैं उसे चाहिए कि सबसे साथ मिल-बाँटकर खाए! तुम इतनी-सी बात क्यों नहीं समझती?" वह जोर से बोली। "किसने कहा था कि तुम दूसरों के सामने गिड़गिड़ाओ, दूसरों की मिन्नत-खुशामद करो? किसने कहा था कि तुम दूसरों से चावल उधार ले आओ? माना कि इससे तुम्हारे परिवार का काम चल जायेगा, पर बाकी लोगों का क्या होगा? दूसरे लोग भूखे मर रहे हैं। क्या तुम्हारा परिवार गले तक ठूँसकर खाता रहे और बाकी लोग खड़े-खड़े तमाशा देखते रहें? चुप हो जाओ! ऐसे चीत्कार कर रही हो जैसे तुम्हारी नानी मर गई हो! यह सच है कि हम लोग तुम्हारे चावल खा रहे हैं, पर यह क्यों भूल जाती हो कि ये चावल तुम्हें जल्दी ही लौटा दिए जायेंगे? इसमें रोने-चिल्लाने की क्या बात है?"

आसि काठ की मूर्ति के समान निश्चय बैठा था। सहसा वह उठ खड़ा हुआ और एक गहरी उसाँस भरता हुआ अपनी पत्नी के पास जा पहुँचा।

"यह सब तुम्हारी ही सलाह से हुआ है। अब हमारे पास कुछ भी बाकी नहीं

रह गया,'' पत्नी को कोसते हुए वह बोला। ''जो हो, अब हमें भी इन लोगों के साथ जाना होगा। दूसरा उपाय ही क्या है? हम सब लोग एक ही नाव में सवार हैं। अगर आसमान टूट पड़ा, तो सब लोग एक साथ तबाह हो जायेंगे!''

दो बड़े-बड़े दोगचे खलिहान में पहुँचा दिए गये और जल्दी ही गाँव के लोग और याङच्याछ्याओ के किसान मिलकर चावल की लपसी पकाने मे जुट गये। सुबह की धुँध का झीना आवरण हट चुका था। सूरज की सुनहरी किरणें खलिहान पर तिरछी पड़ रही थीं। खाने वालों के पीले-जर्द चेहरों में एक नई चमक पैदा हो गई थी। सोते के पूर्वी छोर पर, जहाँ पाट कुछ चौड़ा और पानी कुछ गहरा था, लोग खुशी से गाते हुए पाँच-छः नावों को पानी में उतार रहे थे। इन्हीं नावों पर बैठकर किसानों का जत्था कस्बे में जाने वाला था!

थुङपाओ चुपचाप जमीन पर बैठा था। उसकी आँखें अँगारे उगल रही थीं। देखते-देखते किसानों के जत्थे ने बड़े चाव से लपसी खाई और शोरगुल-मचाते हुए नावों में सवार होकर कस्बे की तरफ चल पड़े। यह सब थुङपाओ के लिए एक सपने की तरह था। उसने देखा, आत्वो भरपूर शक्ति से चप्पू चला रहा है। आसि एकदम उदास था और अपनी पत्नी और ल्यूपाओ के साथ एक ही नाव में बैठा था। दोनों स्त्रियाँ घुलमिलकर बातें कर रही थीं। नन्हा पाओ नाव के पिछले हिस्से में खड़ा अपने चाचा की नकल उतार रहा था।

थुङपाओ अचानक उठ खड़ा हुआ और सोते के तट पर तेजी से दौड़ता हुए आके पश्चिमी छोर पर जा पहुँचा। उसने ऐसा क्यों किया, वह नहीं जानता था। उसे लग रहा था जैसे किसी ने उसकी छाती पर कोई भारी पत्थर रख दिया हो। किसी से बात करके वह अपने मन का बोझ हल्का करना चाहता था। पर सारा गाँव एकदम वीरान-सुनसान हो गया था। कहीं कोई बच्चा भी नजर नहीं आ रहा था।

अन्त में जब वह फिर एक बार सोते के पूर्वी छोर पर लौट आया, तो उसने देखा कोई दूर से बेतहाशा तेज दौड़ता हुआ उसकी ओर आ रहा है। शुरू में थुङपाओ उसे बिल्कुल नहीं पहचान पाया। आगन्तुक के सफेद साफे के सिवाय उसे और कोई चीज साफ-साफ नजर नहीं आ रही थी। पर जब वह छोटा-सा पुल पार करने के बाद कुछ नजदीक आ गया, तो थुङपाओ ने उसे पहचान लिया। वह पुजारी ह्वाङ था। राहत की साँस लेता हुआ थुङपाओ बोला :

''इतने ज्यारा गुस्ताख तो 'लम्बे बाल वाले' भी नहीं थे। मैंने अपनी इतनी लम्बी उम्र कुत्ते की देह पर जिन्दगी बिताने वाले पिस्सू की तरह नहीं बिताई है! मैंने भी एक-दो बातें देखी-सुनी हैं! कान खोलकर सुन लो! उन लोगों को मेरी बात तब समझ में आएगी जब वे कस्बे में पहुँचेंगे! खूनी, लुटेरे कहीं के!''

पुजारी ह्वाङ रुक गया। वह पहली नजर में थुङपाओ को नहीं पहचान पाया।

पर आधे मिनट तक गौर से देखने के बाद पहचान गया और भर्त्सना के स्वर में बोला :

"उन लोगों का कोई धरम-ईमान नहीं है, बड़े भैया! कोई धरम-ईमान नहीं है! जानते हो, वे लोग मेरा मुर्गा भी चट कर गये हैं! उनका कोई धरम-ईमान नहीं है!"

"वे लोग हत्यारे हैं, हत्यारे! तुम सिर्फ मुर्गे की बात कह रहे हो। यह तो कुछ भी नहीं है। अब तो वे लोग आदमियो का गला काटने वाले है, आदमियों का! खूनी, कातिल कहीं के!" यह कहता हुआ थुङपाओ धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़ा।

उस रात सभी गाँववासी सुरक्षित लौट आए। हर आदमी आधा-आधा तओ चावल उठाए हुए था। यह देखकर थुङपाओ हैरान रह गया। उसे लगा, कस्बे के "शरीफजादे" अब पहले के "शरीफजादों" जैसे नही रहे। तीन छोटे-छोटे गाँवों के सौ किसानों के जत्थे ने जब कस्बे पर धावा बोला, तो शरीफजादे इतने घबरा गये कि उन्होंने किसानों से समझौता कर लिया और हर किसान को आधा तओ चावल थमा दिया। उसने सोचा : इन आधुनिक "शरीफजादों" में अब जरा भी दम नहीं रह गया। मालूम होता है उसकी इतनी लम्बी उम्र कुत्ते की देह पर जिन्दगी बिताने वाले पिस्सू की तरह व्यर्थ ही बीत गई है। वरना कस्बे के शरीफजादे उसकी भविष्यवाणी को इस तरह न झुठला देते। दुनिया सचमुच कितनी बदल गई है! अब तो आत्वो और उसके जैसे लोगों की बस चाँदी ही चाँदी है!

## 3

चावल-गोदामों पर हमले की वारदातें आँधी-तूफान की तरह बढ़ती गयीं। 200 ली तक के इलाके में भूखे किसान एक दर्जन से ज्यादा कस्बों में रोज ही "सार्वजनिक शान्ति भंग" कर रहे थे। इन कस्बों के शरीफजादों को किसानों का यह आचरण अत्यन्त अशिष्टतापूर्ण लग रहा था। उन्होंने दयालुता व दानशीलता का नकाब उतार फेंका और "व्यवस्था कायम करने" के लिए कुछ ठोस कदम उठाए। काउण्टी और जिले की सरकारों ने, यहाँ तक कि कस्बे के व्यापार-मण्डल ने भी, बड़े प्रभावशाली घोषणापत्र जारी किए, जिन्हें समूचे देहातों में प्रसारित किया गया : चावल के व्यापारियों और धनी लोगों के गोदामों पर धावे बोलना बन्द करो। सभी समस्याओं को शान्तिपूर्ण वार्ता के जरिए हल किया जा सकता है।... दूसरी तरफ कुछ "न्यायप्रिय शरीफजादों" ने आगे बढ़कर चावल के व्यापारियों और साहूकारों से अपील की कि वे लोग "कुछ घाटा उठाकर" भी "पीड़ित गरीब किसानों" को "कुछ विशेष रियायतें" दें और संकट दूर करने में उनकी मदद करें।

लेकिन भूखे किसानों के पास शरीफजादों और व्यापारियों की "विशेष रियायतों" की परिभाषा को समझने के लिए इन्तजार करने का वक्त नहीं था। इसलिए उनके

घोषणापत्र बिल्कुल बेकार साबित हुए। गाँव के मुखियों (जो आम तौर पर स्थानीय शरीफजादों के सशस्त्र "सुरक्षा दल" के भूतपूर्व नेता थे) की अपीलें भी व्यर्थ सिद्ध हुईं। धावे बोलना जारी रहा और धावा बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ती गई। किसानों के हर जत्थे में शामिल लोगों की संख्या भी सौ से बढ़कर पाँच सौ तक पहुँच गई, हजार तक पहुँच गई! अब तो वे आसपास के कस्बों से भी ज्यादा दूर के इलाकों में फैलते जा रहे थे। वे लोग "अभियान सेनाएँ" भी संगठित कर रहे थे, जो शहरों की तरफ कूच कर रही थीं!

थुङपाओ के गाँव से लगभग 60 ली दूर एक खुशहाल शहर में भूखे किसान पुलिस से भिड़ गये। चेतावनी के तौर पर पुलिस ने हवा में फायर किया और कुछ दर्जन प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार कर लिया। अगले दिन हजारों क्रुद्ध किसानों ने पूरे शहर को घेर लिया। बाहर की दुनिया से उसका सम्पर्क बिल्कुल टूट गया।

ऐसी स्थिति में उस शहर के सामने फौरन "विशेष रियायतें" देने के सिवाय ओर कोई चारा न रहा। तीन विशेष रियायतें दी गयीं : गल्ले के व्यापारियों से किसान अनाज उधार ले सकेंगे, जिसे फसल के समय पूरा का पूरा लौटाना होगा; साहूकार किसानों को ब्याज रहित ऋण देंगे; शहर का व्यापार-मण्डल गाँव के किसानों को 150 तान* चावल उपहार के रूप में देगा, जिसे गाँव का मुखिया गाँववासियों में बाँटेगा।... व्यापारियों और शरीफजादों को अच्छी तरह मालूम था कि इस खतरनाक स्थिति में खतरे की गम्भीरता को कम करने की भरपूर कोशिश करने के सिवाय उनके सामने और कोई चारा नहीं था। और यह चावल उपहार के रूप में देने से उन्हें जो घाटा होगा उसे शहर के निवासियों पर टैक्स लगाकर पूरा किया जा सकेगा।

इस बीच प्रान्तीय सरकार भी देहातों को जाने वाले मुख्य मार्गों पर सेना तैनात कर रही थी। इसकी वजह से और "विशेष रियायतों" की वजह से चावल-गोदामों पर धावा बोलने की वारदातों का बवण्डर धीरे-धीरे शान्त हो गया। अब चान्द्र पंचाँग का छठा महीना खत्म होने को था और खेतीबाड़ी का व्यस्त मौसम जल्दी ही आने वाला था।

इस बवंडर की बदौलत अब थुङपाओ का परिवार रोजाना एक बार चावल का भात और दो बार लपसी खाने लगा था। पर चावल खाने से उसके ऋण में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई थी, सिर्फ उन तीन तओ चावलों को छोड़कर जिन्हें आसि उधार लाया था। मगर जल्दी ही उन्हें धान की रोपनी शुरू करनी थी और आसि व उसकी पत्नी दोनों को डर था कि कहीं उनके परिवार का कर्जा बढ़ न जायें

इसलिए वे दोनों काम में जरा भी उत्साह नहीं दिखा रहे थे। यह देखकर थुङपाओ की झुँझलाहट और बढ़ गई। पिछले एक महीने में उसकी प्रतिष्ठा को भारी धक्का लग चुका था। पर अब धान रोपने का समय था, चावल-गोदामों पर धावा बोलने

* 1 तान=2.75 बुशल

का नहीं! वह अपने को खेतीबाड़ी के हुनर में माहिर समझता था, एक ऐसा जंगी घोड़ा समझता था जो हर परिस्थिति में रास्ता खोज सकता है। बेटे आसि और बहू को वह हर रोज यह बताता रहता था कि धान रोपने का काम कैसे किया जाना चाहिए। वह उन्हें बताता था कि अपनी जवानी के दिनों में वह कितना मेहनती था, किस तरह उसके पिता कभी निराश नहीं होते थे और तब तक जीतोड़ परिश्रम करते रहते थे जब तक परिवार के पालन-पोषण की पक्की गारण्टी न हो जाती।

एक दिन थुङपाओ खेत से लौटने पर बुलन्द आवाज में आसि से बोला :

"हम लोग कल या ज्यादा से ज्यादा परसों तक अपना धान रोप लेगें। तुमने अभी तक हिसाब क्यों नहीं लगाया कि खाद पर कितना खर्चा होगा? क्या तुम्हारी अक्ल पथरा गई है?"

"एक कट्टा रासयनिक खाद पिछले साल की बची हुई है," बेटे ने उदासीनता से उत्तर दिया।

थुङपाओ की आँखों से चिनगारियाँ बरसने लगीं। "रासायनिक खाद! वह तो जहर है जहर! एक ऐसा जहर, जिसे विदेशी दरिन्दों ने लोगों की जान लेने के लिए बनाया है! मैं तो सिर्फ सोयाबीन की खली की खाद को ही खाद समझता हूँ। वह किनती बढ़िया होती है, कितनी पौष्टिक होती है! रासायनिक पाउण्डर से तो जमीन का सत्यानाश हो जायेगा। कल हम लोग खली खरीदने जायेंगे!"

"लेकिन पैसे कहाँ से आयेंगे? लोग कहते हैं, ज्यादा दिन रखने से रासायनिक खाद की ताकत कम हो जाती है। उसे फिर से असरदार बनाने के लिए उसमें कम से कम आधी मात्रा में नया पाउडर मिलाना जरूरी है। लेकिन जैसी हालत हम लोगों की है उसमें यह सब सोचा भी नहीं जा सकता!"

"कैसी बेहूदा बात कह रहे हो?" थुङपाओ ने अपनी काँपती हुई उँगली बेटे की नाक के पास ले जाकर कहा। "तुम्हारा मतलब है, हमें अपने खेत में कुछ बोना ही नहीं चाहिए! अगर बोयेंगे नहीं, तो खायेंगे क्या? इतना कर्जा कैसे उतरेगा!"

आसि ने एक गहरी उसाँस भरी। वह जानता था, उसके पिता ठीक कह रहे थे। वे लोग खेती-बाड़ी से ही अपना खाना-कपड़ा जुटा सकते थे, कर्जा उतार सकते थे। लेकिन पिछले कुछ वर्षों के अनुभव से उसे यह अहसास होने लगा था कि जोतने-बोने के लिए कर्जा लेकर किसान अपने ही खेत में साहूकार का बैल बन जाता है—पर नहीं, यह उपमा भी काफी नहीं, क्योंकि बैल को कम से कम खाना तो भरपूर मिल जाता है, जबकि आसि के परिवार को भरपेट भोजन भी कभी-कभार ही नसीब हो पाता था। धान बोने से आखिर क्या फायदा?—उसकी पत्नी अक्सर कहा करती थी। दोनों ही महसूस करते थे कि आत्वो की यह बात सही है : "जो किसान कर्जा लेता है, वह तबाह हो जाता है!" चूँकि उनके लिए गुजारा चलाने का एकमात्र साधन खेतीबाड़ी ही थी, इसलिए पति-पत्नी ने यह फैसला कर लिया

था कि खेती के काम में लगाने के लिए वे लोग किसी भी हालत में एक भी दमड़ी उधार नहीं लेंगे।

बेटे की चुप्पी से थुङपाओ झुँझला उठा और बोला कि वह ''उन लोगों से तंग आ चुका है''। उसी दिन तीसरे पहर वह कस्बे में जा पहुँचा और आसि के ससुर और छोटे छन बाबू से मिला। दोनों के सामने उसने अपने बेटों की शिकायत की और बताया कि वे किस तरह उसके "परिवार को तबाह कर रहे हैं।" दोनों ने थुङपाओ को सलाह दी कि उसे छोटी-छोटी बातों को ज्यादा महत्व नहीं देना चाहिए—लड़कों की अपनी भी जिन्दगी होती है। थुङपाओ ने रात कस्बे में ही बिताई। अगले दिन सुबह-सबेरे ही वह कुछ पैसे उधार माँगने छोटे छन बाबू के पास जा पहुँचा। रकम ज्यादा बड़ी नहीं थी—सिर्फ उतनी ही थी जिससे सोयाबीन की खली का एक टुकड़ा खरीदा जा सकता था। छोटा छन बाबू सुबह ही अफीम के कश लगा चुका था और उसकी आँखों में नींद समाई हुई थी। पर जब उसने देखा कि थुङपाओ की माँग को टालना मुश्किल है, तो खली की दुकान पर चला गया और अपनी जमानत पर उसे खली उधार दिला दी।

खली उठाकर थुङपाओं खुशी-खुशी घर लौट गया। खली को ड्योरी पर रखकर वह अपने बेटे और बहू से गम्भीर मुद्रा में बोला :

"जब तक मेरी हड्डियों में दम है, तुम्हें मेरी बात माननी होगी। यह पूछने की जरूरत नहीं कि मैं पैसे कहाँ से लाया हूँ। चुपचाप अपना- अपना काम करते जाओ!

धान के खेतों कोमल-कोमल अँकुर फूट रहे थे। थुङपाओ के सठियाए हुए जिद्दी दिमाग में वे सभी भ्रम फिर से जाग उठे जो रेशम के कीड़े पालने के मौसम में पैदा हुए थे। सूरज की सुनहरी किरणों में नहाकर और मन्द-मन्द समीर का कोमल स्पर्श पाकर धान की नई पौध तेजी से पनपती जा रही थी। लगता था जैसे कोई बूटों को ऊपर की तरफ खींच रहा है। पर गाँव का सोता सूखता जा रहा था और धान के खेतों में पानी देने के लिए तट पर रहट लगाना अनिवार्य हो गया था। आसि अपना रहट आखिर कब तक अकेला ही चलाता रहता! थुङपाओ उसे कुछ आराम देना चाहता था। इसलिए उसने पाली बदल ली। लेकिन कुछ ही समय बाद उसका दम फूलने लगा, कमर अकड़ गयी और पैरों में दर्द होने लगा। मजबूर होकर उसे रहट से उतरना पड़ा और अपनी जगह बहू को देनी पड़ी।

धान के पौधे तेजी से बढ़ते जा रहे थे और खेत के पानी को तेजी से सोखते जा रहे थे। दूसरी तरफ सूरज भी आग के ड्रेगन की तरह गाँव के सोते का पानी पीता जा रहा था। सोते का जल-स्तर लगातार घटता जा रहा था। पूरे गाँव में सभी जगह "मदद चाहिए!" की पुकार सुनाई दे रही थी। हर जगह रहट पर पाली बदलने के लिए आदमियों की जरूरत थी। होह्वा और उसके पति ने, जो बिल्कुल गुमसुम रहता था और बेहद रूखा आदमी था, सिर्फ थोड़ी-सी जमीन पर अनाज उगा रखा था।

इसलिए वे दोनों खाली थे। लोग यह भूल गये थे कि होह्वा एक "डायन" है। जहाँ कहीं भी रहट चल रहे थे, होह्वा और उसके पति की भारी माँग थी। नौजवान पड़ोसी लू फूछिङ उस साल अपनी पट्टे की जमीन वापस कर चुका था। इसलिए अपनी बहिन को साथ लेकर अक्सर थुङपाओ के रहट पर हाथ बटाने पहुँच जाता था। आत्वो गाँव में बहुत कम दिखाई देता था और जब आता था तो अपने परिवार की जगह अन्य परिवारों की मदद करने जा पहुँचता था, क्योंकि उसका पिता कह चुका था कि वह उसका मुँह नहीं देखना चाहता ।

हर रोज सुबह आसमान बिल्कुल साफ और नीला दिखाई देता, तो किसानों का दिल बैठ जाता। और साँझ के समय अगर सफेद बादल के एक-दो टुकड़े दिखाई देते, तो सारे गाँव में खुशी की लहर दौड़ जाती। बूढ़ी औरतें टकटकी लगाकर आकाश का निहारने लगतीं और हाथ जोड़कर भगवान से विनती करने लगतीं। पर उनकी खुशी क्षणिक सिद्ध होती। एक महीने तक एक भी बूँद पानी नहीं पड़ा।

थुङपाओ का धान का खेत जरा ऊँचाई पर था, इसलिए उसकी सिंचाई करना खास तौर पर मुश्किल था। कोई सत्तर फुट लम्बी कूल के जरिए सोते के गदले पानी को बड़ी कोशिश से उस तरफ धकेलना पड़ता था। खेत में पहुँचने से पहले ही आधे पानी को आसपास की सूखी जमीन सोख लेती। धान के पौधे, जो शुरू में बहुत हरेभरे थे, पीले-जर्द पड़ते जा रहे थे। तेज धूप में वे और भी ज्यादा पीले पड़ते जा रहे थे और मुरझाते जा रहे थे। उन्हें देखकर थुङपाओ को बड़ी तकलीफ हो रही थीं पर पाँव पटककर निराशा व्यक्त करने के सिवाय वह कर ही क्या सकता था। आसि की स्थिति भी बड़ दयनीय थी। किन्तु वह मौन था। बहू बोलती जा रही थी—उसकी बातों मे तीखापन था, चुभन थी। उसने भविष्यवाणी की कि इस साल की फसल बिलकुल चौपट हो जायेगी, उसे बचाने की सारी कोशिशें व्यर्थ साबित होंगी। खली की खाद खरीदने के लिए नया कर्ज लेने की बात से उसे बड़ा धक्का लगा था।

"अगर सिर्फ पानी का बन्दोबस्त हो जाये, तो अब भी शानदार फसल काटी जा सकती है," थुङपाओ ने धीमी-सी आवाज में कहा। बहू की बातें सुनना उसके लिए अब बरदाश्त के बाहर होता जा रहा था।

"जब देखो तब पानी ही पानी की रट लगाए रहते हो! ससुर की बात काटकर बहू बोली। "तुम्हारे लिए पानी हमारे खून से भी ज्यादा कीमती है! लू फूछिड़ और उसकी बहिन आधा दिन काम कर रहे हैं। दोनों को एक आदमी माना जाये, तो हम तीन आदमी रहट पर जुटे हैं। तन आदमियों के शरीर से तुम आखिर कितना खून निकाल सकते हो? इस महीने रहट ने हमारा सारा खून चूस लिया है! आत्वो नौजवान है, तन्दुरुस्त है। पर तुम उसे पास नहीं फटकने देते !"

"हाँ, यह ठीक तो कहती है। आत्वो को बुला क्यों न लिया जाये ?"आसि ने

सहमति व्यक्त की। "मेहनत-मशक्कत करने में वह बैल से कम नहीं है!"

थुङपाओ ने कोई उत्तर नहीं दिया। केवल थूककर रोष प्रकट किया।

अगले दिन आत्वो मुस्कराता हुआ रहट पर मदद करने जा पहुँचा। पर तब तक पानी की मात्रा काफी कम हो चुकी थी। सोते के बीचोंबीच सिर्फ एक पतली-सी धारा बाकी रह गई थी। वहाँ तक पहुँचने के लिए लोगों को रहट के कुण्डों की तीन लड़ियाँ जोड़नी पड़ रही थीं। कुछ ही घण्टों में पानी का स्तर इतना गिर गया कि आत्वो भी अपने बैल जैसे हट्टेकट्टे शरीर से धान के खेत में पानी न पहुँचा पाया। पश्चिम की तरफ कोई बीस गज दूर पानी कुछ गहरा था—आत्वो की कमर तक आता था। लेकिन वहाँ तटबँध नहीं था, जिसपर रहट को टिकाया जा सके। अगर एक रात और बारिश न हुई, तो थुङपाओ की सारी धान की खेती चौपट हो जायेगी।

पानी का संकट केवल थुङपाओ के परिवार के सामने न था। गाँव के सभी किसानों के धान के पौधे सूखते जा रहे थे और जमीन कछुए की पुरानी खाल की तरह फटती जा रही थी। लोग ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर चढ़कर दूर तक देखने की कोशिश कर रहे थे। नीले आकाश के विशद विस्तार में बादल का कहीं नामोनिशान भी न था।

अब एकमात्र उपाय यह रह गया था कि कस्बे से "विदेशी पम्प" किराये पर लाया जाये। पर विदेशी शब्द सुनते ही थुङपाओ नाक-भौं सिकोड़ने लगता था। वह नहीं समझता था कि इस पम्प से कोई खास फायदा होगा। पिछले वर्ष बाढ़ आने पर पड़ोस के एक गाँव के किसान बाढ़ग्रस्त खेतों से पानी निकालने के लिए यह पम्प किराए पर लाए थे। उसने खुद इसे पानी निकालते कभी नहीं देखा था। लेकिन पुजारी ह्वाङ, जिसे दूसरे के मामलों में दखल देने में मजा आता था, इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा कर चुका था। पर तब सिर्फ पानी की निकासी का मामला था। क्या यह पानी खींचने में भी—वह भी कई सौ गज दूर तक—उतना ही कारगर साबित हो सकेगा? इससे पहले कि थुङपाओ उसके बारे में सन्देह व्यक्त करता, बहू बिल्कुल रूखे स्वर में बोल पड़ी :

"विदेशी पम्प अच्छा तो है, पर उसका भाड़ा कौन देगा? हम लोगों के पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है! सुना है, धान के खेत एक हिस्से की सिंचाई के लिए एक य्वान किराया लगता है!"

थुङपाओ बड़े असमंजस में पड़ गया। गाँव के बाहर छोटी-सी पुलिया के पास धन के देवता के टूटे-फूटे मन्दिर में जाकर वह देवमूर्ति के सामने साष्टाँग लेट गया और विनती करने लगा : "हे भगवान, हम पर कृपा करो! हे दयानिधान, अपनी शक्ति दिखा दो! हे ईश्वर, आज कुछ पानी बरसा दो!" उसने मनौती मनाई कि अगर उसकी मनोकामना पूरी हो गई तो वह देवता के चरणों में कोई बड़ी भेंट

चढ़ाएगा।

उस रात रहट के लिए पानी की एक भी बूँद बाकी नहीं रह गई थी। इसलिए थुङ्पाओ का परिवार अगले दिन सुबह तक सोता रहा। थुङ्पाओ एक क्षण के लिए भी न सो सका। सहसा बाहर से रिमझिम की सी आवाज आई। उसने सोचा, पानी बरसने लगा है। वह बिस्तर से नीचे कूद पड़ा और ड्योढ़ी में जा पहुँचा। बाहर पानी नहीं बरस रहा था, हालाँकि आसमान में भूरे रंग के बादल छाए हुए थे। उसे बड़ी मायूसी हुई। पर आशा की किरण अभी पूरी तरह लुप्त नहीं हुई थी। घुटनों के बल बैठकर उसने भगवान से फिर एक बार प्रार्थना की। जब वह तीसरी बार बिस्तर छोड़कर आसमान को देखने गया, तो पौ फट चुकी थी और पूरब में रोशनी फैल चुकी थी। तेजी से कदम बढ़ाता हुआ वह अपने खेत में जा पहुँचा और धान के मूल्यवान पौधों को देखने लगा। रात में कुछ ओस पड़ी थी। कल के निष्ठुर सूरज की रोशनी में झुलसे हुए पौधे आज पहले से कुछ अधिक मजबूत दिखाई दे रहे थे। पर जमीन में जगह-जगह दरारें पड़ गई थीं। दरारों के बीच उँगली से नीचे तक छूने पर नरम मिट्टी कहीं नजर नहीं आ रही थी। थुङ्पाओ का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। वह जानता था कि कुछ ही देर में सूरज फिर आग उगलने लगेगा और धान की पौध बिल्कुल झुलस जायेगी। इस तरह उसका पूरा परिवार तबाह हो जायेगा।

थुङ्पाओ अपने घर के ठीक सामने के खलिहान में लौट गया। पूरब में लहू जैसा लाल सूरज क्षितिज से ऊपर उठ रहा था। सोते में जो थोड़ा-बहुत पानी रह गया था उसे खरपतवार ने सोख लिया। कुछ लोगों ने सोते के किनारे खुली जमीन पर मकई उगाई हुई थी। मकई के पौधे आदमकद हो गये थे। वहाँ पाँच-छः लोग खड़े थे और आपस में जोर-जोर से बहस कर रहे थे। थुङ्पाओ अनायास ही उनके पास जा पहुँचा। वे लोग सोच रहे थे कि साँझा करके "विदेशी" पम्प किराए पर लाया जाये या नहीं। ली, जिसे गाँव वाले मजाक में 'तेंदुआ ली' के नाम से पुकारते थे, जोर देकर कह रहा था :

"अगर पम्प किराए पर लाना है, तो देर न करो। उसकी माँग बहुत है। सुना है, कल रात तक उसे आज के लिए किसी ने बुक नहीं कराया था। अगर हम लोग जल्दी न पहुँचे, तो कोई और उठा ले जायेगा। तब हमारे सामने कोई उपाय नहीं रह जायेगा। थुङ्पाओ काका, क्या तुम भी हमारे साथ साँझा करना चाहते हो?"

थुङ्पाओ आँखें फाड़कर सामने की ओर देखता रहा, मानो 'तेंदुए ली' की बात उसकी समझ में न आई हो। दो बातें ऐसी थी, जिनके कारण वह उत्तर नहीं दे पा रहा था। पहली बात यह थी कि "विदेशी" पम्प की सामर्थ्य के बारे में उसे सन्देह था; दूसरी बात यह थी कि उसके पास पैसे बिल्कुल नहीं रह गये थे। उसने सोचा, पहले दूसरे लोगों को पम्प इस्तेमाल करने देना ज्यादा उचित होगा। अगर वह सचमुच कारगर साबित हुआ, तो बाद में वह खुद भी इस्तेमाल करेगा। जहाँ तक पैसों का

सवाल था, चन्द रोज के लिए कुछ पैसे उधार लेना मुश्किल न था।

उस दिन सबेरे से ही थुङ्पाओ और उसके परिवार के लोग धान के खेत में चक्कर लगाने लगे, मानो किसी मरणासन्न रोगी की बड़ी सावधानी से सेवाटहल कर रहे हों। धान के पौधों की हालत लगातार बद से बदतर होती जा रही थी। पहले उनके सिर नीचे की तरफ लटक गये और फिर तने से मुड़कर पूरे के पूरे पौधे जमीन पर झुक गये। धरती पर दरारें पड़ गई थीं और वह उसाँसें भर रही थी। गाँववासी बेकार हो गये थे। सोते का पानी छिछला होता जा रहा था। रहट निष्क्रिय हो गये थे। थोड़े से किसान गाँव के बाहर पुलिया पर खड़े बड़ी उत्सुकता से "विदेशी" पम्प की बाट जोह रहे थे—मानो किसी रोगी को बचाने के लिए डाक्टर की प्रतीक्षा कर रहे हों!

दोपहर होने को थी। दिनकर की प्रचण्ड किरणें आग उगल रही थीं। सहसा पुलिया पर खड़े लोग जोर से चिल्लाए : पम्प आ गया है!... नहर में एक छोटी-सी नाव उनकी ओर आती नजर आई। उस पर एक इंजन लगा था—वही "विदेशी" पम्प था! देखने में वह अधिक प्रभावशाली नहीं जान पड़ता था। पर लोगों का कहना था कि वह अकेला ही सात-आठ हट्टेकट्टे जवानों से ज्यादा पानी खींच सकता है। लगभग सारा गाँव वहाँ आ पहुँचा। भीड़ में थुङ्पाओ और उसके दोनों बेटे भी थे। नाव नहर में ही खड़ी रही। आदमी की बाँह के बराबर मोटी, बीसियों गज लम्बी पाइप को खोलकर उसका एक सिरा धान के खेत की मेड़ तक पहुँचा दिया गया।

"पानी वहाँ खुद-ब-खुद पहुँच जायेगा और खेतों की सिंचाई कर देगा!" कस्बे से आए पम्प-आपरेटर ने बड़े नाटकीय अन्दाज से ऐलान किया।

नाव में लगा इंजन शीघ्र ही दमे के पुराने मरीज की तरह हाँफने लगा और पानी रबड़ की पाइप के बीच से पहले झटके के साथ और फिर व्यवस्थित रूप से बहने लगा। किसान खुशी से नाच उठे और भूल गये कि इस पानी के लिए उन्हें पैसे भी देने होंगे।

थुङ्पाओ एक तरफ खड़ा आँखें फाड़-फाड़ कर यह सब देख रहा था। उसे पक्का यकीन था कि पम्प के शोर करने वाले इंजन में और लम्बी सर्पाकार पाइप में जरूर कोई प्रेत-पिशाच छिपा है। शायद वह गाँव के वसुन्धरा के मन्दिर के सामने के सँकरे तालाब में रहने वाला कीचमत्स्य प्रेत हो। पाइप से निकलने वाला पानी कहीं उस प्रेत की राल न हो और रात में वह प्रेत अपनी सारी राल फिर से न पी जायें अगर यह सच हुआ, तो कस्बे का वह आदमी कल फिर आएगा और गाँव वालों से कुछ पैसे और ऐंठ ले जायेगा!

लेकिन सिंचाई-क्षेत्र के विस्तार के सामने उसकी एक भी आशंका न टिक पाई। जब पम्प धान के खेत के दूसरे हिस्से में पानी देने का काम पूरा कर चुका, तो थुङ्पाओ ने फैसला कर लिया कि वह इस यंत्रचालित कीचमत्स्य प्रेत की सेवाओं

को अपने खेत में भी इस्तेमाल करेगा। हाथ में कुदाली उठाकर वह रातभर पहरा देगा, जिससे यह प्रेत रात के अँधियारे में कहीं चुपचाप अपनी राल को फिर न पी जाये!

आसि और बहू से सलाह-मशविरा किए बिना ही उसने 'तेंदुए ली' और पुजारी ह्वाङ की जमानत पर पम्प-आपरेटर को वचन दे दिया कि वह फसल के बाद भाड़े के आठ य्वान और बीस प्रतिशत प्रति मास के हिसाब से ब्याज अवश्य चुका देगा। बात पक्की होने पर पाइप का एक सिरा उसके खेत में भी लगा दिया गया।

सूरज डूबने तक थुङपाओ के धान के खेत में एक इंच गहरा पानी भर चुका था। हवा के झोंके से पानी में किसी बूढ़ी स्त्री के चेहरे की झुर्रियों की तरह हल्की-हल्की तरंगें उठ रही थीं। थुङपाओ बहुत खुश था। बहू ने शिकायत की, "अच्छा, तो हम पर आठ य्वान का कर्जा और चढ़ गया है!" पर थुङपाओ ने बिल्कुल अनसुनी कर दी। यों आठ य्वान की रकम-कोई छोटी रकम न थी। पर फसल कटने पर क्या उन्हें एक तान चावल के बदले कम से कम दस य्वान नहीं मिल सकेंगे? पिछले साल घटिया किस्म का चावल भी साढ़े ग्यारह य्वान के हिसाब से बिका था! थुङपाओ फिर एक बार कल्पना के महल खड़े करने लगा।

लेकिन आसि अब भी बड़ी मायूसी से अपने धान के खेत को एकटक देख रहा था। पानी मिलने के बाद भी पौधे मुरझाए पड़े थे। समय हाथ से निकलता जा रहा था। कोमल अंकुर सूरज के ताप में झुलसकर निष्प्राण हो चुके थे।

"आज रात अगर कुछ रासायनिक खाद डाल दी जाये, तो कल तक सब ठीक हो जायेगा," आत्वो ने सुझाव दिया।

इस अप्रत्याशित सुझाव से आसि उछल पड़ा। यह ठीक है, उसने सोचा। एक कट्टा रासायनिक खाद उसके पास अब भी पड़ी है। उसे इस्तेमाल करने का इससे अच्छा मौका और क्या हो सकता है? क्या इससे जमीन खराब हो जायेगी? ऐसी क्या बात है? तो उसे इस्तेमाल क्यों न कर लिया जाये!

पर ज्यों ही आत्वो के शब्द थुङपाओ के कानों में पड़े, वह बेटे पर भूखे शेर की तरह झपट पड़ा।

"अरे ओ 'लम्बे बाल वालों' की औलाद! अरे ओ हत्यारे! क्या तू इतना भी नहीं जानता कि यह जहर है? क्या तू जहर फैलाने पर आमादा है?"

थुङपाओ को शान्त करने के लिए कई लोगों को हस्तक्षेप करना पड़ा। रासायनिक खाद इस्तेमाल करने की बात वहीं खत्म हो गई।

"कल सुबह तक धान के पौधे बिल्कुल तरोताजा हो जायेंगे," थुङपाओ आसि से बोला। वह अभी पूरी तरह शान्त नहीं हुआ था। "रासायनिक खाद को तुम लोग न जाने क्या समझते हो! वह तो जहर है, जहर!"

थुङपाओ ने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि उस रात वह जान पर खेलकर

भी अपने खेत की रक्षा करेगा। अब उसके मन में न सिर्फ कीचमत्स्य प्रेत का बल्कि अपने दोनों बेटों का भय भी समाया हुआ था। उसे आशँका थी कि जब वह सो जायेगा तो उसके बेटे कहीं चुपचाप खेत में जाकर रासयनिक पाउडर न छिड़क दें। सबसे ज्यादा चिन्ता उसे कीचमत्स्य प्रेत की थी। पर अपना "तंत्रज्ञान" वह जाहिर नहीं होने देना चाहता था। इसलिए उसने सिर्फ यह ऐलान किया कि वह आत्वो और आसि के सम्भावित षड्यंत्र से अपने धान के खेत को बचाने में पीछे नहीं रहेगा। थुङ्पाओ दरअसल एक बहुत जिद्दी किस्म का आदमी था!

वह रात शान्तिपूर्वक बीत गई। न तो कीचमत्स्य प्रेत प्रकट हुआ और न रासायनिक खाद के समर्थक उसके बेटे ही नजर आए। लेकिन धान के पौधे अब भी मुरझाए पड़े थे। कुछ पौधों की हालत तो एक दिन पहले से भी बदतर हो गई थी। इसलिए थुङ्पाओ को कीचमत्स्य प्रेत की राल की शक्ति पर सन्देह होने लगा। लेकिन दूसरे लोगों के जिन खेतों की सिंचाई पम्प द्वारा की गई थी, उनमें धान के पौधे हरेभरे और मजबूत हो गये थे। बहू बौखलाकर बोली : "बाबा की तो अक्ल ही सठिया गई है! हम सबको जिन्दा ही कब्र में पहुँचा देना चाहते हैं!" चिन्ता के मारे थुङ्पाओ का चेहरा कलेजी की तरह स्याह पड़ गया। नौजवान पड़ोसी लू फ़ूछिङ ने अनुरोध किया, रासायनिक खाद को कम से कम एक बार तो अवश्य आजमा लो, शायद कुछ फायदा हो जायें पर थुङ्पाओ काठ के पुतले की तरह बिल्कुल मौन बैठा रहा। इस बीच उसके दोनों बेटे खेत में रासायनिक खाद डालने जा पहुँचे। थुङ्पाओ ने आँखें फेर लीं। वह खुद यह सब नहीं देखना चाहता था।

भाग्यवश अगले दो दिन आसमान में घटाटोप बादल छाए रहे। चिलचिलाती धूप से खेतों की रक्षा करने में उन्होंने पर्दे की भूमिका अदा की। धान के खेतों में आधा इंच पानी अभी बाकी था। पौधे फिर एक बार हरेभरे हो गये। थुङ्पाओ इसका श्रेय रासायनिक खाद का देने के लिए तैयार न था। फिर भी उसने यह कहना छोड़ दिया कि रासायनिक खाद कोई जहरीली चीज है। बादल छँटने से पहले एक अच्छी बारिश हो गई। फिर कुछ दिनों तक धूप खिली रही। धान के पौधे पनपते गये। किसानों ने राहत की साँस ली। उनकी जिन्दगी बच गई थी। भगवान ने उनकी सुन ली थी!

कोई चालीन दिन से ज्यादा समय तक सख्त गरमी पड़ती रही। यह एक दुःस्वप्न था, जो शरद की शीतल, स्फूर्तिदायी बयार के स्पर्शमात्र से समाप्त हो गया। गाँववासी बहुत खुश थे। वे पिछले अनुभव के आधार पर कह सकते थे कि इस वर्ष फसल बुरी नहीं होगी। थुङ्पाओ को अब पक्का यकीन हो गया था कि उसकी इतनी लम्बी उम्र कुत्ते की देह पर जिन्दगी बिताने वाले पिस्सू की तरह व्यर्थ नहीं बीत गई। अब वह भविष्यवाणी कर सकता था कि उसका परिवार प्रति मू चार तान चावल पैदा कर सकेगा। यह एक भरपूर फसल कहलाएगी! धान की मोटी-मोटी

बालियों को सावधानी से सहलाता हुआ वह कभी-कभी प्रति मू पाँच तान चावल पैदा करने की कल्पना भी करने लगता। हर दाना उसे मुकम्मिल और ठोस मालूम हो रहा था!

वह हिसाब लगाने लगा : अगर प्रति मू साढ़े चार तान भी पैदा हुआ, तो भी चालीस तान से कम चावल पैदा नहीं होगा। लगभग सात तान चावल लगान के तौर पर अदा करने के बाद भी दस य्वान प्रति तान के हिसाब से उसके परिवार को 300 य्वान से ज्यादा आमदनी होगी। इस रकम से वह अपना आधा कर्जा अवश्य चुका सकेगा। हो सकता है, दस य्वान प्रति तान से कुछ ज्यादा ही कीमत मि जायें जो हो, कम से कम इतना तो मिल ही जायेगा!

सिर्फ एक फसल अच्छी होने से ही किसानों की हालत सुधरने की सम्भावना पैदा हो गई थी। आखिर भगवान के भी आँखें थीं! वह जानता था कि उसकी दयादृष्टि के लिए सुपात्र कौन हैं।

लेकिन कस्बे के व्यापारीयों के भी आँखें थीं। वे जानते थे कि मुनाफा कैसे कमाया जाता है। अभी फसल कटी भी न थी कि मण्डी में चावल के भाव गिर गये। जब किसानों ने महीनों के कमरतोड़ परिश्रम के फल को बोरियों में भरा, तो भाव गिरकर सिर्फ छः य्वान रह गया। और जब किसान धान कूटने के कठिन काम में दिन-रात जुटे हुए थे, तो घटिया चावल का भाव गिरकर सिर्फ चार य्वान रह गया। घटिया चावल छाँटने के बाद जब वे लोग कस्बे में पहुँचे, तो तीन य्वान देने वाला खरीदार ढूँढ़ना भी मुश्किल हो गया! पीड़ित किसानों की तरफ उपेक्षा से देखते हुए अनाज व्यापारी उदासीनता से बोले :

"यह आज का भाव है। कल तक दाम इससे भी नीचे गिरे सकते हैं!"

खूँखार साहूकार टिड्डीदलों की तरह गाँव में आ पहुँचे। चावल के रूप में भुगतान मंजूर है? ठीक है—घटिया चावल का भाव 2 य्वान 90 फन*, सफेद चावल का भाव 3 य्वान 60 फन!

थुङपाओ का व्यामोह साबुन के बुलबुले की तरह भंग हो गया। गाँववासी छाती पीटने लगे और अपने भाग्य को कोसने लगे।

आसि की पत्नी गुस्से में भरकर लोगों को कहती फिर रही थी : "खेती बाड़ी में क्या धरा है? इतनी जान खपाई, पर नजीजा क्या निकला? अब भी कर्जे के बोझ से लदे हैं!"

रेशम के कीड़े पालने के बाद थुङपाओ को जो कटु अनुभव हुआ था उसने उसके स्वास्थ्य को भारी आघात पहुँचाया था। और अब धान की फसल काटने के बाद उसे जो कटु अनुभव हुआ उसने तो उसके प्राण ही ले लिए। दम तोड़ने से पहले उसकी आवाज बन्द हो गई थी, पर आँखें खुली थीं। उसने आत्वो की तरफ

* एक य्वान का सौवाँ भाग।

देखा, मानो कहना चाहता हो :

"तुम ठीक कहते थे, बेटा! कितने अचम्भे की बात है! कौन जानता था कि ऐसा भी हो सकता है!"

जनवरी 1933

# जाड़ों की तबाही

## 1

पिछले कई दिनों के उत्तर-पश्चिम की तरफ से तेज सर्द हवाएँ चल रही थीं। पेड़-पौधों की रही-सही पत्तियाँ भी झाड़ चुकी थीं। गाँव के सोते से किनारे-किनारे सारी घास सूखकर पहले सुनहरी और फिर मटमैली हो चुकी थी। और जहाँ-जहाँ शैतान बच्चों ने आग जलाई थी, वहाँ की घास झुलसकर बिल्कुल काली पड़ गई थी।

जिस दिन आसमान साफ होता, उस दिन या तो गाँव का कोई दुबला-पतला कमजोर कुत्ता खलिहान में धूप सेंकता नजर आता अथवा इक्का-दुक्का किसान शरद के हल्के लिबास में धूप में बैठ जूँ निकाल रहा होता। पर जिस दिन आसमान में घटाटोप बादल छा जाते, उत्तर-पश्चिम की तरफ से चलने वाली सर्द हवाओं से टकरा कर पेड़ों की शाखें चरमराने लगतीं और बादलों के झुण्ड उन्मत्त जंगली घोड़ों की तरह आसमान के इस छोर से उस छोर तक उमड़ने लगते, उस दिन खलिहान में जीवन का कोई चिन्ह न दिखाई देता। जान पड़ता, सारा गाँव मर चुका है। चारों तरफ मरघट का सा वातावरण छा जाता।

हरियाली के नाम पर गाँव के उत्तर में सिर्फ एक स्थान बाकी रह गया था और वह था चाङ परिवार का कब्रिस्तान। उस उसका पुश्तैनी कब्रिस्तान था। वहाँ चीड़ और देवदार के बहुत ऊँचे-ऊँचे पेड़ खड़े थे। लेकिन चाङ परिवार अब कस्बे में जा बसा था।

यह कब्रिस्तान गाँवावासियों के लिए एक अभिशाप था। जब कभी कोई उसके किसी पेड़ को काट लेता या चुरा लेता, तो चाङ सारे गाँव से मुआवजे की माँग करता—भले ही पेड़ चुराने वाला किसी दूसरी जगह से आया हो, जैसा कि अक्सर होता था।

एक दिन सुबह के समय, जब सूरज की किरणें बिल्कुल निस्तेज थीं और पेड़-पौधों की नंगी शाखें उत्तर-पश्चिम से आने वाली सर्द हवा के थपेड़ों को न सह सकने के कारण चीत्कार कर रही थीं, तब गाँव के लोग खलिहान में एकत्रित हो गये। होह्वा, जिसे गाँव के बहुत से लोग 'डायन' कहकर दुतकारा करते थे, एकत्रित जन-समुदाय

को बड़े नाटकीय ढंग से बता रही थी :

"मैं वहाँ से सिर्फ गुजर ही रही थी। देखा तो दंग रह गई। एक और पेड़ गायब हो गया था! लकड़ी की छोटी-छोटी खपचियाँ चारों तरफ बिखरी हुई थीं। उनसे सौंधी-सौंधी गन्ध आ रही थी—चोरों ने जरूर उसे आज सुबह ही काटा होगा। वह पेड़ भी बहुत मोटा था। इतना मोटा!" यह कहते हुए वह अपने दोनों हाथ फैलाकर पेड़ की मोटाई बताने की कोशिश करने लगी।

सुनने वालों की भौंहें तन गयीं। वे उसाँसें भरने लगे। "चाङ को तुरत खबर कर देनी चाहिए," एक आदमी बोला।

"किसलिए?" दूसरा आदमी बोला। "यह न समझो कि अगर हम उसे बता देंगे, तो वह मक्खीचूस बुड्ढा हमें यों ही छोड़ देगा!"

होह्ला के नीरस पति ने हामी भरी। "यह बला जितने दिन टली रहे, उतना ही अच्छा! कुछ रोज इन्तजार कर लिया जायें देखें, खुद पता लगने पर वह क्या करता है!"

ताज्जुब की बात यह थी कि होह्ला ने सबसे आगे बढ़कर पति से असहमति प्रकट की। बोली : "क्या कहा? इन्तजार कर लिया जाये? क्या तुम समझते हो, तब हमारे पास उसे देने के लिए पैसे हो जायेंगे? अगर हो भी जायें, तब भी मैं नहीं समझती कि उसे एक भी दमड़ी दी जाये! हम लोग उसका दिया खाना थोड़े ही खा रहे हैं, उसके पैसों से थोड़े ही पल रहे हैं! उसके परिवार के कब्रिस्तान के पेड़ों से हमारा क्या वास्ता?"

"महज दलीलों से उसे कौन समझा सकता है!" आसि बोल पड़ा। "पिछले साल 'तेंदुए ली' से उसकी तूतू-मैंमैं हो गई थी। बस, इतनी सी बात पर उसने ली को जेल भिजवा दिया था!"

"ये कमीने पेड़-चोर हमें तबाह करने का आमादा हैं!" आसि की पत्नी बोली। उसकी आँखों में आँसू थे। वह होह्ला के पति की राय से सहमत थी।

बाकी लोगों ने भी पेड़-चोरों की जी भर कोसा। उन्हें मालूम था कि यह अपराध उन गरीब किसानों ने किया है जो गाँव से कुछ ही दूर मिट्टी के घरौंदों की बस्ती में रहते हैं। वे लोगे धनलोलुप चाङ के अत्याचारों से बहुत पीड़ित थे। शायद उससे बदला लेने के लिए ही उन्होंने उसका पेड़ चुरा लिया था। पर उनकी इस कार्यवाही से दूसरे लोग मुसीबत में पड़ गये थे। किसी ने सुझाव दिया, बस्ती में जाकर "चोरी के माल" को बरामद क्यों न कर लाया जायें

आत्वो, जो अब तक बिल्कुल मौन था, अपने को नहीं रोक पाया। बोला :

"बरामद कर लिया जाये? कैसे बात कर रहा है! क्या तू मक्खीचूस चाङ की सड़ियल औलाद है जो उसके लिए पसीना बहाने की सोच रहा है?"

"इतना गुस्सा क्यों दिखा रहा है, आत्वो?" सुझाव देने वाले ने उत्तर दिया।

"तूने थोड़े ही पेड़ चुराया है जो तैश खा रहा है?"

होह्वा के पति ने आत्वो को पीछे खींच लिया। "हम लोग तो सिर्फ बात कर रहे हैं," उसे शान्त करते हुए उसने कहा। "पेड़ बरामद करने कौन जा रहा है? अपने गुस्से को जरा काबू में रखो।"

"बात ऐसी नहीं है! जो लोग पेड़ काट ले गये, उनका इरादा हमें नुकसान पहुँचाना थोड़े ही था! मक्खीचूस चाङ हमसे कीमत वसूल करने की कोशिश इसलिए करता है क्योंकि वह कुत्ते का बच्चा है! उसका मनहूस पेड़ करके हम उसकी मदद क्यों करें? वह हमारा कौन लगता है?..."

आत्वो को उसका बड़ा भाई खींचकर घर ले गया।

मीटिंग बरखास्त हो गई और दुष्ट चाङ को कोसते हुए सब लोग अपने-अपने घर लौट गये। सिर्फ होह्वा और आसि की पत्नी खलिहान में रह गयीं। कब्रिस्तान की हरीभरी भूमि की तरफ दोनों खोई-खोई नजरों से देख रही थीं। अचानक ऐसा लगा जैसे किसी ने परदा हटा दिया हो। सूरज की हल्की पीली किरणें तेज सुनहरी किरणों में बदल गयीं। हवा भी रुक गई। दोनों स्त्रियों ने सिर उठाकर आसमान की तरफ देखा और एक गहरी उसाँस भरी। दोनों एक साथ बैठकर धूप सेंकने लगीं।

होह्वा कस्बे के एक धनी परिवार में नौकरानी रह चुकी थी और सभी तरह की खबरें जानती थी। वह आसि की पत्नी के कान में फुसफुसाई :

"मक्खीचूस चाङ खुद भी बड़ा दुष्ट है। गोलमाल के बहुत से मामलों में उसका हाथ है!"

"अच्छा!"

"नमक के तस्करों, अफीम के सौदागरों—सभी के साथ उसका ताल्लुक है! याद है, पिछले साल चोरों के एक गिरोह ने घरौंदों की बस्ती से बैल चुराने में गजब का हुनर दिखाया था? उसी गिरोह ने कस्बे की आटे की चक्की से भी बैल चुरा लिए थे। मक्खीचूस चाङ उस गिरोह का सरपरस्त है!"

"पर अधिकारियों को इस बात का पता जरूर होगा?"

"अधिकारियों को? क्या कहती हो! पुलिस कप्तान खुद भी इसी गिरोह में शामिल है!"

होह्वा ने तिरस्कार से नाक-भौं सिकोड़ ली। उसकी छोटी-छोटी आँखें लगभग बन्द हो गयीं। इधर कुछ समय से वह बहुत दुबली हो गई थी। उसका गोरा रंग कुछ पीला पड़ता जा रहा था। मुँह पहले से कहीं ज्यादा बड़ा लगने लगा था। छोटी-छोटी आँखें और ज्यादा छोटी मालूम होने लगी थीं।

आसि की पत्नी सिर हिलाकर सहमति प्रकट करती जा रही थी। उसने एक आह भरी। सहसा वह उठ खड़ी हुई और झुँझलाकर बोली :

"आत्वो ठीक कहता है। दीन-दुखियों का इस दुनिया में कौन है!"

"हाँ, वह ठीक कहता है। दुनिया में भारी उथल-पुथल मचने वाली है!"

"मेरे ससुर कहा करते थे, 'लम्बे बाले वाले' फिर आयेंगे। सुना है, अब औरतें भी 'लम्बे बाल वालों' की पाँतों में शामिल हो रही हैं। जानती हो, हमारे घर में 'लम्बे बाल वालों' की एक बड़ी-सी तलवार रखी है।... लेकिन मेरे बापू कहते हैं सच्चे सम्राट* का जन्म अभी नहीं हुआ।"

"वाह, तेरे बापू को यह कैसे मालूम हो गया? क्या स्वर्ग से पहले उन्हीं से पास सन्देश आया है? पिछले महीने पश्चिम के आकाश में एक लाल सितारा दिखाई दिया—उसका आकार शराब की प्याली के बराबर था। सितारे के आठ कोने थे! वही सच्चे सम्राट का सितारा है। फिर वे कैसे कहते हैं कि उसका जन्म अभी नहीं हुआ।..."

"वह बागी है! मेरे पिता तो कहते हैं, ऐसा आदमी बागियों का सरदार होता है! डायन की बच्ची, तू क्या जाने!"

"क्या कहा!" होह्रा उछल पड़ी। उसकी छोटी-छोटी आँखें फैल गयीं।

दोनों स्त्रियाँ एक-दूसरे को घूरने लगीं। पुरानी दुश्मनी को फिर से भड़कने में देर न लगी। आसि की पत्नी होह्रा को हमेशा हिकारत की नजर से देखती थी। वह उसे एक 'नौकरानी, इश्कबाज और छिनाल' समझती थी! होह्रा भी कोई कायर स्त्री न थी। उसने भी अपना रोष व्यक्त करने के लिए आसि की पत्नी के रेशम के कीड़ों को चुरा लिया था और उन्हें सोते में फेंक दिया था। यह आज से छः महीने पुरानी बात थी। तब से वे दोनों जब भी मिलतीं, एक-दूसरे से कन्नी काट लेतीं। हाल ही में थुङ्पाओ के परलोक सिधारने के बाद वे आपस में सामान्य पड़ोसियों जैसा बरताव करने लगी थीं। पर आज एक मामूली सी बात पर उनके बीच फिर तकरार शुरू हो गई। दोनों ही अपने को सही समझ रही थीं।

आसि की पत्नी ने बड़े रईसाना अन्दाज के साथ पिच्च से जमीन पर थूक दिया और इस छोटे-से मामले को रफादफा करना चाहा। पर ज्यों ही वह जाने लगी, होह्रा ने, जो "भद्रजनोचित" तिरस्कार का मुँहतोड़ जवाब देने के लिए हर समय तैयार रहती थी, उछलकर उसका रास्ता रोक लिया और भर्राई हुई आवाज में बोली :

"जो लोग गालियों की बौछार करके भाग खड़े होते हैं उनकी औकात दो कौड़ी की भी नहीं होती!"

"पर वे लोग तेरे जैसे कमीनों से बेहतर होते हैं, डायन!" यह कहकर आसि की पत्नी आगे बढ़ गई। लेकिन वह अपने घर नहीं गई, बल्कि सोते के उस पार

* पुराने चीन के लोगों में यह अन्धविश्वास था कि सम्राट कौन बनेगा इसका निर्णय स्वर्ग में किया जाता है और जब कोई राजवंश पतन की पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है तो स्वर्ग से एक नए "सच्चे सम्राट" को मानवलोक में जन्म लेने भेज दिया जाता है।

चली गई।

अपने प्रतिद्वन्द्वी को उकसाने में असफल रहने के कारण होह्वा उदास हो गई। उसे "हलचल" पसन्द थी--चाहे वह झगड़े-फसाद से ही क्यों न पैदा हुई हो और उसमें चाहे उसे शिकस्त ही क्यों न खानी पड़े। कभी-कभी उसे मुँहतोड़ जवाब मिलता। पर उसका उसे कोई मलाल न होता। दुनिया में वह हर चीज को उपेक्षा और तिरस्कार से बेहतर समझती थी। सबसे ज्यादा नफरत उसे इस बात से थी कि लोग उसे "इंसान" ही नहीं समझते थे। जब वह नौकरानी थी, तो मालिक उसे कुत्ते-बिल्ली से भी बदतर एक बिल्कुल निर्जीव और चेतनाशून्य वस्तु समझता था। लेकिन होह्वा यह जानती थी कि उसके अन्दर चेतना मौजूद है। जिन कारणों से वह अपने भूतपूर्व मालिक से बेहद नफरत करती थी, उनमें एक उसका नीचतापूर्ण बरताव भी था।

जब होह्वा ने नौकरानी का काम छोड़कर विवाह कर लिया, तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसे पक्का यकीन था कि अब उसे एक इंसान की जिन्दगी बसर करने का मौका मिल सकेगा। पर दुर्भाग्यवश, शादी के सिर्फ आधे महीने बाद ही उसका पति गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया। बाद में उसके पशुओं और मुर्गी-बत्तखों को भी रोग लग गया। इससे होह्वा की प्रतिष्ठा धूल में मिल गई। लोग उसे "डायन" कहने लगे। गाँव में उसे "इंसान" नहीं समझा जाता था। वह एक छोटा-सा गाँव था। इसलिए यह सब होने पर भी होह्वा जवाबी प्रहार के लिए रास्ता निकाल लेती। जब भी मौका मिलता, गाँव की स्त्रियों से झगड़ा मोल ले बैठती। अक्सर गाँव के अविवाहित नौजवानों के साथ चुहलबाजियाँ करती रहती। कारण, केवल झगड़े-फसाद के जरिए अथवा इश्क लड़ाकर ही उसे किसी हद तक इस बात का एहसास हो सकता था कि वह भी "इंसान" है।

वसन्त के रेशमे के कीड़ों की तबाही के बाद, जब भुखमरी से पीड़ित किसानों के गल्ले के व्यापारियों और धनी लोगों के गोदामों पर धावा बोलने का अभियान शुरू किया, तो एक "इंसान" के रूप में होह्वा की प्रतिष्ठा काफी बढ़ गई थी। काफी समय तक लोगों ने उसे 'डायन' कहकर सम्बोधित नहीं किया था। इस शब्द से वह सख्त नफरत करती थी। दूसरों के प्रति उसका बरताव भी बेहतर हो गया था। लेकिन आज आसि की पत्नी की बातों से उसका पुराना घाव फिर हरा हो गया था। यही नहीं, उसने यह सब इतने गरूर से कहा था मानो होह्वा इस लायक भी न हो कि उससे झगड़ा मोल लिया जाये!

होह्वा दाँत पीसकर रह गई। उसका रोम-रोम एक ऐसी पीड़ा से कराह उठा जिसकी उग्रता किसी भी शारीरिक यंत्रणा से अधिक थी। सहसा उत्तर-पश्चिम से आने वाली हवा और तेज हो गई। उसकी साँय-साँय होह्वा की खिल्ली उड़ाती हुई मानो उसके कान में कह रही थी—"डायन, डायन, डायन!"

सोते के किनारे पहुँचकर आसि की पत्नी अचानक रुक गई। उसने पीछे मुड़कर

होह्रा की ओर देखा। पर दूसरे ही क्षण मुँह फेरकर पिच्च से थूक दिया। उसकी इस हरकत ने आग में घी का काम किया! होह्रा चिल्लाती हुई उसकी तरफ दौड़ी। पर दो-चार कदम बढ़ने के बाद ही उसका पाँव फिसल गया और इतनी जोर से गिरी कि उसे दिन में ही तारे नजर आने लगे।

"हा, हा, हा! डायन की बच्ची!" आसि की पत्नी ने दूर से व्यंग्य किया। ठीक उसी समय एक अन्य स्त्री खलिहान पार करके दौड़ती हुई वहाँ आ पहुँची और तालियाँ बजाती हुई हँसने लगी। वह ल्यूपाओ थी। वह भी होह्रा की दुश्मन थी।

"अगर तेरे अन्दर दम-खम है तो जरा रुक जा!" होह्रा ने अपना अनाकर्षक चेहरा आगन्तुक स्त्री की ओर घुमाते हुए गुस्से में भरकर कहा। हालाँकि होह्रा काफी जोर से गिरी थी और उसके कूल्हों में तेज दर्द हो रहा था, फिर भी क्रोध के आवेश में वह अपना सारा दर्द भूल गई। वह अपने हृदय का आक्रोश बाहर निकालना चाहती थी। पर अब उसके सामने दो शत्रु मौजूद थे। तो क्या उनसे वाग्युद्ध करे? मगर ल्यूपाओ से जीतना मुश्किल था। कैंची की तरह चलने वाली उसकी जबान पूरे गाँव में मशहूर थी। तो क्या उनसे हाथपाई करे? मगर दो का मुकाबला वह अकेली कैसे कर सकती थी? वह उठ खड़ी हुई, पर समझ न पाई कि क्या करे। तभी पूरब की तरफ से कोई उसकी ओर आता नजर आया। उसे देखते ही होह्रा ने अपना इरादा बदल दिया।

## 2

आगन्तुक व्यक्ति पुजारी ह्वाङ था। थुङपाओ की मृत्यु के बाद पुजारी ह्वाङ के चन्द दोस्तों में जिनके साथ वह गपशप कर सकता था, एक आदमी कम हो गया था। गाँव के नौजवान उसकी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते थे। ज्यादातर लोग इस "बेढंगे" बूढ़े के अस्तित्व को ही भूलने लगे थे। पहले वह भी एक किसान था। पर एक साल उसे जबरन फौज के लिए गोला-बारूद ढोने भेज दिया गया था। जब गया था तो धान अँकुरित हो रहे थे और जब लौटा था तो जाड़े का मौसम खत्म हो चुका था। तसल्ली देने वाली बात सिर्फ यह थी कि वह कम से कम चीन के परम्परागत नववर्ष का भोजन तो अपनी घरवाली के साथ कर सका था। पर इसके फौरन बाद ही उसकी पत्नी परलोक सिधार गई थी। उसके कोई बाल-बच्चा न था। पुजारी ह्वाङ अकेला रह गया। उसने अपना धान का खेत बेच डाला। उसके पास जमीन का एक छोटा-सा टुकड़ा बाकी रह गया, जिस पर साग-भाजी उगाकर वह कस्बे में बेचने लगा। इस तरह उसकी जिन्दगी का एक-एक वर्ष बीतता गया। कभी-कभी चार-चार पाँच-पाँच दिन तक वह गाँव वालों को बिल्कुल नजर नहीं आता था। जो लोग सौदा लेने कस्बे में जाते, वे कहते थे : ह्वाङ साग-भाजी से होने

वाली सारी आमदनी शराब में उड़ा देता है। शराब के नशे में वह सारा दिन मन्दिर के बाहर एक पेशेवर ज्योतिषी के साथ बैठा रहता और "समाचारों" की चर्चा-समीक्षा करता रहता। रात को देवालय की वेदी के नीचे फर्श पर सो जाता।

ह्वाङ की जिन्दगी का ढर्रा ही कुछ ऐसा था कि लोग उसे "बेढंगा" कहकर पुकारने लगे थे। कस्बे के कुछ लोगों से उसने आडम्बरपूर्ण भाषा के प्रयोग सीख लिए थे—ऐसे प्रयोग जिनमें धर्मसूत्रों और साहित्यिक सूक्तियों का मिश्रण होता था। गाँव का एक भी आदमी उन्हें नहीं समझ पाता था। वह जो कुछ कहता, उसमें किसी को कोई दिलचस्पी नहीं थी।

इधर कुछ समय से ह्वाङ ने शराब पीना छोड़ दिया था, क्योंकि साग-भाजी बेचकर उसे पर्याप्त आमदनी नहीं हो पाती थी। वह कस्बे में भी बहुत कम जाता था। और जब जाता, तो ज्यादा से ज्यादा आधे दिन में ही लौट आता। लौटकर गाँव के सोते के किनारे किसी पेड़ के नीचे घुटनों के बल बैठ जाता और शून्य दृष्टि से क्षितिज की ओर एकटक निहारता रहता। अगर कोई उसकी आँखों के सामने आ जाता और उसकी ओर देखभर लेता, तो वह उछलकर उठ खड़ा होता और उस व्यक्ति की बाँह पकड़कर जोर से कहता :

"दुनिया में उथल-पुथल होने वाली है! उत्तर-पूर्व में... उत्तर-पूर्व में सच्चे सम्राट का उदय हो गया है!" वह लगातार यही रट लगाता रहता। सुनने वाला ऊब जाता और तिरस्कार से थूकता हुआ जान छुड़ाकर भाग खड़ा होता।

पर जब से उत्तर-पश्चिम से तेज हवा आने लगी थी, तब से गाँव वालों को पेड़ के नीचे या किसी दूसरी जगह पुजारी ह्वाङ बहुत कम दिखाई देता था। वह अपनी छोटी-सी कुटिया के अन्दर ही बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से चहलकदमी करता रहता। ह्वाङ के दरवाजे की दरारों से झाँककर किसी ने कहा था, यह "सनकी" चारों दिशाओं में पूजा कर रहा है। फूस की तीन प्रतिमाएँ बनाकर उसने अपनी कुटिया में एक देवालय की स्थापना कर ली थी।

गाँव के नौजवान कहते, पुजारी ह्वाङ पागल हो गया है। पर बूढ़ी स्त्रियाँ और बच्चे उसे चैन न लेने देते और पूछते रहते कि फूस की ये तीन प्रतिमाएँ किन-किन प्रेतात्माओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। युवतियाँ मामले की तह में जाने की जिद करतीं। पर पुजारी ह्वाङ उनके प्रश्नों को टाल देता। लोग अन्दर न झाँक पायें, इसके लिए उसने अपने दरवाजे की दरारों पर कागज चिपका दिया था।

ह्वाङ अपनी इन तीन प्रतिमाओं का रहस्य किसी को नहीं बताना चाहता था, पर दूसरे मामलों पर बढ़-बढ़कर बातें करने के लिए हमेशा तैयार रहता था। जिस "आठ कोनों वाले सितारे" की चर्चा होह्वा ने की थी, वह भी उसने पुजारी ह्वाङ के ज्ञान-भण्डार से ही सीखा था। इसलिए जब होह्वा ने ह्वाङ को आँखें फाड़कर अपने करीब आते देखा, तो फौरन अभिवादन किया। ल्यूपाओ और आसि की पत्नी के

साथ अपने झगड़े में वह पुजारी ह्वाङ की मदद लेना चाहती थी।

"पुजारी जी," वह बोली। "सुना तुमने? यह औरत कहती है कि लाल सितारे का मतलब है बागियों का सरदार! कितनी मूर्ख है यह!" होह्वा ने अपने दोनों दुश्मनों की ओर देखा और खिलखिलाकर हँस पड़ी। अचानक उसे अपने कूल्हों का दर्द याद आ गया। उसके चेहरे की हँसी लुप्त हो गई और दोनों हाथ कूल्हों पर चले गये।

पुजारी ह्वाङ की आँखें फैल गयीं। उसने उन दोनों स्त्रियों पर नजर डाली और फिर होह्वा की ओर देखकर अपना सिर हिला दिया।

"सच्चे सम्राट का जन्म संसार में हो चुका है," मंत्रपाठ-सा करता हुआ वह बोला। "दूर क्षितिज के पास होते हुए भी वह तुम्हारी दृष्टि के अत्यन्त निकट है! नानचिङ के बाहर एक पर्वत की तलहटी में एक छोटी-सी बीन-पनीर की दुकान में एक बुड्ढा आदमी रहता है। प्रतिदिन मुँह अँधेरे ही वह बीन-पनीर तैयार करने के लिए उठ जाता है। खट, खट, खट! हर सुबह कोई उसका द्वार खटखटाता है और उससे पूछता है, 'क्या उजाला हो चुका है? क्या उजाला हो चुका है?' चूँकि अभी उजाला नहीं हुआ, इसलिए बुड्ढा आदमी उत्तर देता है, 'नहीं, अभी नहीं हुआ!' वह नहीं जानता कि प्रश्न पूछने वाला दरअसल सच्चा सम्राट है!"

"मान लो वह जवाब में कह दे, 'उजाला हो गया है,' तो क्या होगा?" ल्यूपाओ ने करीब आकर पूछा। उसकी आँखें पुजारी ह्वाङ पर टिकी हुई थीं।

"अगर वह कह दे, 'उजाला हो गया है,' उस सूरत में, उस सूरत में..." पुजारी ह्वाङ ने आँखें उठाकर आसमान की तरफ देखा और फिर अत्यन्त रहस्यमय ढंग से अपना सिर हिला दिया।

"उस सूरत में हम गरीबों को अपने दुखों से छुटकारा मिल जायेगा!" होह्वा ने बड़ी बेसबरी के साथ ल्यूपाओ से कहा। अपने कूल्हों का दर्द वह बिल्कुल भूल चुकी थी।

"ठीक है, ठीक है!" पुजारी ह्वाङ ने राहत की साँस ली। होह्वा के प्रति आभार प्रदर्शित करता हुआ वह बोला, "इससे हमें कुछ न कुछ लाभ अवश्य हो सकता है। जैसे तीन वर्ष तक हमारा लगान माफ हो सकता है।"

लेकिन ल्यूपाओ बाल की खाल उतारने में माहिर थी। होह्वा की उपेक्षा करती हुई वह पुजारी ह्वाङ से उत्तर देने का आग्रह करती रही।

"कितना अच्छा होता अगर वह बुड्ढा आदमी जल्दी ही कह देता : आसमान में उजाला हो गया है!" आसि की पत्नी धीमी-सी आवाज में बोली।

"नहीं, नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता! दैवी आदेश का उल्लंघन वह नहीं कर सकता! अभी समय नहीं आया! ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि जब वह कहेगा आसमान में 'उजाला हो गया है,' उस समय स्वर्ग के योद्धाओं और

सेनापतियों को धरती पर उतरकर सच्चे सम्राटा को राजसिंहासन पर बैठाने के काम में सहायता करनी होगी!" ल्यूपाओ को सम्बोधित करके पुजारी ह्वाङ बोला, "जानती हो, उन लोगों को समय से पहले नीचे नहीं बुलाया जा सकता!"

"ओह, तो यह बात है!" ल्यूपाओ कुछ असन्तोष के स्वर में बोली। उसने अपने होंठ बिचकाए और सिर हिला दिया।

होह्वा ठहाका मारकर हँस पड़ी। ल्यूपाओ को होंठ बिचकाते देखकर वह उसके लिए कोई अच्छा-सा उपनाम सोचने लगी।

"क्या वह बुड्ढा आदमी भी कोई देवता है?" आसि की पत्नी ने धीरे से पूछा। "पुजारी जी, जरा यह तो बताओ, जो आदमी उस बुड्ढे का दरवाजा खटखटाकर पूछा करता है, 'क्या उजाला हो गया है?' वही सच्चा सम्राट है, यह बात आप कैसे जानते हैं? सच्चे सम्राट का चेहरा-मोहरा आखिर कैसा है?"

पुजारी ह्वाङ व्यंग्यपूर्ण हँसी हँसता हुआ बोला, "क्या कहा? मैं कैसे जानता हूँ? निस्सन्देह, मैं जानता हूँ। बीन-पनीर की दुकान के उस बुड्ढे आदमी के पास इस बात का प्रमाण है। खट, खट, खट—हर सुबह उसके दरवाजे पर वही खटखट की आवाज सुनाई देती है। सुना तुमने? खटखट की आवाज उसी के दरवाजे पर सुनाई पड़ती है, किसी दूसरे के दरवाजे पर नहीं! 'क्या उजाला हो गया है? क्या उजाला हो गया है?' हर सुबह वही प्रश्न सुनाई देता है! वह बुड्ढा सिर्फ आवाज को सुनता है, प्रश्नकर्ता को नहीं देखता। क्या वह उसे देखने की जुर्रत कर सकता है? हरगिज नहीं! अगर उसने ऐसा किया, तो दैवी आदेश का उल्लंघन हो जायेगा—उस पर बिजली गिर जायेगी! जो हो, दरवाजा खटखटाने वाला व्यक्ति सच्चा सम्राट ही है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं!"

इस निष्कर्षपूर्ण कथन के बाद पुजारी ह्वाङ की मुखमुद्रा अत्यन्त गम्भीर हो उठी; आँखें फैलकर बेहद बड़ी हो गयीं। तीनों स्त्रियाँ सिहर उठीं। उन्हें लगा जैसे कोई सचमुच दरवाजा खटखटा रहा हो।

उत्तर-पश्चिम की हवा के थपेड़ों में चारों व्यक्ति थरथर काँप रहे थे। ल्यूपाओ ने अपनी चमकदार आँखें मलते हुए पूछा :

और तुमने फूस की तीन प्रतिमाओं को किसलिए स्थापित किया है?"

"इसका भी कारण है! कारण है!" पुजारी ह्वाङ ने आँखें फाड़कर बड़े नाटकीय ढंग से उत्तर दिया। उसने अपना बायाँ हाथ ऊपर उठाया और मध्यमा उँगली से उत्तर दिशा के आकाश की ओर संकेत किया। उसका चेहरा पहले से ज्यादा गम्भीर हो उठा।

तीनों स्त्रियाँ उसी दिशा में देखने लगीं। आसि की पत्नी को ऐसा लग रहा था मानो पुजारी ह्वाङ अपनी दुबली-पतली, काली उँगली को देवलोक में किसी के पेट में घोंप रहा हो। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा।

"वह देखो, सच्चा सम्राट वहाँ से आएगा! दूर वहाँ से, जहाँ रक्तिम आलोक है! जानती हो? वहाँ रक्तिम आलोक है!" पुजारी ह्वाङ ने तीखी आवाज में कहा। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें तीनों स्त्रियों पर टिकी हुई थीं।

तीनों बेहद डर गयीं। हालाँकि उनमें एक भी स्त्री 'रक्तिम आलोक' का अर्थ स्पष्ट रूप से नहीं समझती थी, फिर भी पुजारी ह्वाङ की गम्भीर मुद्रा को देखकर उन्हें लगा जैसे इसका अर्थ वे सचमुच समझ गई हों। खास तौर पर आसि की पत्नी के मस्तिष्क में इसका अर्थ स्पष्ट होने लगा। वह समझ गई कि 'रक्तिम आलोक' का तात्पर्य है : बहुत से लोगों को अपने प्राणों की आहुती देनी होगी, बहुत से लोगों को अपना खून बहाना होगा! जिस जगह सच्चे सम्राट का जन्म होता है, उसे कीमत चुकानी ही पड़ती है।

पुजारी ह्वाङ ने हाथ ऊपर उठाया और उँगली से तीन बार उत्तर दिशा के आकाश की ओर संकेत किया। तीनों बार आसि की पत्नी का दिल तेजी से धड़कने लगा। इसके बाद उसने अपना हाथ नीचे कर लिया और उँगली से उस धरती की ओर संकेत करने लगा जिस पर वे लोग खड़े थे।

"यहाँ भी कभी रक्तिम आलोक फैलेगा!" उसने भर्राई हुई आवाज में मंत्रजाप के अन्दाज से कहा। "सिर्फ छः महीने में, सालभर में, तुम सब लोगों की गरदन उड़ा दी जायेगी! इस गाँव का दुनिया में नामोनिशान भी बाकी नहीं रह जायेगा!" पुजारी ह्वाङ ने अपनी गरदन एक तरफ लटका दी, उसके होंठ या तो कँपकँपी के कारण या मंत्रजाप के कारण हिल रहे थे।

तीनों स्त्रियों ने एक गहरी उसाँस भरी। होह्वा ने ल्यूपाओ की तरफ देखा, मानो कह रही हो, "देखें, कौन पहले मरता है—तू या मैं!" पर ल्यूपाओ पुजारी ह्वाङ की ओर सन्देहभरी नजरों से देख रही थी। कुछ देर तक खामोशी रही। सहसा आसि की पत्नी ने मौन भंग किया : "क्या छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं है, पुजारी जी? क्या यह—"

"कौन कहता है कोई उपाय नहीं है?" पुजारी ह्वाङ उछल पड़ा और उसकी बात काटते हुए बोला, "मैं अपनी तीनों फूस की प्रतिमाओं को आदेश दे रहा हूँ कि वे प्रहार का निशाना खुद बन जायें! सात सत्ते उनचास होते हैं—अभी कुछ दिन और बाकी हैं। अपनी जन्म-कुण्डली के साथ ताँबे के पचास सिक्के ले आओ। फूस की प्रतिमा यह सारी मुसीबत तुम्हारी जगह सिर ले लेगी। समझे कि नहीं? ज्यादा दिन रह गये हैं।"

"लेकिन सच्चा सम्राट कब तक आने वाला है?" होह्वा ने पूछा। उसके कूल्हे अब भी दुख रहे थे।

पुजारी ह्वाङ नाक की सीध में सामने की ओर देखता रहा, मानो उसने होह्वा का प्रश्न सुना ही न हो। उत्तर-पश्चिम से आने वाली तेज हवा के कारण उन चारों की

आँखों से पानी बह रहा था। चाङ परिवार के कब्रिस्तान में खड़े पेड़ हवा के थपेड़ों में साँय-साँय कर रहे थे। पुजारी ह्वाङ ने मध्यमा उँगली से अपनी दोनों आँखें पोंछ लीं और गम्भीरता से बोला :

"कब तक आने वाला है? जब चाङ परिवार के कब्रिस्तान के सभी पेड़ ढह जायेंगे, लुप्त हो जायेंगे—तब सच्चा सम्राट आ जायेगा!"

"ओह, कब्रिस्तान के पेड़!" तीनों स्त्रियाँ एक साथ बोल पड़ीं। उनकी आँखों में आशा और भय का अद्‌भुत मिश्रण था। जब भी कोई पेड़ गायब होगा, तो मक्खी चूस चाङ उन्हें सजा देगा। यह विचार आते ही उनके मन में भय जाग उठता। किन्तु भय के साथ-साथ आशा भी बनी हुई थी। इसलिए पुजारी ह्वाङ की बेसिरपैर की बातों पर विश्वास करने के सिवाय उनके सामने चारा ही क्या रह गया था!

3

इधर कुछ दिनों से आसि की पत्नी बड़ी उलझन में थी। पिता ने सलाह दी थी कि कस्बे में आकर घरेलू नौकरानी का काम कर ले—खाने के अलावा कुछ पैसे भी मिलेंगे। वह सोचती थी, पिता की सलाह अच्छी है। पर पति पट्टे की जमीन पर खेतीबाड़ी जारी रखना चाहता था, क्योंकि शहर में काम ढूँढ़ना स्त्रियों के तुलना में पुरुषों के लिए अधिक कठिन था। और अगर उसे खेतीबाड़ी ही करनी थी, तो पत्नी की मदद के बिना उसका काम नहीं चल सकता था।

आत्वो बड़े भाई से सहमत न था। "पट्टे की जमीन पर खेती?" वह नाक-भौं सिकोड़कर बोला। "कमरतोड़ मेहनत करते जाओ और हमेशा की तरह भूखे रहो! फसल अच्छी हो, तो ज्यादा से ज्यादा पन्द्रह तान चावल पैदा होंगे। साढ़े छः तान लगान चुकाने के बाद अपने खाने के लिए काफी चावल रह जाने चाहिए। पर हम पर जो कर्जा चढ़ा हुआ है, उन पर सूद भी तो देना होगा... फिर खाद के लिए भी पैसे चाहिए। इन सबका भुगतान करते-करते कुछ भी बाकी नहीं रह जायेगा। पतली-सी लपसी के लायक चावल भी नहीं रह जायेंगे!"

आसि बिल्कुल मौन था। उसके चेहरे पर कुढ़न थी। वह जानता था कि पट्टे की जमीन पर गुजारा होना मुमकिन नहीं है। उसकी पत्नी घरेलू नौकरानी बनकर कुछ पैसे कमा सकती थी। वह खुद भी कोई न कोई छोटा-मोटा काम ढूँढ़ सकता था। लेकिन फिर भी उसके मन में कोई चीज अटक रही थी। लग रहा था, यह कदम उठाते ही सब कुछ खत्म हो जायेगा। उसने पत्नी की ओर देखा, इस आशा से कि वह कुछ कहेगी।

"समस्या को टालते जाने से क्या फायदा?" आत्वो ने सलाह दी। "हमारी सारी जमीन बिक चुकी है। सिर तक कर्जे में डूबे हुए हैं। यह टूटाफूटा मकान भी अब

हमारा नहीं रहा। अब यहाँ हमारे लिए क्या रह गया है? मेरा तो ख्याल है तुम दोनों को ही कस्बे में रोजगार ढूँढ़ लेना चाहिए। जहाँ तक उस कर्जे का सवाल है जिसे बापू अपने सिर पर लादे हुए थे, भाड़ में जाये उसके भुगतान की बात!"

"नन्हा पाओ मेरे पिता के पास रह सकता है," पत्नी ने कहा। पर तभी उसका विचार बदल गया। पिता के पास अपना मकान तो था नहीं। जिस घर में वे काम करते थे, वहीं रहते भी थे। एक नाती पहले ही उसके साथ रह रहा था। मालिक उसी के बारे में एतराज करता रहता था। एक और नाती को अपने पास रखना उनके लिए असम्भव था। इसकी वजह से अगर उनका काम छूट गया, तो क्या होगा? कस्बे में ऐसे लोगों को नौकरी देना कोई पसन्द नहीं करता था जिनके साथ बच्चे हों... आसि की पत्नी ने जब यह सब सोचा, तो मालिक के घर का खाना उसे उतना आकर्षक नहीं जान पड़ा।

"मैं भी यही सोच रहा हूँ," आसि बोला। पत्नी का चेहरा देखकर उसकी आँखें गीली हो गयीं। "मुसीबत यह है कि हम लोग अपने बच्चे का कहाँ भेजें?"

"तुम जैसा ढुलमुल आदमी मैंने कहीं नहीं देखा, भैया!" आत्वो जोर से चिल्लाया। "नन्हे पाओ की जिम्मेदारी मैं लेता हूँ, और यकीन दिलाता हूँ कि उसे खाने-कपड़े की कोई कमी नहीं होने दूँगा! वह अब बारह साल का हो गया है। दुधमुँहे बच्चे की तरह उसे हमेशा छाती से चिपकाए रखने की क्या जरूरत हे!"

पर आसि ने सिर हिलाकर इंकार कर दिया। उसकी पत्नी भी बोल पड़ी : "नहीं, ऐसा हरगिज नहीं हो सकता! मैं चिन्ता से मर जाऊँगी! हाय! हमारे परिवार का क्या होगा? वह चारों दिशाओं में तितर-बितर नहीं हो जायेगा? उसका इस तरह बिखर जाना कहाँ तक ठीक है?"

"दुनिया दोजख की आग में जल रही है! लाखों लोग भूखों मर रहे हैं! अगर हमारा परिवार बिखर गया, तो क्या कयामत आ जायेगी?" आत्वो ने भड़भड़ाकर कहा। "आज ऐसा जमाना आ गया है कि आदमी कुत्तों की मौत मर रहे हैं, पर कोई परवाह तक नहीं करता। परिवार का बिखरना कौन-सी बड़ी बात है!" उसने अपने भाई और भाभी की तरफ इस तरह देखा मानो वह इस ढुलमुल दम्पति को एक ही निवाले में निगल जायेगा।

आत्वो गुस्से में था। इसलिए भाई-भाभी ने कोई उत्तर न दिया। लेकिन उसके आवेशपूर्ण कथन ने अपना काम कर डाला। जो चीज आसि के दिल पर एक बोझ बनी हुई थी—उसे पहले की ही तरह पट्टे की जमीन पर खेतीबाड़ी करते रहने के लिए मजबूर कर रही थी, दूसरों के यहाँ काम करके रोजी कमाने के प्रति उदासीन बना रही थी और निराशा व अनिर्णय के नागपाश में जकड़े हुए थी—उसका आत्वो के एक ही प्रहार के विस्फोट हो गया, और जो चीज विस्फोट के बाद प्रकट हुई वह परिवार के बिखर जाने के डर के सिवाय और कुछ न थी!

अतीत काल में उन लोगों का परिवार एक सुगठित, संयुक्त परिवार था। तब उनके पास अपनी जमीन भी थी। बाद में पट्टे की जमीन पर खेती करने का फैसला उन्होंने महज इसलिए किया था क्योंकि वे समझते थे इस तरह परिवार को बिखरने से बचाया जा सकेगा। लेकिन अब अलग-अलग दिशाओं में बिखरने का मतलब क्या अपने पूर्वजों के प्रति विश्वासघात नहीं होगा, अपने मासूम बेटे के प्रति विश्वासघात नहीं होगा? "परिवार" ही एक ऐसी चीज थीं जिस पर दीर्घकाल से उनकी आस्था चली आ रही थी। हालाँकि वे लोग तबाह हो चुके थे, फिर भी उनके मन-मस्तिष्क में मौजूद वह आस्था कैसे टूट सकती थी जिसे बनने में इतना लम्बा समय लगा था?

तथापि आत्वो के शब्दों ने एक तेज नश्तर की तरह उनके हृदय में प्रवेश करके उस आस्था को टुकड़े-टुकड़े कर डाला था। "दुनिया दोजख की आग में जल रही है... अगर हमारा परिवार बिखर गया, तो क्या कयामत आ जायेगी? आज ऐसा जमाना आ गया है कि आदमी कुत्तों की मौत मर रहे हैं, पर कोई परवाह तक नहीं करता!"

आसि की पत्नी जितना सोचती जाती, उतनी ही दुखी होती जाती। उसकी आँखों में आँसू छलछला आए। सच्चा सम्राट आखिर कब आएगा, वह नहीं जानती थी। क्या पुजारी ह्वाङ की फूस की तीन प्रतिमाओं से कोई भला हो सकेगा?

वह दुख में डूबी हुई थी। फिर भी उसे आशा की किरण नजर आ रही थी।

## 4

सरदी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। बरफ भी पड़ने लगी थी। पाले से साग-भाजी की फसल खराब हो गई थी। गाँव वालों के पास ऐसी कोई चीज नहीं रह गई थी जिसे बेचकर कस्बे से चावल खरीद सकें। देहात और कस्बे के बीच लोगों का आना-जाना बहुत कम हो गया था। गाँव में खाने के लाले पड़ गये थे।

किसी को पता चला कि शहतूत की जड़ें भी खाई जा सकती हैं—उनका स्वाद कचालू जैसा होता है। गाँव का हर आदमी शहतूत की जड़ें खोदने लगा।

आसि की पत्नी अब शहतूत के पेड़ों की जानी दुश्मन बन चुकी थी, हालाँकि पहले कभी वह इन पेड़ों को प्राणों से भी ज्यादा प्यार करती थी। शहतूत के पेड़ देखते ही उसके मन में उस आघात की दुखदायी स्मृति फिर से ताजा हो जाती जिसे उसके परिवार को पिछली बार रेशम के कीड़ों को शहतूत के पत्ते खिलाते समय झेलना पड़ा था। साथ ही वह इस बात से भी बेहद दुखी थी कि उनके परिवर को शहतूत के पेड़ों का अपना बगीचा साहूकार के पास गिरवी रखना पड़ा था।

कुछ नौजवान गाँव से लापता हो गये। ल्यूपाओ का भाई फ़ूछिङ, मक्खीचूस

चाङ के उत्पीड़न का शिकार 'तेंदुआ ली' और आत्वो अचानक एक दिन गाँव से चले गये। पर गाँव वालों ने कोई परवाह न की। उन्हें सबसे ज्यादा परवाह उन पेड़ों की थी जा चाङ परिवार के कब्रिस्तान में खड़े थे। जब बरफ पड़ रही होती, उस समय भी लोग यह देखने जा पहुँचते कि अब कितने पेड़ बाकी रह गये हैं। पुजारी ह्वाङ की भविष्यवाणी शीघ्र ही गाँव के हर आदमी के कानों में पहुँच गई थी। और बहुत से लोग उस पर विश्वास भी करने लगे थे।

पुजारी ह्वाङ की टूटी-फूटी झोंपड़ी में फूस की तीन प्रतिमाओं पर कागज की पर्चियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। ये वास्तव में गाँव के कुछ लोगों की जन्तपत्रियाँ थीं—उनमें नन्हे पाओ की जन्मपत्री भी थी। आसि की पत्नी किसी से पचास ताँबे के सिक्के उधार लेकर अपने पति की जन्मपत्री भी वहाँ रखवाना चाहती थी।

गाँव के स्त्रियों में सिर्फ ल्यूपाओ ही ऐसी थी जो पुजारी ह्वाङ की ऊलजलूल बातों पर विश्वास नहीं करती थी। पर उन दिनों वह गाँव में नहीं थी। कुछ लोग कहते, शाङहाए के किसी कारखाने में काम करने चली गई है। कुछ अन्य लोग कहते, गाँव छोड़कर कस्बे में बस गई है।

मकर संक्रान्ति से कुछ दिन पहले गाँव में अफवाह फैल गई कि पड़ोस के छीच्यापाङ गाँव में सच्चे सम्राट ने अवतार ले लिया है। चाओ नाम का एक गाँववासी खलिहान में अपने इर्दगिर्द खड़े लोगों के सामने इस चमत्कार की ऐसे चर्चा कर रहा था मानो सच्चे सम्राटा को अपनी आँखों से देख चुका हो :

"वह अभी सिर्फ बारह साल का है। नन्हे पाओ की ही तरह अभी नाक पोंछना भी नहीं जानता!..."

सुनने वाले खिलखिलाकर हँस पड़े। पर चाओ का चेहरा लाल हो गया। "अगर तुम्हें यकीन नहीं, तो देख क्यों नहीं आते!" वह जोर से बोला। "ओह, इससे साबित हो जाता है कि 'हमारे बीच विद्यमान देवात्माएँ अपना अस्तित्व प्रकट नहीं होने देतीं'। जल्दी न मचाओ, मुझे सोचने दो। ओह, अब समझ में आया—पिछली गरमियों में यह बालक—यह सच्चा सम्राट—सख्त बीमार पड़ गया। तीन दिन, तीन रात बेहोश पड़ा रहा। होश में आया, तो स्वर्णमुख बन चुका था! शुरू में किसी को पता न चला। बाद में शरदोत्सव के मौके पर वह भी दूसरे लोगों के साथ कचालू खोदने गया। वहाँ एक बड़ी-सी चट्टान रास्ता रोके खड़ी थी। स्वर्णमुख ने उसे सम्बोधित करते हुए आदेश दिया—'हट जाओ!' और जानते हो क्या हुआ? वह बड़ी-सी चट्टान तुरन्त अपनी जगह से हिली और लुढ़कती हुई रास्ते से अलग हो गई! यह जरूर स्वर्णमुख का ही कमाल था!"

चाओ की बातें सुनने वाले लोग आँखें फाड़कर उसकी ओर देख रहे थे। कुछ लोगों ने माँ के साथ खड़े नन्हे पाओ की क्षीण काया पर नजर डाली, जो सूखकर कंकालमात्र रह गई थी।

"सच्चे सम्राट को इस दुनिया में बहुत पहले ही आ जाना चाहिए था!" किसी ने आह भरकर धीरे से कहा।

आसि को तसल्ली नहीं हुई। बोला, "स्वर्णमुख ने और क्या कहा, चाओ भैया? जरा बताओ तो।"

लेकिन चाओ केवल शून्य दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा। उसका मुँह खुला रह गया। चाओ एक सीधा-सादा ग्रामीण था, जो सिर्फ उतनी ही बात बता सकता था जितनी वह जानता था, उससे ज्यादा एक भी शब्द नहीं कह सकता था। किसी बात को नमक-मिर्च मिलाकर लच्छेदार भाषा में पेश करने की क्षमता उसमें न थी। कुछ रुककर वह फिर बोल पड़ा :

"सभी गाँवों में चर्चा है कि सच्चे सम्राट ने अवतार ले लिया है! वह बारह साल का हो गया है—ठीक नन्हे पाओ के बराबर!"

"सिर्फ बारह साल का? जब तक वह गद्दी पर बैठेगा, तब तक तो हमारी हड्डियाँ गल चुकी होंगी!" आसि की पत्नी बोल पड़ी। उसके कन्धे झुके हुए थे, मानो वह ठण्ड से ठिठुर रही हो।

होह्ना को झगड़ा मोल लेने का मौका मिल गया। वह तपाक से बोली : "कौन कहता है तब तक हमारी हड्डियाँ गल चुकी होंगी? हो सकता है, वह जल्दी ही गद्दी पर बैठ जाये! भाग्य उसका साथ दे! जिन सम्राटों का भाग्य अच्छा होता है, वे ग्यारह-बारह बर्ष की उम्र में भी गद्दीनशीन हो जाते हैं। अगर हमें तेरी हड्डियाँ गलने तक इन्तजार करना पड़ा, तो हम सब उससे पहले ही मर चुके होंगे और कब्र में पहुँच चुके होंगे।"

"मालूम होता है, तू भी स्वर्णमुख बन गई है!" आसि की पत्नी बोली। "बेशर्म, छिनाल कहीं की!" हालाँकि मन ही मन वह महसूस कर रही थी कि होह्ना शायद ठीक कह रही है, लेकिन इतने सारे लोगों के सामने यह मानने को हरगिज तैयार न थी।

दोनों फिर एक बार वाग्युद्ध छेड़ने की तैयार करने लगीं। लेकिन पुजारी ह्वाङ ने स्थिति को सम्भाल लिया।

"हमें आपस में नहीं लड़ना चाहिए," उसने अनुरोधपूर्वक सलाह दी। फिर चाओ से पूछा, "छीच्यापाङ यहाँ से कितनी दूर है? शायद नौ ली भी नहीं है, ठीक है ना? इसका अर्थ यह है कि हमारा गाँव भी 'रक्तिम आलोक' के क्षेत्र में है! कुछ दिन पहले पुल के पास वाले छोटे मन्दिर की देवमूर्ति की आँखों से आँसू झरने लगे थे और सोते का पानी लाल हो गया था। जरूर कोई मुसीबत आने वाली है, और जल्दी ही आने वाली है! छः महीने, सालभर से पहले ही आने वाली है! मेरी बात गाँठ बाँध लो!"

उसके अन्तिम शब्द उल्लू की आवाज की तरह गूँजने लगे। सुनने वाले काँप

उठे। आशा को भय ने दबोच लिया। उनकी आँखों के सामने फूस की वे प्रतिमाएँ नाच उठीं जिन पर कागज की पर्चियाँ लगी हुई थीं। जिन लोगों ने पचास ताँबे के सिक्के दिए हुए थे, उन्होंने राहत की साँस ली और पुजारी ह्वाङ की तरफ सम्मानभरी नजरों से देखने लगे।

"पिछले कुछ दिनों में तीन पेड़ और कट चुके हैं!" उत्तर दिशा में चाङ परिवार के कब्रिस्तान के हरेभरे भूखण्ड की ओर देखती हुई होह्वा बुदबुदायी।

हर आदमी ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। कुछ लोगों ने हल्की-सी आह भरी।

चाओ को यह उम्मीद न थी कि सच्चे सम्राट के बारे में उसकी कहानी से इतना गम्भीर बखेड़ा खड़ा हो जायेगा। वह डर गया। पत्नी के बार-बार कहने पर भी उसने अभी तक फूस की प्रतिमा पर अपनी जन्मपत्री नहीं लगाई थी। इस सम्बन्ध में दोनों के बीच झगड़ा भी हो चुका था। पर आज उसे एहसास हो रहा था कि अगर इसके लिए पैसा खर्च कर लेता तो अच्छा ही था। हालाँकि पचास ताँबे के सिक्के कोई छोटी रकम न थी, फिर भी वह इस रकम का बन्दोबस्त कर सकता था। गाँव के 'सुरक्षा दल' के लिए—जो धनी लोगों द्वारा संचालित एक प्रकार का मिलिशिया दल था—पिछले महीने का शुल्क वह अभी नहीं दे पाया था। क्यों न अगले महीने का शुल्क भी रोक दिया जाये? क्या इस तरह वह काफी रकम नहीं जुटा सकेगा?

इस तरह सोचने वाला अकेला चाओ ही न था। बहुत से दूसरे के लोग भी 'सूरक्षा दल' के शुल्क को पुजारी ह्वाङ की फूस की प्रतिमाओं के चरणों में अर्पित कर चुके थे। उन्होंने साफ-साफ दलील दी थी—'सुरक्षा दल' का शुल्क हर महीने अदा करना पड़ता है, जबकि पुजारी ह्वाङ का शुल्क सिर्फ एक बार देना होता है। यही नहीं, उन्हें इस बात का भी यकीन न था कि गाँव के बाहर कोई तीन ली के फासले पर वसुन्धरा के मन्दिर में पड़ाव डालने वाली 'सुरक्षा दल' की 'संयुक्त हथियारबन्द कम्पनी' आपातकाल में उपयोगी साबित हो सकती है। हथियार के नाम पर कम्पनी के पास केवल तीन राइफलें थीं और उसके पूरे अमले में एक कैप्टन, एक सारजेण्ट और एक सिपाही था। गाँव वाले अच्छी तरह समझते थे कि पुजारी ह्वाङ की फूस की तीन प्रतिमाएँ इन तीनों योद्धाओं से कहीं अधिक श्रेष्ठ रक्षक साबित होंगी।

साथ ही वे लोग यह भी अच्छी तरह समझते थे कि 'संयुक्त हथियारबन्द कम्पनी' उनकी किसी चीज की रक्षा करने के लिए नहीं है। ये तीनों राइफलधारी यहाँ गरमियों के अन्त में आये थे। उन दिनों किसानों के पास खाने को एक भी दाना नहीं बचा था और वे मजबूर होकर चावल के गोदामों पर धावा बोल रहे थे। भूखे-नंगे लोगों के पास आखिर ऐसी कौन-सी सम्पति थी जिसकी रक्षा करने की जरूरत थी?

तथापि 'संयुक्त हथियारबन्द कम्पनी' बहुत से मामलों में टाँग अड़ाती रहती थी और बेहद मुस्तैदी से काम करती थी। हालाँकि सरदी के कारण कम्पनी के सदस्य पूरे दिन वसुन्धरा के मन्दिर में ही पड़े रहते थे, फिर भी वे छीच्यापाङ गाँव में अवतार लेने वाले सच्चे सम्राट के बारे में और पुजारी ह्वाङ की फूस की तीन प्रतिमाओं के बारे में सब कुछ जानते थे। यहाँ तक कि उस दिन चाओ और अन्य लोगों ने खलिहान में जो कुछ कहा था उसकी खबर भी उनके पास पहुँच चुकी थी।

इतना ही नहीं, 'संयुक्त हथियारबन्द कम्पनी' को यह भी मालूम था कि बहुत से गाँववासी 'सुरक्षा दल' के शुल्क को फूस की प्रतिमाओं पर जन्मपत्रियाँ लगाने का अधिकार प्राप्त करने के लिए खर्च कर चुके हैं!

चाओ के आश्चर्यजनक ऐलान के चार दिन बाद 'संयुक्त हथियारबन्द कम्पनी' ने छीच्यापाङ पर धावा बोल दिया और स्वर्णमुख बालक को गिरफ्तार करके "पूछताछ के लिए" वसुन्धरा के मन्दिर में ले आये।

दोपहर का समय था। आसमान घटाटोप काले बादलों से घिरा था। हल्की-हल्की फुहार पड़ रही थी और उसके बरफबारी में बदलने की सारी सम्भावनाएँ मौजूद थीं। मन्दिर के भीतर काफी अँधेरा था। पूरी कम्पनी–यानी एक कैप्टन, एक सारजेण्ट और एक सिपाही–काफी लम्बा कूच करने के बाद थककर चूर हो गये थे। कैप्टन ने आदेश दिया कि गिरफ्तार बालक को मिट्टी की देवमूर्ति के पैर से बाँध दिया जाये। उसने सारजेण्ट को ड्यूटी अफसर नियुक्त कर दिया और सिपाही को दरवाजे पर पहरा देने के लिए तैनात कर दिया। उसने सोचा कि वह इस गिरफ्तारी की रिपोर्ट अगले ही दिन ऊपर के अधिकारियों को भेज देगा और उनसे फौरन आदेश देने का अनुरोध करेगा।

'सच्चा सम्राट' मिट्टी की देवमूर्ति के चरणों में बैठा सुबक-सुबक कर रो रहा था।

अपनी वर्दी की जेब से एक मुड़ी हुई सिगरेट निकालकर कैप्टन ने बड़ी सावधानी से उसे सीधा किया। फिर सिगरेट सुलगाकर एक गहरा कश खींचा और धुआँ छोड़ता हुआ ड्यूटी अफसर से बोला : "हमने यह मामला सुलझा लिया है। तुम्हारा क्या ख्याल है? हम लोगों को कितना इनाम मिलेगा?"

"इनाम? इसकी उम्मीद करना बेकार है!" ड्यूटी अफसर ने उदासीनता से उत्तर दिया। "सुना है, हमारी बटालियन में अभी जाड़ों की वर्दी भी नहीं बाँटी गयी।"

कैप्टन की त्यौरियाँ चढ़ गयीं। सिगरेट मुँह में लगाकर उसने एक गहरा कश और खींचा।

अँधेरा पहले से ज्यादा गहरा होता जा रहा था। ड्यूटी अफसर ने तेल का लैम्प जला दिया। वह पहरे के लिए तैनात सिपाही को रात का खाना बनाने के लिए ड्यूटी से मुक्त करने जाने ही वाला था कि कैप्टन अचानक उठ खड़ा हुआ। लैम्प

हाथ में उठाकर वह 'सच्चे सम्राट' के चेहरे के पास ले गया और उसके मद्धिम प्रकाश में उस निरीह बालक को गौर से देखने लगा।

"अच्छा, तो तू सम्राट बनना चाहता है?" उसने धमकीभरे स्वर में कहा। "जानता है, इस अपराध में तेरा सिर उड़ाया जा सकता है? हाँ, सिर उड़ाया जा सकता है! समझा कि नहीं?"

लड़का चुप रहा। वह इतना डर गया था कि उसे रोने का साहस भी नहीं हो रहा था।

"बताता क्यों नहीं? तेरे गिरोह में और कौन-कौन है? जल्दी बोल!" ड्यूटी अफसर जोर से चिल्लाया। वह भी कैप्टन के करीब आ पहुँचा था।

उत्तर में लड़के ने केवल सिर हिला दिया।

कैप्टन क्रोध से आगबबूला हो उठा। उसने लैम्प नीचे रख दिया और लड़के के सामने के बाल पकड़कर उसका सिर पीछे की तरफ धकेल दिया। ऊपर की तरफ उठे हुए उसके दुबले-पतले, मलिन चेहरे को बड़ी क्रूरता से घूरता हुआ कैप्टन जोर से चिल्लाया :

"बोलता क्यों नहीं? क्या बहरा हो गया है? तेरे गिरोह में और कौन-कौन है? बोल! अगर बता देगा, तो मार नहीं पड़ेगी!"

"मैं कुछ नहीं जानता। जंगल से ईंधन बटोरने और जड़ी-बूटियाँ चुनने के सिवाय मैं और कुछ नहीं जानता। लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं, यह मैं नहीं जानता।.. बस, मैं सिर्फ इतना ही जानता हूँ।"

"झूठ क्यों बोलता है, हरामजादे!"

कैप्टन थोड़ी-थोड़ी देर बाद लड़के का सिर देवमूर्ति के पैर पर पटकता रहा और वह निरीह बालक बलि के बकरे की तरह मिमियाता रहा। देवमूर्ति के पैर से झड़कर मिट्टी और धूल उसके सिर पर गिरती जा रही थी।

ड्यूटी अफसर अपने दोनों हाथ पीठ से सटाए देवमूर्ति की सफेद दाढ़ी के भग्नावशेष पर नजर गड़ाए था। वह जानता था कि कैप्टन का इरादा क्या है, पर साथ ही यह भी जानता था कि यह लड़का निहायत बेवकूफ है। जब तक कैप्टन अपना पूरा गुस्सा नहीं उतार चुका, तब तक ड्यूटी अफसर प्रतीक्षा करता रहा। और जब कैप्टन अपनी पूरी भड़ास निकाल चुका, तो ड्यूटी अफसर ने उसकी वर्दी का एक कोना खींचकर उसके कान में धीरे से कुछ कहा। दोनों एक तरफ चले गये और धीमी आवाज में एक दूसरे से मशविरा करने लगे।

चोट की वजह से लड़के के सिर पर जगह-जगह गूमड़े उभर आए थे। डर के मारे उसके आँसू सूख चुके थे और बड़ी-बड़ी आँखें एकदम सहम गई थीं।

"कल पुजारी ह्वाङ को गिरफ्तार करके यहाँ लाना होगा। तब कुछ किया जा सकेगा।" ड्यूटी अफसर ने इन शब्दों के साथ अपनी बात खत्म की।

कैप्टन ने मुस्कराकर सहमति में सिर हिला दिया और फिर एक बार लड़के के पास जा पहुँचा। अब उसके चेहरे से खूँखारपन नहीं बल्कि कृत्रिम सौजन्य टपक रहा था।

"हमने तेरे साथ बड़ी ज्यादती की है, बच्चे! कल तुझे घर भेज देंगे। लेकिन पहले यह तो बता, तेरे गाँव में धनी लोग कौन से हैं? अगर नहीं बताएगा तो मेरे हाथ से फिर मार खाएगा!" कैप्टन का चेहरा फिर एक बार खूँखार हो उठा। उसने अपना पाँव उठाया और जोर से जमीन पर पटक दिया।

लड़का थरथर काँपने लगा। उसने अपना सिर उठाया। एक क्षण के लिए उसकी सारी देह में कँपकँपी दौड़ गई। पर मुँह से एक भी शब्द न निकला। उसने केवल सिर हिला दिया और रोने लगा।

"अबे ओ हरामखोर!" कैप्टन गरजता हुआ बोला। "जब तक तेरी पिटाई नहीं होगी, तू नहीं बोलेगा!"

ड्यूटी अफसर ने छड़ी हाथ में उठा ली और कैप्टन के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा।

सहसा मन्दिर के बाहर से जोर-जोर से चिल्लाने की आवाजें आने लगीं।

कैप्टन और ड्यूटी अफसर ने मुड़कर दरवाजे की तरफ देखा। उनका सन्तरी दोनों हाथ सिर पर रखकर तेजी से अन्दर की तरफ आ रहा था। काले रंग की कुछ आकृतियाँ उसका पीछा कर रही थीं और उसके बिल्कुल निकट पहुँच गई थीं। ड्यूटी अफसर ने हाथ की छड़ी फेंक दी और देवमूर्ति के सिंहासन के बगल में बने एक छोटे-से दरवाजे से भाग खड़ा हुआ। पर कैप्टन बुजदिल नहीं था। वह कमरे की दीवार पर लटकी राइफल उठाने के लिए लपका। अभी उसका हाथ राइफल तक पहुँच भी न पाया था कि किसी ने उसे पीछे से दबोच लिया। तभी बेलचे की मूठ का एक भीषण आघात उसकी खोपड़ी पर पड़ा और वह वहीं ढेर हो गया।

फ़ूछिङ ने सन्तरी को पकड़ लिया और उसकी कारतूसों की पेटी छीन ली।

"एक आदमी भाग गया है!" आत्वो अपने चेहरे को कपड़े से पोंछता हुआ चिल्लाया। उसका शरीर कैप्टन के खून से लथपथ हो गया था।

"पर तीनों राइफलें और सारे कारतूस तो हमारे हाथ लग गये हैं। जो भाग गया, उसे माफ कर दो!" 'तेंदुआ ली' बोला।

तीनों किसान हँस पड़े।

आत्वो ने रस्सी खोलकर 'सच्चे सम्राट' को मुक्त कराया। फिर लैम्प हाथ में उठाकर उसके चेहरे को देखा। लड़का दहशत खाकर जमीन पर गिर पड़ा। उसकी आँखें खुली थीं और दाँत किटकिटा रहे थे। फूछिड़ और 'तेदुआ ली' बालक को फर्श से उठाकर हाथ से उसका सीना मलने लगे। कुछ ही क्षणों वह होश में आ गया और जोर से रो पड़ा।

लैम्प रखकर आत्वो मुस्करा दिया। "अच्छा, तो तुम हो सच्चे सम्राट! जाओ, भाग जाओ अपने घर !"

मन्दिर के फाटक के बाहर बढ़ती साँय-साँय की आवाज के साथ एक बरफीला झँझवात उमड़ता जा रहा था।

1 जुलाई, 1933

# अभागिन

1

उसका असली नाम लिङ था या लिन, यह कोई नहीं जानता था। ऐसे लोगों का कोई निश्चित कुलनाम नहीं होता। लोग उन्हें जिस नाम से चाहें पुकार सकते हैं।

वह जब इस घर में आई, तो सबसे पहले सीधे लाओ थाएथाए* का अभिवादन करने जा पहुँची। वह वयोवृद्ध महिला उस समय सिंघाड़े खा रहीं थी, जिन्हें उसकी पोती के पति ने भेजा था। युवती को अन्दर आते उसने नहीं देखा। उसके आने का पता लाओ थाएथाए को सिर्फ तब चला जब उसने अचानक उसके सामने झुककर बड़े आदर के साथ प्रणाम किया। लाओ थाएथाए अचम्भे में पड़ गई। पहली ही मुलाकात में इस तरह अचम्भे में पड़ने की घटना को वह एक अपशकुन मानती थी। उसे बहुत बुरा लगा। यही नहीं, युवती की आधुनिक केशसज्जा, उसकी घुँघराली जुल्फें, बुजुर्ग महिला की आँखों को जरा भी न भाईं। हालाँकि लाओ थाएथाए की बहू कई वर्ष पहले ही मर चुकी थी और घर में उसका स्थान अब भी रिक्त था, फिर भी वह इस युवती को अपने बेटे की "पत्नी" मानने को तैयार न हुई। सिंघाड़े खाते-खाते लाओ थाएथाए ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में उसे "मिस लिङ" नाम दे दिया।

इस तरह उसका नाम मिस लिङ पड़ गया! परिवार की बूढ़ी माँ ने उसे यह नाम खुद ही दिया था। स्थानीय रिवाज के अनुसार, सोलह-सत्रह वर्ष की लिङ या लिन—उसका नाम चाहे जो भी रहा हो—तब से लाओ थाएथाए के बेटे की रखैल बन गई।

मिस लिङ की माँ शाङहाए में रहती थी। जब बड़ा बाबू यानी उसका मौजूदा पति किसी काम से शाङहाए गया था, तो उसने मिस लिङ की माँ से कहा था : "आज से हम दोनों एक-दूसरे के सम्बन्धी बन गये हैं।" यह बात उसने मिस लिङ के साथ रात बिताने के बाद ही कही थी। इस सुन्दर युवती से उसकी मुलाकात एक डिपार्टमेण्ट स्टोर में हुई थी। मिस लिङ का कोई भाई न था। वह अपनी बूढ़ी माँ का एकमात्र सहारा थी। यह बात मिस लिङ ने शाङहाए छोड़ने से पहले बड़े

---

* एक आदरसूचक शब्द, जिसे घर की अधेड़ या बूढ़ी मालकिन के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

बाबू को बता दी थी।

लेकिन अब स्थिति बदल चुकी थी। लाओ थाएथाए ऐसे "सम्बन्धियों" को मान्यता देने को तैयार न थी। बड़ा बाबू अपन वायदे को बिल्कुल भूल चुका था। जब भी मौका मिलता, मिस लिङ उसे बताती कि शाङहाए में उसकी माँ कठिन स्थिति का सामना कर रही होगी। लेकिन यह बस वह एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता। और कभी-कभी उसे घूरता हुआ झुँझलाकर कह देता :

"एक बूढ़ी स्त्री को आखिर कितने खर्च की जरूरत होती है! अभी कुछ ही महीने तो हुए हैं। मेरे दिए तीन सौ य्वान इतनी जल्दी कैसे खत्म हो सकते हैं?"

उसके इस उपहास का पता जब लाओ थाएथाए को लगा, तो वह बहुत नाराज हुई। परिवार की एक पुरानी नौकरानी की उपस्थिति में उसने बेटे को खूब फटकार लगाई :

"शाङहाए की गलियों से उठाई गई इस सड़ियल औरत के लिए तीन सौ य्वान क्यों दे आया रे? ऐसी चीजों में तू पानी की तरह पैसे बहा देता है! लेकिन जब तेरी अपनी बेटी की शादी हुई, तो तूने तीन सौ य्वान से भी कम खर्च किए। उसके लिए जो सूटकेस लाया वह नकली चमड़े का था। उसका ढक्कन उसी दिन अलग हो गया था। बेटी के ससुराल वाले हमें आज भी कोसते हैं। यह कितने अपशकुन की बात थी! बेचारी तीन बच्चे जन चुकी है, पर एक भी सौ दिन से ज्यादा नहीं बच पाया! तू भी खूब है! 'काला' माल* बेचकर चाँदी के कुछ टुकड़े कमा लाता है और सारे पैसे पुरानी लत में उड़ा देता है! हे भगवान! मेरा बेटा कैसी फूहड़ औरत के चक्कर में पड़ गया है! इस चुड़ैल पर बिजली क्यों नहीं गिर जाती!"

लाओ थाएथाए अपने बुरे मिजाज के लिए बदनाम थी। उसका बेटा भी उससे डरता था। अब तो वह भी महसूस करने लगा था कि मिस लिङ की कीमत तीन सौ य्वान के लायक नहीं है। उसे लग रहा था कि वह दरअसल इसी कस्बे की उस महिला से बेहतर नहीं है जिसके साथ उसके ताल्लुकात थे। इतने पैसे गँवाने और लाओ थाएथाए की तेज-तर्रार फटकार सुनने पर उसे बड़ा पछतावा हो रहा था जिसे बड़े बाबू ने मिस लिङ को लात-घूँसों से सिखाया था... "मिस" लिङ बने उसे अभी सिर्फ दो ही महीने तो हुए थे!

बेशक, मिस लिङ की सुन्दरता अब वैसी नहीं रह गई थी जैसी शाङहाए से आने के पहले दिन थी। कस्बे में हेयर-ड्रेसर की कोई दुकान न थी और बालों को सजाने व घुँघराले बनाने का कोई इन्तजाम न था। मिस लिङ की आधुनिक घुँघराली जुल्फें तकिए के दबाव के कारण काफी पहले ही सीधी ही चुकी थीं। अब उसने अपने बालों को बत्तख की पूँछ की तरह एक ही गुच्छे में पीछे की तरफ बाँधना शुरू कर दिया था। कस्बे की दूसरी लड़कियों और उसके रूप-लावण्य में अब कोई

* अफीम।

फर्क नहीं रह गया था। उसकी लिपस्टिक खत्म हो चुकी थी, भौंहें बनाने की चिमटी टूट चुकी थी। इन चीजों को कस्बे में खरीदना सम्भव न था। बड़ा बाबू ये सब चीजें शाङहाए से खरीदने को तैयार न था, हालाँकि वह अक्सर शाङहाए जाता रहता था। इस तरह मिस लिङ की सुन्दरता दिन-ब-दिन फीकी पड़ती जा रही थी। अब कोई नहीं कह सकता था कि वह एक अनन्य सुन्दरी है।

तभी बड़े बाबू को मिस लिङ के एक ऐसे रहस्य का पता चला जिसके कारण वह उसकी नजरों में और ज्यादा गिर गई। जब बड़े बाबू ने मिस लिङ की पहली बार पिटाई की उसके ठीक दो दिन बाद उसके बेतहाशा शराब पी ली और अगले रोज काफी दिन चढ़ने के बाद भी शयनकक्ष में उसके साथ रंगरेलियाँ मनाता रहा। अचानक उसकी नजर मिस लिङ के पेट की त्वचा पर अंकित सफेद रेखाओं पर पड़ी—कहा जाता है ऐसी रेखाएँ उन्हीं स्त्रियों के पेट पर होती हैं जो बच्चा जन चुकी हों। बड़े बाबू का शराब का नशा काफी उतर चुका था। यह देखते ही वह पूरा उतर गया। अचानक वह उछल पड़ा और उसने मिस लिङ को जमीन पर पटककर उसके मुँह पर जोर से दो तमाचे जड़ दिए।

"बदचलन कहीं की!" वह दाँत पीसकर बोला। "मैं तो समझता था कि तू बिल्कुल पाकदामन है! शाङहाए में पहली रात तूने कैसा नाटक रचा था!"

मिस लिङ सहम गई। उसके मुँह से एक भी शब्द न निकला। केवल सिसक-सिसक कर रोती रही।

भरी दुपहरी में शयनकक्ष के अन्दर बड़े बाबू और मिस लिङ की प्रेमलीलाओं की खबर जब लाओ थाएथाए के धार्मिक कानों में पड़ी, तो मिस लिङ की मुश्किलें ओर बढ़ गयीं। उसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खरी-खोटी सुनाना लाओ थाएथाए की दिनचर्या बन गई थी। कभी-कभी वह क्रोध से इतनी पागल हो जाती कि बौद्ध धर्म के नियमों को भूलकर वर्जित दिनों में भी मांस खा बैठती। और जब उसे अपनी भूल का एहसास होता, तो आवेश में आकर मेज पर मुक्के मारने लगती, कुर्सियाँ पटकने लगती मिस लिङ पर गालियों की बौछार करने लगती। यह देखकर मिस लिङ सहम जाती। अगर नेवला मुर्गी चुरा लेता, तो लाओ थाएथाए उसका दोष भी मिस लिङ के ही मत्थे मढ़ देती। मिस लिङ की तरफ उँगली उठाकर वह जोर-जोर चिल्लाने लगती :

"अरी ओ कलमुँही! क्या तू नहीं जानती कि भरी दुपहरी में यह सब करना कितना बड़ा पाप है! तेरी ही बदौलत नेवला हमारी मुर्गी उठा ले गया! सूर्य देवता को अपमानित करके तूने जो पाप किया है उसकी सजा तुझे जरूर मिलेगी! तू जरूर कुत्ते की मौत मरेगी! बशर्म-बेहया कहीं की!"

## 2

बड़े बाबू को अपने कारोबार के सिलसिले में हर महीने कम से कम एक बार शाङ्हाए जरूर जाना पड़ता था। हर फेरे में तीन से सात दिन का समय लगता था। पर किसी का कानोंकान खबर न लगती थी उन दिनों मिस लिङ एक ऐसे व्यक्ति से भी ज्यादा खुश नजर आती थी जिसे फाँसी का फन्दा चूमने से पहले कुछ दिनों की मोहलत दे गई हो। हालाँकि लाओ थाएथाए की रात-दिन की गाली-गलौज उन दिनों की तुलना में कहीं ज्यादा दुखदायी होती जिन दिनों बड़ा बाबू घर में रहता, फिर भी इस दौरान मिस लिङ कम से कम उन घटनाओं से तो मुक्त रहती जो उसे दिन-ब-दिन अधिकाधिक आतंकित करती जा रही थीं।

छोटा बाबू भी, जो मिस लिङ की ही उम्र का था, अपने पिता की ही तरह पक्का लम्पट और अय्याश था। छोटी नौकरानी शिङअड़ उसे देखते ही इस तरह डर जाती मानो चुहिया बिल्ली को देखकर थरथर काँप रही हो। अगर आसपास कोई न होता तो छोटा बाबू मिस लिङ से भी छेड़खानी करने में न चूकता। वह उँगली से उसकी हथेली को कुरेदने लगता, उसके गालों को सहलाने लगता या स्तनों पर हाथ फेरने लगता। मिस लिङ में इतना साहस नहीं था कि शोर मचा देती। उसका चेहरा लाल हो जाता और वह उठकर दूर चली जाती। छोटा बाबू आँखें गड़ाकर उसकी ओर देखता रहता, पर उसके पीछे दौड़ने की कोशिश न करता।

उसके लिए सबसे ज्यादा कठिन काम था बड़े बाबू के दामाद से निपटना—वह बड़े बाबू की उस बेटी का पति था जिसकी चर्चा लाओ थाएथाए अक्सर किया करती थी। उसका चेहरा देखते ही मिस लिङ बता सकती थी कि वह भी बड़े बाबू की ही तरह दुराचारी है। वह भी उसे "मिस लिङ" कहकर ही पुकारता था। लाओ थाएथाए जैसी पैनी नजर वाली बुढ़िया की उपस्थिति में भी वह मेज के नीचे मिस लिङ की जाँघ पर चुटकी काटने की गुस्ताखी कर बैठता था। मिस लिङ उस बदमाश से वैसे ही कन्नी काटती थी जैसे शिङअड़ छोटे बाबू से।

दामाद स्थानीय पुलिस विभाग में काम करता था। जिन दिनों बड़ा बाबू कस्बे से बाहर होता, उन दिनों दामाद अपनी ससुराल वालों की मिजाजपुर्सी में बड़ा सक्रिय हो जाता। कमर में चमड़े को खोल लटकाए वह अक्सर ससुराल जा पहुँचता। मिस लिङ जानती थी कि खोल के अन्दर रिवाल्वर है। डर के मारे उसका पसीना छूट जाता और दिल तेजी से धड़कने लगता। ऐसे मौकों पर उसे लगता, बड़े बाबू का घर में उपस्थित रहना इससे बेहतर है, यहाँ तक कि वह उसके लौटने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगती।

कस्बे में एक 'सुरक्षा दल' भी था, जिसे स्थानीय शरीफजादों और जमींदारों ने तथाकथित "लूटपाट करने वाले डाकूओं" से रक्षा करने के लिए कायम किया था। बड़ा बाबू इस "दल" का "निदेशक" था। जब भी वह शाङ्हाए से "माल" लेकर

लौटता, उसके "कैप्टन" रिपोर्ट देने आ पहुँचते। वे दो थे। मौका पाते ही उन दोनों की प्यासी आँखें भी मिस लिङ के रूप-लावण्य का भरपूर रसपान करने लगतीं।

बड़ा बाबू शाङहाए के हाल के दौरे से लौटने के बाद अपने कमरे में दोनों कैप्टनों के साथ परामर्श कर रहा था। एक तरफ चटाइयों में लिपटे दो बड़े-बड़े पैकेट रखे थे। ये शाङहाए यात्रा के फल थे। दोनों कैप्टन उसके साथ कुछ देर परामर्श करते रहे। सहसा बड़ा बाबू तैश में आ गया :

"वह बदमाश कुछ भी किए-धरे बिना बीस फीसदी ले जाता है, फिर भी उसे चैन नहीं है!" वह जोर से चिल्लाया। "और अब गड़बड़ी पैदा करना चाहता है? उसके आदमी भला हमसे क्या लड़ेंगे—खाजभरी खोपड़ी वाले वे चूहे! अगर वे लोग कड़ा रुख अपनाते हैं, तो हम भी अपना सकते हैं। कल स्टीमर से नदी के घाट पर सौ चिन माल पहुँचेगा। तुम लोग उसकी रक्षा करने पहुँच जाना। अगर उन लोगों को यही मंजूर है, तो हम भी जमकर लोहा लेंगे। शुरुआत वही कर रहे हैं!... कल सुबह पाँच बजे! सुबह जल्दी उठना होगा। यह हमारा सामाजिक कर्तव्य है। छोटी-मोटी मुसीबतों से हमें घबराना नहीं चाहिए?"

"हमारे आदमी..." एक कैप्टन ने जरा संकोच से बात शुरू की।

"जब हम जीत जायेंगे," बड़ा बाबू उसकी बात काटता हुआ बोला, "तो हर एक को दो औंस अफीम मिलेगी!" उसके स्वर में अब भी आक्रोश भरा था।

मिस लिङ दरवाजे के पास कान लगाकर सुन रही थी। अचानक किसी ने उसकी बाँह पर चुटकी काटी, तो वह दहशत खा गई। वह चीखने ही वाली थी, पर समय रहते उसने अपने का सम्भाल लिया। चुटकी दामाद ने काटी थी, जिसकी आँखों में वासना की आग धधक रही थी। लगता था जैसे उसे एक ही ग्रास में निगल जायेगा। दरवाजे के दूसरी तरफ पास ही बड़ा बाबू बैठा था! मिस लिङ का दिल तेजी से धड़कने लगा।

अपने को प्रयत्नपूर्वक सम्भालता हुआ दामाद बगल के कमरे में जा पहुँचा और कुछ देर तक धीमी आवाज में बड़े बाबू के कान में कुछ फुसफुसाता रहा।

"साला कुतिया की औलाद है!" बड़े बाबू का कर्कश स्वर मिस लिङ के कानों में पड़ा। "हम उसे मजा चखाकर रहेंगे! कल सुबह मैं भी वहाँ पहुँच जाऊँगा!"

दामाद ने एक रहस्यपूर्ण ठहाका मारा, जो उल्लू की आवाज की तरह मिस लिङ के कान के पर्दों से जा टकराया।

उस दिन साँझ के पहले ही बड़े बाबू के चेहरे का रंग लोहे की तरह काला-स्याह पड़ चुका था। वह बहुत कम बोल रहा था और लगभग मौन बैठा था। सहसा उसने अपनी पिस्तौल निकाली, उसका सावधानी से मुआयना किया, उसमें गोली भरी और निशाना साधने का अभ्यास शुरू कर दिया। जब कभी मिस लिङ उसके पास से गुजरती, तो वह घबराहट के मारे थरथर काँपने लगती। रात का खाना खाने

से पहले ही बड़ा बाबू पिस्तौल उठाकर बाहर चला गया। मिस लिङ को ऐसा लग रहा था मानो किसी ने कोई भारी पत्थर उसकी छाती पर रख दिया हो। वह बेहद डरी हुई थी।

लाओ थाएथाए एक छोटे-से पूजामण्डप में बुद्ध भगवान की मूर्ति के सामने बैठी तेजी से माला जप रही थी और मंत्रपाठ कर रही थी। काँसे के एक छोटे-से धूपदान में चन्दन की लकड़ी जल रही थी।

रात के कोई ग्यारह बजे बड़ा बाबू घर लौट आया। उसका चेहरा पीला-जर्द था, आँखें लाल-सुर्ख थीं और पहले से कुछ छोटी लग रही थीं। सिर पसीने से तर था और मुँह से शराब की बू आ रही थी। पिस्तौल निकालकर उसने मेज पर पटक दी। मिस लिङ ने काँपती उँगलियों से कपड़े उतारने में उसकी मदद की। अचानक उसने एक भीषण अट्टहास किया और मिस लिङ को गोद में उठाकर बिस्तर पर पटक दिया। वह पहले भी कई बार ऐसा कर चुका था। पर इस बार उसने यह सब बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से किया। मिस लिङ बिल्कुल नहीं समझ पाई कि उसके मन में क्या है। वह जरा भी हिलेडुले बिना चुपचाप पड़ी रही, बिल्कुल निश्चल। बड़ा बाबू उसके करीब जा पहुँचा और दायें हाथ में चमकदार काली पिस्तौल उठाकर बायें हाथ से उसे निर्वस्त्र करने लगा। मिस लिङ के हाथ-पाँव फूल गये। वह विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखती रही। जब वह पूर्ण निर्वस्त्र हो गई, तो बड़े बाबू ने पिस्तौल की ठण्डी नली उसकी नंगी छाती पर रख दी। मिस लिङ इतनी जोर से काँप उठी कि सारा पलँग हिलने लगा।

"पहले मैं तुझे ही निशाना बनाकर गोली दागने का अभ्यास करूँगा," बड़े बाबू की आवाज उसके कानों में पड़ी। "जरा देख, मेरी पिस्तौल में कितना दम है!"

मिस लिङ को लगा, जैसे उसके कानों में बादल गरज रहे हों। आँखों से अश्रुधार बहने लगी।

"क्यों री, क्या मरने से डरती है? मगर फिक्र न कर। मैं कुछ देर तेरे साथ अभी और खिलवाड़ करूँगा!"

एक भीषण अट्टहास करने के बाद बड़ा बाबू बिस्तर में लुढ़क गया और खर्राटे मारने लगा।

मिस लिङ सिकुड़कर पलँग के एक कोने में लेटी रही। डर के मारे उसकी नींद बिल्कुल गायब हो गई। वह लाख कोशिश करने पर भी न सो सकी। उसने सोचा, अगर बड़े बाबू ने पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया होता, तो उसके दुखों का कितनी जल्दी और कितनी सफाई से अन्त हो जाता। उसने चुपचाप पिस्तौल उठा ली, उसे गौर से देखा और आँखें बन्द कर लीं। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। अन्त में उसने पिस्तौल फिर वहीं रख दी। इसमें सन्देह नहीं कि उसका जीवन कटुता से परिपूर्ण था, पर मृत्यु उसके लिए इससे भी भयावह वस्तु थी।

सुबह के कोई तीन बजे थे। कुछ लोगों ने अहाते के फाटक को जोर-जोर से पीटना शुरू कर दिया। बड़े बाबू ने सिर उठाया और एक क्षण के लिए कान लगाकर सुना। वह फुर्ती से खड़ा हो गया, पिस्तौल उठाकर खिड़की के पास जा पहुँचा और खिड़की खोलकर चिल्लाया :

"तुम लोग इतना हल्लागुल्ला किसलिए मचा रहे हो?"

"सब लोग आ गये हैं!" बाहर से एक आवाज आई।

बड़े बाबू ने झटपट फर का लम्बा गाउन पहना, कमर में रेशमी कमरबन्द बाँधा, कमरबन्द में पिस्तौल खोंसी और तेजी से बाहर निकल गया। मिस लिङ ने उसे फाटक के बाहर लोगों से बातें करते और बड़े वहशियाना अन्दाज से सौगन्ध खाते सुना। इसके बाद बड़ा बाबू सबके साथ चला गया।

मिस लिङ खिड़की के पास जाकर आसमान की ओर देखती रही। तारे दूर-दूर बिखरे हुए थे और एक-दो भूरे बादल स्थिर खड़े थे। उसे कँपकँपी महसूस होने लगी। लौटकर फिर बिस्तर में घुस गई। लेटते ही खुमारी आने लगी। बिस्तर में जाने के पहले उसने सोचा था कि अब वह सोएगी नहीं। पर उसकी आँख लग गई और सिर एक तरफ लटक गया। वह सपना देखने लगी : बड़े बाबू ने उसे गोली मार दी है। माँ उसकी लाश गोद में उठाए रो रही है, बिलख-बिलखकर रो रही है।. ..मिस लिङ चौंककर जाग गई। माँ की जगह कोई और ही उसे अपने बाहुपाश में जकड़े हुए था और कामातुर होकर धीरे-धीरे उसके कान में कुछ फुसफुसा रहा था। मिस लिङ की आँखें फैल गयीं। पलँग के पास रखे लैम्प के प्रकाश में आगन्तुक के चेहरे पर नजर पड़ी तो उसका रंग उड़ गया।

"छोटे बाबू, तुम?"

मिस लिङ ने उसे भगाने की पूरी कोशिश की। "अगर यहाँ से फौरन न गये, तो मैं शोर मचा दूँगी!"

"मचा कर देख लो! बुढ़ऊ अफीम की रक्षा के लिए पुलिस से लड़ने बाहर गये हैं और लाओ थाएथाए के कान में जूँ भी नहीं रेंगेगी!" छोटे बाबू ने मिस लिङ का कसकर दबोच लिया। हालाँकि उसकी उम्र अभी सत्रह वर्ष से ज्यादा न थी, फिर भी मिस लिङ के मुकाबल वह काफी तगड़ा था।

"तुम मुझे तबाह कर रहे हो!..." मिस लिङ रो पड़ी। पर अन्त में उसने हथियार डाल दिए।

मेज पर पड़े लैम्प की रोशनी धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही थी और आसमान का रंग मछली के पेट की तरह सफेद होता जा रहा था। बाहर आँगन में मुर्गे ने बाँग दी। पड़ोस के एक अन्य मुर्गे ने उसका अनुकरण किया। शीघ्र ही मीलों तक अनगिनत मुर्गों की बाँग गूँजने लगी।...

गली में लोगों के जोर-जोर से बतियाने की आवाजें निकट आती जा रही थीं।

कुछ ही क्षणों में अहाते से फाटक पर जोर-जोर से प्रहार होने लगे। मिस लिङ बिस्तर से निकलकर शयनकक्ष के दरवाजे की चिटखनी बन्द करने के लिए लपकी। तभी छोटा बाबू हड़बड़ाकर उठ बैठा।

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या?" वह बोला। "जरा ठहरो, मुझे तो यहाँ से निकलने दो!" कह कहता हुए वह तेजी से बाहर चला गया।

मिस लिङ जल्दी-जल्दी कपड़े पहन फौरन बिस्तर में जा पहुँची और सिर से पैर तक लिहाफ में लिपटकर लेट गई। वह थरथर काँप रही थी और हाथ-पाँव समेटकर गठरी की तरह पड़ी थी। बाहर भारी कोलाहल सुनाई दे रहा था। शोरगुल बढ़ता गया और जल्दी ही शयनकक्ष के दरवाजे तक पहुँच गया। मिस लिङ उठ खड़ी हुई। उसने अपने को सम्भाला और दरवाजा खोल दिया। बाहर बड़े बाबू और दामाद समेत पाँच-छः आदमी दिखाई दिए।

दो आदमी बड़े बाबू को उठाए हुए थे। उसका गाउन छाती के पास से खुला था। फर का सफेद अस्तर खून से रंगा हुआ था। बड़े बाबू को बिस्तर पर लिटाने के बाद, दामाद और एक कैप्टन को छोड़कर बाकी सब लोग चले गये। बड़ा बाबू घायल साँड़ की तरह कराह रहा था। कैप्टन ने उसके घाव का मुआयना किया और दामाद से बोला :

"इनके घाव का इलाज कस्बे में शायद ही हो सके। गोली अजीब ढंग से लगी है। बड़े अचम्भे की बात है! दुश्मन हमारे सामने की तरफ था। फिर भी बगल से गोली कैसे लगी? बड़ी हैरानी की बात है! यह कोई भूली-भटकी गोली नहीं थी, बल्कि इन्हीं को निशाना बनाकर चलाई गई थी। जो हो, हमने उस पुलिस कप्तान के बच्चे को अच्छा सबक सिखा दिया!"

पलँग के किनारे पर बैठी मिस लिङ की नजर दामाद पर पड़ी, जो कैप्टन के पीछे खड़ा मन्द-मन्द मुस्करा रहा था।

निचली मंजिल में लाओ थाएथाए आपे से बाहर होकर चीजें इधर-उधर पटक रही थी और लगातार गालियाँ बकती जा रही थी।

"यह इसी के पाप का फल है! सूर्य देवता के अपमान का फल है! यह सब इसी चण्डाल लड़की की बदौलत हुआ है! जिस दिन हमारे घर आई थी, मैं उसी दिन समझ गई थी कि यह बड़ी मनहूस है, बड़ी अभागिन है! बड़े बाबू को हकीम-डाक्टर की जरूरत नहीं है। सिर्फ इस कलमुँही कुतिया को जान से मार दो, तब सब ठीक हो जायेगा! इसे फौरन जान से मान डालो!"

## 3

सुबह के आठ-दस बजे तक कस्बे के लोगों में लुटेरों के खूँखारपन की चर्चा जोरों से होने लगी। व्यापार-मण्डल के प्रधान ने टेलीफोन पर इस मामले की सूचना

काउण्टी अधिकारियों को दे दी। उसने बताया कि पुलिस कप्तान "अपराधियों को पकड़ने की कार्यवाही" में मारा गया है और सुरक्षा दल का निदेशक उनकी "गिरफ्तारी में सहायता" करते समय गम्भीर रूप से घायल हो गया है। काउण्टी अधिकारियों ने जब यह खबर प्रान्तीय सरकार के पास भेजी, तो 'लुटेरे' के बदले 'डाकू' शब्द का इस्तेमाल करते हुए बताया : "डाकुओं की तादाद दो सौ से तीन सौ तक थी। सब पूरी तरह हथियारों से लैस थे। वे लोग अचानक आ धमके और अपराध करने के बाद चम्पत हो गये।" इस सूचना के आधार पर प्रान्तीन अधिकारियों ने डाकुओं का "सफाया" करने के लिए फौज की एक टुकड़ी वहाँ भेज दी।

फौज जिस दिन कस्बे में पहुँची, उसी दिन मुख्य सड़क पर मार्च करने लगी। मिस लिङ ने उसे देखा, तो उलझन में पड़ गई। वह नहीं समझ पाई कि ये लोग बड़े बाबू की मदद करने आए हैं या दामाद की। न जाने क्यों उसे इस बात का पक्का यकीन होता जा रहा था कि बड़े बाबू को गोली दामाद ने ही मारी है। पर यह बात उसने सिर्फ अपने तक ही सीमित रखी थी और छोटे बाबू को भी नहीं बताई थी।

बड़े बाबू का घाव धीरे-धीरे भर गया। पर गोली का एक छोटा-सा टुकड़ा उसकी मांसपेशियों में गड़ा रह गया, हालाँकि ऊपर से जख्म भर चुका था। मिस लिङ को डर था कि वह जल्दी ही ठीक हो जायेगा और पहले की ही तरह उसक साथ फिर जोर-जबरदस्ती करने लगेगा। उसकी वासना की भूख से वह भली-भाँति परिचित थी। इसलिए उससे बहुत डरती थी।

एक दिन अकेले में मिस लिङ ने छोटे बाबू से अनुरोध किया कि वह इस नरक से उसे छुटकारा दिलाने का कोई उपाय सोचे। पर वह अपनी असमर्थता प्रकट करता हुआ सिर्फ हँस दिया।

कुछ दिन बाद बड़े बाबू ने बिस्तर छोड़ दिया और वह चलने-फिरने लगा। मिस लिङ की चिन्ता इतनी बढ़ गई कि उसने खाना-पीना तक छोड़ दिया।

लेकिन बड़े बाबू के दिमाग पर कोई और ही विचार हावी था। उसे मिस लिङ की ज्यादा परवाह न थी। एक कैप्टन बार-बार उससे सलाह-मशविरा करने आता और दोनों गुपचुप बातें करते रहते। बड़ा बाबू बार-बार त्यौरियाँ चढ़ाता रहता। एक बार, जब मिस लिङ बड़े बाबू के लिए अबाबील के घोंसले का शोरबा लेकर आई, तो उसने कैप्टन को यह कहते सुना :

"व्यापार-मण्डल भी परेशान है। उसे रोजाना दो सौ लोगों को भोज देना पड़ता है। यह सिलसिला आधे महीने से ज्यादा समय से चल रहा है। अब तक कोई 30000 य्वान खर्च हो चुके हैं। व्यापार-मण्डल का प्रधान चाहता है ये लोग यहाँ से फौरन चले जायें। पर फौजी टुकड़ी का कमाण्डर कहता है, उसे डाकुओं का सफाया करने के लिए भेजा गया है; जब तक डाकुओं से मुठभेड़ नहीं हो जाती, तब तक

वापस नहीं लौट सकता। वरना 'मिशन पूरा होने' की रिपोर्ट कैसे देगा!"

"भाड़ में जाये 'मिशन पूरा होने' की रिपोर्ट!" बड़ बाबू ने खीझकर कहा। उसकी झुँझलाहट बढ़ती जा रही थी।

एक क्षण रुककर कैप्टन ने उसके कान में कुछ फुसफुसाया। बड़ा बाबू उछल पड़ा।

"क्या कहा!" वह जोर से चीखा। "हमने कल ही तो उन्हें तीस औंस अफीम दी है। आज फिर माँग रहे हैं? बदमाश कहीं के!"

"बात सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं—वे लोग हमें लूट भी रहे हैं! जब हमारे आदमी बड़े-बड़े ग्राहकों को माल पहुँचाने जाते हैं, तो उन्हें वे लोग रास्ते में ही रोक लेते हैं और सारा माल लूट लेते हैं। यहाँ आए हुए अभी सिर्फ आधा ही महीना तो हुआ है, लेकिन सारे गुर सीख गये हैं!"

"यह सरासर ज्यादती है!" बड़े बाबू ने मुट्ठी जोर से मेज पर दे मारी। उसके माथे की नसें फूलकर कानी उँगली की तरह उभर आईं।

मिस लिङ बेहद भयभीत हो उठी। उसे लगा, जैसे बड़ा बाबू पिस्तौल उठाकर उसे गोली मार देगा।

"अगर ये लोग आधा महीना और रहे, तो हमारा सारा करोबार चौपट हो जायेगा! हमें जल्दी ही कोई उपाय सोचना पड़ेगा!"

कैप्टन ने एक उसाँस भरी। बड़े बाबू ने भी ठण्डी साँस ली। इसके बाद वे दोनों काफी देर तक एक-दूसरे के कान में कुछ फुसफुसाते रहे। मिस लिङ ने देखा, बड़ बाबू ने चेहरे पर खुशी की रेखाएँ उभरती जा रही हैं और वह अपना सिर हिलाता जा रहा है।

"आप जरा भी फिक्र न करें, सरकार! हम लोग खूब अच्छी तरह वेष बदल लेंगे!" कैप्टन ने जाते समय बड़े बाबू का यकीन दिलाया। "भरोसा रखिए, किसी किस्म की कोताही नहीं होगी। उत्तर-पश्चिम में स्थित वह गाँव सबसे अच्छा रहेगा। वहाँ किसानों के पास अब भी कुछ अनाज व दूसरी चीजें बाकी हैं। इस तरह हमारे अभियान के लिए कुछ 'सहायता' भी मिल जायेगी।"

"हमारे गुप्तचरों से कहना, चौकन्ने रहें। ज्यों ही वे खबर दें कि फौजी टुकड़ी कस्बे से चल पड़ी है, तुम लोग वहाँ से हट जाना। मैं नहीं चाहता कि फौजी टुकड़ी से हमारी मुठभेड़ हो। अगर भण्डाफोड़ हो गया, तो सारे कस्बे में खिल्ली उड़ेगी!"

कैप्टन के जाने के बाद बाबू गहरे सोच-विचार में डूब गया। उसका चेहरा बहुत गम्भीर हो उठा। नौकर भेजकर उसने दामाद को बुलवाया। जब मिस लिङ ने "दामाद" शब्द सुना, तो वह अन्दर से बहुत परेशान हो उठी। सोचा, अपने मन का सन्देह बड़े बाबू को बता दे। लेकिन अन्त में उसने कुछ न बताने और इस मामले से अलग ही रहने का फैसला कर लिया।

दामाद बड़े बाबू से कुछ देर बात करने के बाद फौरन उठकर चला गया। दरवाजे के पास उसका सामना मिस लिङ से हो गया। उसे देखते ही वह भेड़िए की तरह दाँत फाड़कर हँस पड़ा। मिस लिङ के रोंगटे खड़े हो गये। वह इस तरह सहम-सिमट गई जैसे किसी जहरीले साँप से बचने की कोशिश कर रही हो।

रात का खाना खाते समय बड़े बाबू ने शराब की प्याली उठाई तो मिस लिङ का दिल धड़कने लगा। वह जितनी बार प्याली में शराब उँड़ेलती जाती, उतनी ही बार उसके दिल की धड़कन बढ़ती जाती। उसे लग रहा था कि आज रात उसे फिर मुसीबत झेलनी पड़ेगी। पर ताज्जुब की बात थी कि उस रात बड़े बाबू ने शराब के अलावा और किसी तरह की फरमाइश नहीं की। वह एक छोटी-सी प्याली में धीरे-धीरे मदिरा की चुस्कियाँ लेता रहा। बीच-बीच में प्याली मेज पर रख देता और कान लगाकर कुछ सुनने लगता। रात के लगभग नौ बजे बाहर सड़क पर लोगों के दौड़ने की आवाज आई। कोई जोर-जोर से फौजी आदेश देता जा रहा था। बड़ा बाबू अत्यन्त चिन्तित हो उठा और शराब पीना बन्द कर बिस्तर पर जा लेटा। मिस लिङ को उसने पाँव दबाने का आदेश दिया।

कुछ देर बाद दूर कहीं से राइफलें दागने की आवाजें आने लगीं। बड़ा बाबू बिस्तर से कूदकर खिड़की के पास जा पहुँचा। उत्तर-पश्चिम की ओर आग की लपटें चमक रही थीं। बड़ा बाबू कुछ क्षणों तक उस तरफ देखता रहा, फिर एक बड़े कटोरे में शराब उँड़ेलकर एक ही साँस में गटक गया। परम सन्तोष से सिर हिलाते हुए उसने अपनी दोनों बाहें फैला दीं। मिस लिङ जानती थी कि यह कपड़े उतारने का संकेत है। वह काँप उठी।

लेकिन कुछ देर पैर दबाने के बाद ही जब बड़ा बाबू खर्राटे मारने लगा, तो उसे बड़ा ताज्जुब हुआ।

अगले दिन सुबह मिस लिङ ने रसोईघर में पनहारे को यह कहते सुना कि कल उत्तर-पश्चिम की ओर एक गाँव पर डाकुओं ने धावा बोल दिया था। फौजी टुकड़ी की डाकुओं के साथ कई घण्टों तक मुठभेड़ होती रही। डाकुओं के गिरोह को मदद करने वाले बहुत से किसानों और एक घायल डाकू को फौजी टुकड़ी ने पकड़ लिया है। वे पुलिस थाने में बन्द हैं।

सामने के कमरे में लाओ थाएथाए बड़बड़ा रही थी :

"यह सब इसी चुड़ैल के चक्कर में पड़ने का परिणाम है! अब वह अपने दामाद से उलझ रहा है! जो आदमी सूर्य देवता का अपमान करता है..."

जब मिस लिङ कमल के बीज की लपसी का कटोरा ऊपर ले जा रही थी, तो बड़े बाबू और दामाद की तूतू-मैंमैं उसके कानों में पड़ी। जब वह कमरे के दरवाजे पर पहुँची, तो बड़ा बाबू गरज रहा था :

"तुम पागल हो गये हो! तुम्हारी यह जुर्रत कि मुझसे ऐसी बातें करो!"

"क्या पिछली बार गोली खाकर भी आपको सबक नहीं मिला?" दामाद ने कटाक्ष किया। वह एक निष्ठुर हँसी हँसा, जिससे मिस लिङ की समूची देह काँप उठी।

कमरे में प्रवेश करते ही उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। दामाद के हाथ में काले रंग की एक चमकदार पिस्तौल थी, जिसका निशाना उसने बड़े बाबू की तरफ साधा हुआ था। मिस लिङ के पाँव लड़खड़ाने लगे। उसका खून जम गया।

"मारते क्यों नहीं?" बड़े बाबू ने ललकारा। "मारो, दबा दो घोड़ा—"

धाँय!

आवाज सुनते ही मिस लिङ दहशत खाकर दरवाजे के पास गिर पड़ी। उसकी आँखें खुली रह गयीं। उसने दामाद का विकृत, खूँखार चेहरा देखा, जो मिस लिङ को लाँघता हुआ बाहर निकल रहा था। उसका सिर चकराने लगा और आँखों के सामने अँधेरा छा गया।

**4**

हालाँकि गोली बड़े बाबू को लगी थी, न कि मिस लिङ को, फिर भी बीमार मिस लिङ पड़ गई। बीमारी की हालत में वह अनाप-शनाप बड़बड़ाती रही। दो दिन बहुत तेज बुखार रहा। उसका चेहरा एकदम लाल हो गया, मानो उसने ढेर सारी शराब पी ली हो। आँखें निस्तेज हो गयीं। खाना-पीना एकदम बन्द हो गया। बीच-बीच में उखड़े-पुखड़े अस्पष्ट शब्द बोलने लगती। तीसरे दिन हालत कुछ सुधरी, पर कमजोरी बहुत हो गई। इसलिए सिर में चक्कर आने लगा। तीसरे पहर तक लगातार सोती रही। साँझ होने पर अचानक नींद खुली तो बेहद प्यास लग आई। देखा, छोटी नौकरानी शिङअड़ खिड़की से बाहर झाँक रही है। मिस लिङ नहीं समझ पाई कि वह इस समय बिस्तर में क्यों लेटी है। उस दिन की घटना उसे बिल्कुल याद नहीं आई। उसने कोशिश की कि बिस्तर में बैठ जाये, पर न बैठ पाई।

"शिङअड़!" उसने धीरे से पुकारा, "तू वहाँ क्या देख रही है? अगर बड़े बाबू ने देख लिया, तो तेरी हड्डी-पसली तोड़ देंगे।" मिस लिङ को कुछ भूख महसूस हो रही थी।

छोटी नौकरानी पीछे मुड़ी और उसकी तरफ देखकर मुस्करा दी।

"बड़े बाबू तो कब के मर चुके हैं!" वह प्रेतों का सा अट्टहास करती हुई बोली। "उधर देखो, उनकी लाश ठीक वहाँ पड़ी थी—खून से पूरी तरह लथपथ!"

मिस लिङ सिहर उठी। अब कहीं उसे सारी घटना याद आई। उसका दिल फिर एक बार जोर-जोर से धड़कने लगा, उसकी आँखों के सामने फिर एक बार अँधेरा छा गया और वह फिर एक बार सपनों की दुनिया में जा पहुँची। उसने देखा, बड़े बाबू ने पिस्तौल की नली उसकी छाती पर रखी हुई है, दामाद बड़े बाबू का खून

करने के लिए उस पर निशाना साध रहा है। अन्त में उसने देखा, एक चेहरा—खूँखार टेढ़ी भौंहों वाला चेहरा—बड़ी हविस के साथ उसकी तरफ देख रहा है। वह दामाद था! उसे लगा, वह जोर से चिल्ला रही है, पर जो आवाज उसके कानों में पड़ी वह मोटी दीवार के उस पार से आ रही थी। उसे अपनी छाती पर मनों बोझ महसूस होने लगा। वह फिर एक बार मूर्छित हो गई।...

होश में आई, तो उसे लगा जैसे परलोक से एक बार फिर दुनिया में लौट आई हो। लैम्प जल चुका था और एक मानव आकृति की छाया उसके पलँग पर पड़ रही थी। मिस लिङ ने छोटे बाबू को पहचान लिया। वह लैम्प की तरफ पीठ किये पलँग के बिल्कुल पास झुककर खड़ा था।

"क्या मैं मर चुकी हूँ?" उसने कराहते हुए पूछा।

"मरना इतना आसान थोड़े ही है!"

"मेरी नस-नस दुख रही है। मेरा ख्याल है... दामाद..."

"वह अभी-अभी बाहर गया है। मैंने उसे बाहर खदेड़ने के लिए बड़ी तरकीब से काम लिया।"

"तुम सचमुच बड़े होशियार हो!" यह कहते हुए उसने अपना गाल छोटे बाबू को चूमने दिया। मिस लिङ के मुँह पर मन्द-मन्द मुस्कान खेल रही थी। उसे बेहद भूख लग आई थी।

छोटे बाबू ने बताया, दामाद ने सुरक्षा दल के निदेशक का पद सम्भाल लिया है। घर में भी उसी का एकछत्र साम्राज्य कायम हो गया है। सुनकर मिस लिङ चकित रह गई। जरा संकोच के साथ बोली :

"जानते हो, बड़े बाबू की मौत कैसे हुई?"

"लापरवाही से। पिस्तौल साफ कर रहे थे। अचानक घोड़ा दब गया और गोली छूट गई।"

"यह किसने बताया तुम्हें?"

"दामाद ने। लाओ थाएथाए ने भी कुछ ऐसा ही कहा। कह रही थी बापू ने सूर्य देवता का अपमान किया, इसलिए प्रेतात्माओं के प्रभाव से उनका दिमाग पलट गया और उन्होंने अपने को गोली मार ली। कह रही थी, तुमने भी सूर्य देवता का अपमान किया है और मरने के बाद बापू ने तुम्हें भी यमराज के दरबार में गवाही देने यमलोक में बुलाया था। यही वजह है कि पिछले दो-तीन दिनों से तुम मरी हुई थी।"

मिस लिङ खोई-खोई कुछ देर सोचती रही। फिर उसने सिर हिलाकर इंकार कर दिया और अपना मुँह छोटे बाबू के कान के पास ले जाकर बोली :

"यह सच नहीं है! बड़े बाबू को अपनी ही पिस्तौल की गोली नहीं लगी! पर किसी को बताना मत। उन्हें दामाद ने गोली मारी है—मैंने खुद अपनी आँखों से

देखा है!"

छोटा बाबू आँखें फाड़कर उसकी तरफ देखता रह गया। उसे मिस लिङ की बात पर पूरा यकीन नहीं हो रहा था। "किसे पड़ी है यह पता लगाने की कि वे कैसे मरे हैं!" वह उदासीनता से बोला। "मर गये हैं, बस यही काफी है!"

"मैं जानती हूँ, यह दामाद किसी दिन तुम्हें भी जरूर मार डालेगा! और उसके बाद मेरी बारी आएगी।"

छोटा बाबू कुछ न बोला। मुँह बिचकाकर प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा।

"किसी दिन वह हम दोनों को ही मार डालेगा। अगर कहीं उसके कान में भनक पड़ गई कि तुम और मैं..." मिस लिङ ने चिन्तातुर होकर एक गहरी उसाँस भरी।

छोटे बाबू को कोई-उत्तर न सूझा। उसने अपना सिर लटका दिया। मिस लिङ ने उसे धीरे से धकेलते हुए कहा :

"यहाँ से फौरन चले जाओ! वह जल्दी ही लौटने वाला है!"

"ऐसा सिर्फ तुम सोचती हो! उसने आज ही तो नया पद सम्भाला है। वे लोग आज कस्बे की उस रसिक महिला के यहाँ उसे जोरदार दावत देने वाले हैं। इसलिए उसके लौटने की बहुत कम सम्भावना है!"

"झूठ बोलोगे तो जबान कट जायेगी!" मिस लिङ खी-खी हँस पड़ी। उसके बाद उसने छोटे बाबू से जाने का अनुरोध नहीं किया।

लेकिन छोटा बाबू डर गया था। कुछ देर अठखेलियाँ करने के बाद वह उठा और बाहर चला गया। मिस लिङ की आँख लग गई और उसे गहरी नींद आ गई। वह कितनी देर सोई रही, इसका आभास उसे न रहा। अचानक किसी ने उसे झकझोर कर जगा दिया। सड़क पर चीखने-चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। पास ही कहीं राइफलें नववर्ष की पूर्वसंध्या के पटाखों की तरह गूँज रही थीं। छोटा बाबू अत्यन्त भयभीत होकर मिस लिङ को बिस्तर से बाहर खींच रहा था।

"जल्दी उठो, असली डाकू आ गये हैं!" वह पागलों की तरह चिल्लाया। "सुना तुमने? वे लोग गोलियाँ चला रहे हैं! पश्चिमी फाटक पर जमकर लड़ाई हो रही है!"

मिस लिङ इतनी डर गई कि उसकी जबान बन्द हो गई। उसने देखा, खिड़की के बाहर डूबते सूरज की तिरछी किरणें आँगन के एक कोने में पहुँचकर अपनी सुनहरी रोशनी बिखेर रही हैं। छोटा बाबू जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने में मिस लिङ की मदद करने लगा और हाँफता हुआ बोला :

"उस दिन उत्तर-पश्चिम की तरफ के गाँव में बापू ने अपने आदमी भेजकर लूटपाट कराई थी और मकानों को आग लगवा दी थी। फौजी टुकड़ी ने वहाँ पहुँचकर

बहुत से ग्रामीणों को पकड़ लिया था और उन पर डाकू होने का झूठा इलजाम लगाया था। अब असली डाकू आ गये हैं। जिन ग्रामीणों पर झूठा इल्जाम लगाया गया था, वे भी उनके साथ हैं। वे लोग हमारे सारे परिवार को मार डालना चाहते हैं...''

सड़क से चीखने-चिल्लाने की भयानक आवाजें आ रहीं थीं; इस शोरगुल में छोटे बाबू के कथन का शेष अंश विलुप्त हो गया। जो दुकानें अभी अपने शोकेसों की हिफाजत के लिए तख्ते नहीं लगा पाई थीं, उनके शीशे तोड़कर सैनिक अन्दर घुस गये। छोटा बाबू मिस लिङ को वहीं छोड़कर सीढ़ियों से नीचे उतर गया। मिस लिङ उस खिड़की के पास खड़ी हो गई जो सड़क की तरफ खुलती थी। उसके हाथ-पाँव काँप रहे थे। सैनिक तितर-बितर होकर पीछे हट रहे थे और उन दुकानों को लूट रहे थे जिनके शोकेसों पर अभी तख्ते नहीं लगे थे। धाँय! धाँय! बन्द दुकानों के तख्तों पर उन्होंने पागलपन् के साथ गोलियाँ दागनी शुरू कर दीं। मिस लिङ के पैर लड़खड़ाने लगे। वह घबराकर फर्श पर बैठ गई। इतने ही में छोटा बाबू दौड़ा-दौड़ा वहाँ आ पहुँचा और उसने मिस लिङ की बाँह पकड़कर उसे खड़ा कर दिया।

''डाकू!.. कस्बे के भीतर डाकू घुस आए हैं!'' वह हाँफता हुआ बोला। ''दामाद. .. मारा गया है!''

दोनों तेजी से सीढ़ियाँ उतर गये। लाओ थाएथाए घुटनों के बल बैठी अपने छोटे-से पूजामण्डप में रखी देवमूर्ति को बार-बार प्रणाम कर रही थी। उसकी तरफ ध्यान दिए बगैर छोटा बाबू यथासम्भव फुर्ती के साथ मिस लिङ को पीछे के दरवाजे से बाहर निकाल ले गया। हम लोग कहाँ जा रहे हैं? मिस लिङ सोचने लगी। अचानक उसे शाङहाए में रहने वाली अपनी माँ याद आ गई। उसके पीले-जर्द चेहरे पर आँसुओं की धार बह निकली।

गोलियों की बौछार के बीच कहीं से अचानक एक सनसनाती हुई गोली आई और उसने छोटे बाबू का काम तमाम कर दिया। कटे पेड़ की तरह वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। मिस लिङ भी उसी के साथ जमीन पर गिर पड़ी। अभी वह छोटे बाबू का सिर गोद में रखकर बैठी ही थी कि दूसरी गोली आई और मिस लिङ के सीने के आरपार हो गई। पलभर के लिए उसके चेहरे में कुछ खिंचाव-सा पैदा हो गया। वह एक भी शब्द बोले बिना जमीन पर लुढ़क गई और फिर कभी नहीं उठ पाई। उसके होठों पर मुस्कराहट और घृणा का अद्भुत मिश्रण था।

जिस हवेली से वे दोनों बाहर निकले थे, वह देखते ही देखते धुएँ के बादलों में समा गई। पलभर में आग की ऊँची-ऊँची लपटें आसमान को छूने लगीं और अनगिनत चिनगारियाँ चारों दिशाओं में फैल गयीं।

29 फरवरी 1932

# लिन परिवार की दुकान

## 1

मिस लिन स्कूल से लौटी, तो उसका छोटा-सा मुँह फूला हुआ था। उसने किताबें जमीन पर पटक दीं और हमेशा की तरह शीशे के सामने जाकर बाल सँवारने तथा चेहरे पर पाउडर मलने के बदले धम्म से बिस्तर पर लेट गई और पलँग पर तनी मच्छरदानी पर नजर टिकाकर विचारों में खो गई। मिस लिन की छोटी-सी बिल्ली उछलकर उसके पेट से सटकर बैठ गई। उसके मुँह से दो बार 'म्याऊँ' की आवाज निकली। मिस लिन का हाथ सहज ही बिल्ली के सिर पर पहुँच गया, और वह प्यार से उसे थपथपाने लगी। फिर उसने करवट बदली और अपना सिर तकिए में छिपा लिया।

"माँ!" उसने पुकारा।

कोई उत्तर न मिला। माँ का कमरा बगल में ही था। वह अपनी इकलौती बेटी को बेहद प्यार करती थी। जब वह स्कूल से लौटती, तो माँ झट उसके पास जा पहुँचती और पूछती कि उसे भूख तो नहीं लग रही। वह हमेशा बेटी के लिए कोई न कोई अच्छी चीज तैयार रखती, अथवा नौकरानी को बाहर भेजकर फौरन खोंमचेवाले से एक कटोरा गरमागरम हुनथुन* मँगवा देती।... लेकिन आज उसने यह सब नहीं किया। माँ के कमरे में उससे कोई बातें कर रहा था—मिस लिन के कानों में माँ की हिचकियों की आवाज लगातार पड़ रही थी—पर उसकी पुकार का माँ ने आज कोई उत्तर नहीं दिया।

मिस लिन ने फिर एक बार बिस्तर पर करवट बदली, सिर ऊपर उठाया और चुपचाप कान लगाकर सुनने लगी। उसेन सोचा, माँ इतनी धीमी आवाज में आखिर किससे बातें कर रही है?

वे दोनों क्या बातें कर रहे हैं, यह मिस लिन नहीं सुन पाई। केवल माँ की हिचकियों की आवाज रह-रहकर उसके कानों में पड़ रही थी। अचानक माँ की आवाज कुछ बुलन्द हो गई, जैसे वह बौखला उठी हो। अब उसके कुछ शब्द बिल्कुल साफ-साफ सुनाई देने लगे :

---

* समोसे की तरह का गोश्त का एक पकवान, जिसे शोरबे में डालकर खाया जाता है।

"—यह माल भी जापानी है—हिक! वह माल भी जापानी है, हिक!..."

मिस लिन चौंक पड़ी। उसके सारे शरीर में सुइयाँ-सी चुभने लगीं, ठीक उसी तरह जैसे बाल कटवाने के बाद गरदन में चिपके छोटे-छोटे बाल चुभने लगते हैं। वह नाराज होकर स्कूल से घर इसलिए लौट आई थी, क्योंकि वहाँ उसके जापानी कपड़ों की हँसी उड़ाई गई थी और उसे लताड़ा गया था। अपनी देह से सटी बिल्ली को एक तरफ धकेलती हुई वह एकदम उठ खड़ी हुई। उसने ऊँट के फर वाली नकली रेशम की आसमानी पोशाक उतार दी। उसे हाथ में लेकर मिस लिन ने एक-दो बार उलटा-पलटा और फिर एक गहरी उसाँस भरी। उसे पता था कि सुन्दर फ्राक भी जापानी कपड़े से बना है। फ्राक को एक तरफ रखकर उसने पलँग के नीचे से चमड़े का एक शानदान सूटकेस बाहर खींच लिया और बौखलाकर उसका सारा सामान पलँग पर पलट दिया। रंगबिरंगी भड़कीली पोशकें और अन्य चीजें चारों तरफ बिखर गयीं। बिल्ली पहले कूदकर फर्श पर और फिर उछलकर कुर्सी पर जा बैठी, जहाँ से वह आश्चर्यभरी नजरों से चुपचाप मिस लिन की तरफ देखती जा रही थी।

कपड़ों के ढेर को उलटने-पलटने के बाद मिस लिन विचारों में खोई हुई पलँग के पास खड़ी हो गई। उन चीजों को वह जितना ज्यादा देखती जाती, उनकी आकर्षकता उतनी ही बढ़ती जाती—उनकी जापानी रंगत उतनी ही ज्यादा निखरती जाती! क्या वह अब इन कपड़ों को नहीं पहन सकेगी? वह इन चीजों को हरगिज नहीं छोड़ना चाहती थी। फिर उसके पिता उसके लिए नए कपड़े बनवाने को भी तो तैयार नहीं थे। मिस लिन की आँखों से आँसू झरने लगे। उसे जापानी चीजें बेहद पसन्द थीं। लेकिन साथ ही वह जापानी आक्रमणकारियों से बेहद नफरत करती थी, जिन्होंने देश के उत्तर-पूर्वी प्रान्तों पर हमला कर दिया था। अगर ऐसा न हुआ होता, तो वह जापानी माल इस्तेमाल करती रहती और इस बात पर किसी को कोई एतराज न होता।

"हिक—"

आवाज दरवाजे की तरफ से आई थी। कुछ ही क्षणों में मिसेज लिन अपनी क्षीण काया को सम्भाती हुई कमरे में आ पहुँचीं। पलँग पर कपड़ों का ढेर लगा था और सामने उनकी बेटी सिर्फ ऊनी बनियान पहने बेचैन खड़ी थी। देखकर मिसेज लिन स्तब्ध रह गयीं। जैसे-जैसे उनकी परेशानी बढ़ती जा रही थी, उसी अनुपात में उनकी हिचकियाँ भी बढ़ती जा रही थीं। कुछ देर तक वे एक भी शब्द नहीं बोल पाईं। मिस लिन के चेहरे पर विषाद की रेखाएँ उभर आईं। माँ को देखकर वह बोल पड़ी : "माँ, ये सभी कपड़े जापानी है। मैं कल क्या पहनूँगी?"

मिसेज लिन को लगातार हिचकियाँ आती जा रही थीं। वे एक हाथ से बेटी के कन्धे का सहारा लेते हुए दूसरे हाथ से अपनी छाती मलने लगीं। फिर बड़ी कठिनाई

से ये शब्द बोलीं :

"बेटी—हिक—तूने अपने सारे कपड़े—हिक—क्यों उतार दिए? हिक—मौसम ठण्डा है। हिक—मुझे यह शिकायत—हिक—उस साल शुरू हुई—हिक—जब तू पैदा हुई थी। हिक—इधर कुछ समय से मेरी हालत—हिक—बिगड़ती जा रही है। हिक—"

"माँ, यह तो बताओ मैं कल सुबह क्या पहनूँगी? क्या मैं घर के अन्दर ही छिपी रहूँगी? बाहर नहीं जाऊँगी? सब लोग मेरे ऊपर हँसेंगे, मेरी खिल्ली उड़ायेंगे।"

मिसेज लिन ने कोई उत्तर न दिया। बार-बार हिचकियाँ लेती हुई पलँग के पास गयीं और कपड़ों के ढेर में से आसमानी रंग की एक सुन्दर-सी पोशाक उठाकर बेटी को पहना दी। फिर बेटी को पलँग पर बैठने का इशारा किया। बिल्ली मिस लिन की टाँग के पास लौट आई। उसने सिर उठाकर अधखुली आँखों से पहले मिसेज लिन की तरफ और फिर उनकी बेटी की तरफ देखा। इसके बाद धीरे से कलाबाजी खाकर मिस लिन के जूतों से अपना पेट रगड़ने लगी। मिस लिन ने ठोकर मारकर उसे दूर भगा दिया और तिरछी होकर पलँग पर इस तरह लेट गई जिससे उसका सिर माँ की पीठ के पीछे छिप जायें

कुछ देर दोनों मौन रहे। मिसेज लिन लगातार हिचकियाँ लेती जा रही थीं; बेटी इस सोच-विचार में डूबी थी कि कल क्या पहनकर बाहर जायेगी। मिस लिन जो भी कपड़ा पहनती थी—जो भी माल इस्तेमाल करती थी—वह सब जापान का बना था। यहाँ तक कि उसकी पाउडर की डिबिया, जो उसकी सहपाठिनों को बेहद पसन्द थी, और उसकी स्वचालित पेंसिल भी जापान की ही बनी थी। ये सब छोटी-छोटी चीजें उसे बेहद पसन्द थीं!

"बेटी—हिक—क्या भूख लग रही है?"

कुछ देर शान्त रहने के बाद मिसेज लिन ने अपनी हिचकियों पर काबू पा लिया और हमेशा की ही तरह बेटी के प्रति लाड़-प्यार दिखाने लगीं।

"माँ, तुम हमेशा यही क्यों पूछती रहती हो कि मुझे भूख लग रही है या नहीं? सबसे जरूरी बात तो यह है कि मेरे पास कपड़े नहीं हैं। कल सुबह स्कूल कैसे जाऊँगी?" बेटी ने तुनककर माँग की। वह अब भी पलँग पर लेटी थी और उसका सिर माँ की पीठ के पीछे छिपा था।

मिसेज लिन अब तक यह नहीं समझ पाई थीं कि उनकी बेटी बार-बार शिकायत क्यों कर रही है, बार-बार क्यों कह रही है कि उसके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं। जब उसने यह बात तीसरी बार दोहराई, तो मिसेज लिन के लिए उसकी उपेक्षा करना असम्भव हो गया। लेकिन कम्बख्त हिचकियाँ उसे परेशान करने के लिए फिर आने लगीं। तभी मिस्टर लिन वहाँ आ पहुँचे। उनके हाथ में एक कागज था; चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। पत्नी को बार-बार हिचकियाँ रोकने के लिए संघर्ष करते और बेटी को पलँग पर कपड़ों के ढेर के पास लेटे देखकर उन्होंने अनुमान

लगा लिया था कि समस्या क्या है। उनकी भौंहें तन गयीं।

"क्या तेरे स्कूल में भी जापानी-आक्रमण-विरोधी सोसायटी कायम हो गई है?" उन्होंने पूछा। "यह चिट्ठी अभी-अभी आई है। लिखा है, अगर कल से किसी ने जापानी कपड़े पहने, तो उन्हें उतारकर जला दिया जायेगा! यह जंगल का कानून नहीं तो और क्या है!"

"हिक–हिक!"

"कैसी बेहूदा बात है! हर आदमी के बदन पर कोई न कोई न कोई जापानी कपड़ा जरूर है। लगता है, वे लोग सिर्फ हमारे परिवार के लिए मुसीबतें खड़ी करना चाहते हैं! विदेशी चीजें बेचने वाली एक भी दुकान ऐसी नहीं जिसके पास जापानी माल न हो। पर वे लोग हमारी ही दुकान को अपराधी ठहरा रहे हैं। हमारे ही माल पर रोक लगाने पर तुले हुए हैं! कैसी अजीब बात है!"

"हिक–हिक–करुणामूर्ति भगवान अवलोकितेश्वर, हमारी रक्षा करो! हिक–"

"पापा, मेरे पास पुराने ढंग की एक रूई की जाकिट है। शायद वह जापानी कपड़े की नहीं है। पर उसे पहनूँगी, तो लोग हँसी उड़ायेंगे। वह बिल्कुल पुराने फैशन की है!" मिस लिन उठकर पलँग पर बैठ गई। वह अपने पिता से अनुरोध करना चाहती थी कि गैरजापानी कपड़े से उसके लिए एक अच्छी-सी पोशाक बनवा दें। पर मिस्टर लिन की भाव-भंगिमा देखकर उसने इस तरह जल्दबाजी में कुछ कहने का इरादा छोड़ दिया। जब वह अपनी पुरानी रूई की जाकिट पहनेगी, तो लोग उसका कितना मजाक उड़ायेंगे, इसकी कल्पनामात्र से उसकी आँखों में आँसू आ गये।

"हिक–हिक–बेटी! हिक–रो मत–तेरी कोई हँसी नहीं उड़ाएगा–हिक..."

"कल तुझे स्कूल जाने की जरूरत नहीं! कुछ ही दिनों में हमारे लिए रोटी कमाना भी मुश्किल हो जायेगा। ऐसी हालत में स्कूल का खर्चा कैसे बरदाश्त कर पायेंगे।" मिस्टर लिन ने दुखी होकर कहा। उन्होंने चिट्ठी फाड़ दी और एक आह भरकर कमरे से बाहर चले गये। पर शीघ्र ही उलटे पाँव लौट आए।

"अलमारी की चाभी कहाँ है? जरा देना!" उन्होंने पत्नी से कहा।

मिसेज लिन का रंग पीली पड़ गया। वे चकित होकर पति को देखती रह गयीं। उनकी अनवरत हिचकियाँ कुछ क्षणों के लिये रुक गयीं।

"कोई और उपाय नहीं है। इन राक्षसों को कुछ न कुछ दिए बिना काम नहीं चलेगा!" मिस्टर लिन एक क्षण के लिए रुके और उन्होंने एक ठण्डी साँस भरकर अपनी बात जारी रखी, "ज्यादा से ज्यादा चार सौ लग जायेंगे। अगर क्वोमिनताङ की स्थानीय शाखा ने इस रकम को भी काफी न समझा, तो मैं व्यापार करना छोड़ दूँगा। सारा स्टाक ताले में बन्द रहने दूँगा। सामने की दुकान में हमसे ज्यादा जापानी माल है। दस हजार य्वान से ज्यादा पूँजी लगी हुई है। वे लोग सिर्फ पाँच सौ य्वान

देकर बिना किसी परेशानी के निश्चिन्त होकर कारोबार चला रहे हैं। हाँ, पाँच सौ य्वान की ही तो बात है! समझ लेंगे, उधार खाते में मारे गये!—चाभी तो दो! सोने के हार के ज्यादा नहीं तो तीन सौ य्वान अवश्य मि जायेंगे।..."

"हिक—हिक—यह सचमुच लूट-खसोट है!" मिसेज लिन ने काँपते हाथों से चाबी थमा दी। उनकी आँखों से आँसू झरने लगे। पर मिस लिन नहीं रोई। वह गीली आँखों से शून्य की ओर ताकती रही। सहसा उसकी आँखों के सामने क्वोमिनताङ कमेटी के चेचक के दाग वाले उस काले-कलूटे सदस्य की आकृति नाच उठी जो उसके स्कूल में भाषण देते समय भूखे भेड़िए की तरह उसकी ओर घूर रहा था। उसे लगा, जैसे वह राक्षस सोने का हार हाथ में थामे खुशी ने नाचता हुआ मुँह फाड़कर हँस रहा हो; उसे लगा जैसे वह बदसूरत डाकू उसके पिता से उलझ गया हो और उन पर प्रहार करने लगा हो।...

"हाय माँ!" मिस लिन जोर से चीख पड़ी और भयभीत होकर माँ से लिपट गई। मिसेज लिन स्तब्ध रह गयीं। एक क्षण के लिए उनकी हिचकियाँ रुक गयीं।

"बेटी—हिक—रो मत," मिसेज लिन ने हिचकियों को काबू में करते हुए कहा। "नववर्ष का त्यौहार आने के बाद तेरे पापा के पास पैसे हो जायेंगे। तब तेरे लिए नई पोशाक बनवा देंगे। हिक—वे लोग राक्षस हैं! समझते हैं हमारे पास बेशुमार पैसा है। हिक—वे क्या जाने कि हर साल दुकान का घाटा बढ़ता जा रहा है। तेरे पापा रासायनिक खाद का व्यापार करते थे। पर उसमें नुकसान उठाना पड़ा। हिक—दुकान में जो पूँजी लगी हुई है उसका एक-एक पैसा दूसरों का है। बेटी, हिक—हिक—मेरी यह बीमारी बड़ी खराब है; इसने मेरी जिन्दगी को नरक बना दिया है। हिक—दो साल बाद जब तू उन्नीस बरस की हो जायेगी, तो तेरे लिए एक अच्छा-सा वर ढूँढ़ देंगे। हिक—तब मैं शान्ति से मर सकूँगी! भगवान अवलोकितेश्वर, इस संकट की घड़ी में हमारी रक्षा करो! हिक—"

## 2

अगले दिन मिस्टर लिन की दुकान का कायाकल्प हो गया। जिन जापानी चीजों को शोकेसों में रखने का साहस वे पिछले एक हफ्ते से नहीं कर पाए थे, वे सभी दुकान में बड़ी प्रमुखता से प्रदर्शित कर दी गयीं। शाङहाए की बड़ी-बड़ी दुकानों की तरह मिस्टर लिन ने भी रंगीन कागज की बहुत सी पट्टियों पर "भारी सेल, 10 प्रतिशत छूट!" लिखकर उन्हें शोकेसों पर लगा दिया। चीन का परम्परागत नववर्ष आने में केवल सात दिन बाकी रह गये थे। कस्बों और गाँवों में विदेशी माल की खरीद-फरोख्त करने वालों के लिए यह "भारी बिक्री" का मौसम था। मिस्टर लिन को उम्मीद बँध गई थी कि चार सौ य्वान का विशेष खर्च जरूर वसूल हो जायेगा।

मिस लिन के लिए नई पोशाक बनाना भी अगले कुछ दिनों की बिक्री पर ही निर्भर था।

सुबह दस बजे बाद, अपने उत्पादनों को बेचने आए हुए किसान कस्बे की सड़क पर दिखाई देने लगे। हाथ में टोकरी उठाए और छोटे बच्चों की उँगली थामे, वे लोग जोर-जोर से बातें करते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। मिस्टर लिन की दुकान के शोकेसों पर लाल व हरे रंग की कागज की पट्टियों पर अंकित अक्षरों को देखने के लिए वे लोग रुक जाते। प्रदर्शित चीजों की ओर इशारा करके स्त्रियाँ अपने पतियों से और बच्चे अपने माता-पिता से विस्मयभरे शब्दों में सराहना करते ने अघाते। नया वर्ष जल्दी ही आने वाला था। बच्चे मोजे का नया जोड़ा पाने की आस लगाये बैठे थे। स्त्रियों को याद था कि हाथ-मुँह धोने का तसला काफी पहले ही टूट चुका है; समूचे परिवार द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एकमात्र तौलिया, जिसे लगभग छः महीने पहले खरीदा गया था, चिथड़े-चिथड़े हो गया है; साबुन की चक्की महीने-दो-महीने पहले की खत्म हो चुकी है। "सेल" का फायदा उठाकर वे लोग कुछ चीजें अवश्य खरीद सकते थे।

मिस्टर लिन खजाँची के कठघरे में मुस्तैदी से बैठे थे। उनके चेहरे पर मुस्कराहट थी। दो सेल्समैनों और दो नौसिखिऐ सैल्समैनों के काम पर नजर रखते हुए, वे सड़क पर आने-जाने वाले किसानों को देखते जा रहे थे। उन्हें पूरी उम्मीद थी कि जल्दी ही उनका माल बिकने लगेगा और उनके सामने चाँदी के सिक्कों के ढेर लगने शुरू हो जायेंगे।

लेकिन किसान उनकी दुकान में प्रदर्शित चीजों पर नजर डालने और उनकी सराहना करने के बाद सड़क के उस पार दूसरी दुकान पर जाकर कुछ और चीजें देखने लगे। मिस्टर लिन गरदन बाहर निकालकर किसानों की पीठ पर नजर टिकाए देखते रहे। उनकी आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं। मन कर रहा था, उन्हें घसीटकर पीछे खींच लायें!

"हिक—हिक—"

खजाँची के कठघरे के ठीक पीछे स्प्रिंगदार किवाड़ों वाला दरवाजा था, जो दुकान को "अन्तःकक्ष" से अलग करता था। दरवाजे के पास मिसेज लिन बैठी थीं। उनकी हिचकियाँ, जिन्हें वे काफी समय से प्रयत्नपूर्वक दबाए हुए थीं, फिर शुरू हो गई थीं। बगल में मिस लिन बैठी थी। उसकी व्याकुल आँखें चुपचाप सड़क की तरफ देख रही थीं। उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। उसकी नई पोशाक बनाने के काम आने वाली कम से कम आधी रकम अभी-अभी दूसरी दुकान में चली गई थी!

मिस्टर लिन तेजी से काउण्टर के सामने जा पहुँचे। उन्होंने बड़ी ईर्ष्या से सामने की दुकान की तरफ देखा। वहाँ पाँच सेल्समैन काउण्टर के पीछे ग्राहकों की प्रतीक्षा में खड़े थे। लेकिन एक भी किसान दुकान के अन्दर नहीं गया। वे लोग कुछ देर

तक शोकेसों को देखते रहे और फिर आगे बढ़ गया। मिस्टर लिन ने सन्तोष की साँस ली और सड़क के उस पार वाली दुकान के सेल्समैनों की तरफ देखकर मुस्कराए बिना न रह सके। सात-आठ किसानों का एक और जत्था मिस्टर लिन की दुकान के सामने रुका। उनमें से एक नौजवान किसान कदम बढ़ाकर दुकान के अन्दर आ गया। अपनी गरदन एक तरफ मोड़कर वह विदेशी छतरियों को देखने लगा। मिस्टर लिन मुस्कराते हुए इस ग्राहक को निपटाने स्वयं पहुँच गये।

"आइए भाई साहब, क्या आपको विदेशी छतरी चाहिए? बहुत सस्ती है। एक य्वान की जगह सिर्फ नब्बे फ़न लेगेंगे। आइए, देख लीजिए।"

एक सेल्समैन झटपट दो-तीन विदेशी छतरियाँ उतार लाया। एक छतरी खोलकर उसने बड़ी तत्परता से युवा किसान के हाथ में थमा दी और उसकी तारीफ के पुल बाँधने लगा :

"कितनी बढ़िया चीज है, भाई साहब! विदेशी साटन की बनी है। कमानी बड़ी-मजबूत है। सुन्दर भी है और टिकाऊ भी। बारिश और धूप दोनों में काम आ सकती है। कीमत सिर्फ नब्बे फ़न! इससे सस्ती कहीं मिले, तो दाम वापस!... सामने की दुकान में जो छतरी एक य्वान में बिक रही है वह इससे कहीं घटिया है। फर्क आप खुद देख सकते हैं।"

युवा किसान छतरी हाथ में उठाए अनिश्चय की स्थिति में खड़ा था। उसका मुँह खुला था। वह पचास से ज्यादा उम्र वाले एक अन्य किसान की तरफ मुड़ा, मानो पूछना चाहता हो, "खरीद लूँ?" लेकिन बुजुर्ग किसान उस पर बरस पड़ा :

"बौरा गये हो क्या? छतरी खरीदने की किसको पड़ी है! एक नाव लकड़ी का ईंधन बेचकर सिर्फ तीन य्वान ही तो मिले हैं। तुम्हारी माँ घर में चावल का इन्तजार कर रही है। छतरी पर पैसे क्यों बरबाद कर रहे हो?"

"छतरी सस्ती जरूर है, पर हम लोग नहीं खरीद सकते!" आसपास खड़े किसानों में से किसी ने आह भरकर कहा। धीर-धीरे सब लोग आगे बढ़ गये। युवा किसान का चेहरा लाल हो गया। वह छतरी रखकर चलने को हुआ। पर मिस्टर लिन छतरी बेचने के लिए बेताब थे वे फौरन बोल पड़े :

"आप कितना दे सकते हैं? अच्छी तरह सोच लीजिए। ऐसा माल फिर कभी नहीं मिल पायेगा!"

"छतरी सस्ती जरूर है। पर फिलहाल हमारे पास पैसे नहीं हैं।" यह कहकर बुर्जुर्ग किसान अपने बेटे को खींचकर बाहर ले गया। लगता था, जैसे वे लोग जान छुड़ाकर भाग रहे हों।

मिस्टर लिन निराश होकर खजाँची के कठघरे में लौट गये। उन्हें रग-रग में थकान और कमजोरी महसूस हो रही थी। वे जानते थे कि उनके व्यापार की तकनीक में कोई कमी नहीं है। किसान सचमुच बेहद गरीब हो चुके थे। वे लोग छतरी

खरीदने के लिए नब्बे फन खर्च करने में भी असमर्थ थे। मिस्टर लिन ने सड़क के उस पार वाली दुकान की तरफ तिरछी नजर से देखा। वहाँ भी लोग महज शोकेसों को ही देख रहे थे। अन्दर कोई नहीं जा रहा था। बगल में परचून की दुकान और केक-बिस्कुट की दुकान में तो कोई झाँकने भी नहीं जा रहा था। देहातियों के जत्थे के जत्थे हाथ में टोकरियाँ उठाए आगे बढ़ते जा रहे थे। उनकी टोकरियाँ खाली थीं। यदा-कदा कोई व्यक्ति हाथ के कते-बुने फूलदार नीले थैले में चावल उठाए सड़क पर चलता नजर आ जाता था। एक महीने से कुछ ज्यादा समय पहले किसान पछैती धान की फसल काट चुके थे। लेकिन वह जमींदारों का लगान देने और सूदखोरों का सूद चुकाने मे ही खत्म हो चुकी थी। अब उन्हें अपने खाने के लिए भी दो-चार चिन फुटकर अनाज बाजार से ऊँचे दामों पर खरीदना पड़ रहा था।

मिस्टर लिन से यह बात छिपी न थी। वे अच्छी तरह जानते थे कि उनके व्यापार को सूदखोर और जमींदार अप्रत्यक्ष रूप से चट करते जा रहे हैं।

धीरे-धीरे दोपहर हो गई। सड़क पर बहुत कम किसान दिखाई देने लगे। मिस्टर लिन की दुकान में सिर्फ एक य्वान से कुछ ज्यादा की बिक्री हुई, जिससे केवल कागज की उन हरी व लाल पट्टियों की लागत वसूल हो पाई जिन पर "भारी सेल, 10 प्रतिशत छूट" अंकित था। मिस्टर लिन ने हताश होकर "अन्तःकक्ष" में प्रवेश किया ओर जैसे-तैसे पत्नी व बेटी के सामने जाने का साहस जुटाया। मिस लिन की आँखें गीली थीं। वह सिर झुकाए एक कोने में बैठी थी। मिसेज लिन का हिचकियों का दौरा जारी था। इस नामुराद बीमारी से जूझती हुई वे पति से बोलीं :

"हमने चार सौ य्वान झोंक दिए—पूरी रात लगाकर दुकान सजाई—हिक! जापानी माल बेचने की विशेष अनुमति ली, फिर भी आज कोई बिक्री नहीं हुई—हिक—हे भगवान, अब क्या होगा!... नौकरानी तनख्वाह माँग रही है—"

"अभी आधा ही दिन तो हुआ है। चिन्ता न करो।" मिस्टर लिन ने सांत्वना के स्वर में कहा। पर उन्हें अन्दर से ऐसा लग रहा था मानो किसी ने उनके दिल पर छूरी चला दी हो। वे उदास होकर कमरे में चहलकदमी करते रहे और व्यापार बढ़ाने की उन सभी तरकीबों पर विचार करते रहे जिनकी उन्हें जानकारी थी। पर कोई तरकीब ऐसी नहीं थी जिसके कारगर होने की उम्मीद हो। व्यापार में मन्दी थी। कुछ समय से सभी तरह के व्यापार में मन्दी थी। सिर्फ उन्हीं की दुकान ऐसी नहीं थी जिसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हो। लोग गरीब थे और उनकी गरीबी दूर करने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता था। फिर भी मिस्टर लिन उम्मीद लगाए बैठे थे कि दोपहर बाद कुछ ज्यादा बिक्री होगी। कस्बे के निवासी अक्सर तीसरे पहर खरीदारी करने आते थे। वे नये वर्ष के लिये कुछ न कुछ अवश्य खरीदेंगे। अगर उन लोगों ने खरीदारी की, तो मिस्टर लिन की दुकान में जरूर बिक्री होगी। बाकी दुकानों की तुलना में उनका माल सस्ता जो था!

इसी उम्मीद पर मिस्टर लिन खजाँची के कठघरे के भीतर बैठे-बैठे मन को तसल्ली दे रहे थे और तीसरे पहर आने वाले ग्राहकों की प्रतिक्षा कर रहे थे।

दोपहर बाद की हालत सुबह की तुलना में भिन्न साबित हुई। सड़क पर ज्यादा लोग नहीं दिखाई दिए। पर जो लोग दिखाई दिए उन सभी से मिस्टर लिन परिचित थे। वे सिर्फ उन्हीं के नहीं बल्कि उनके बाप-दादा के नाम भी जानते थे। वे लोग इसी कस्बे के निवासी थैं। आपस में गपशप करते हुए और धीरे-धीरे चलते हुए जब वे लोग मिस्टर लिन की दुकान के सामने से गुजरते, तो मिस्टर लिन बड़े सद्भावपूर्ण नेत्रों से उनका अभिवादन करते और फिर उन्हें आगे जाने देते। कभी-कभी किसी पुराने ग्राहक का अभिवादन करते हुए वे मुस्कराकर कहते :

"कहिए भाई साहब, क्या हाल है? क्या चायघर की तरफ जा रहे हैं? हमारी दुकान में आजकल 'सेल' चल रही है। दामों में भारी कमी कर दी गई है। आइए, कुछ खरीद ले जाइए!"

और जब कोई सचमुच रुक जाता और दुकान के अन्दर आ जाता, तो फिर क्या था! मिस्टर लिन और उनके सहायक एकदम सक्रिय हो उठते। ग्राहक की आँखों का वे लोग बड़ी बारीकी ओर संवेदनशीलता के साथ अनुसरण करते रहते। जहाँ ग्राहक की नजर किसी चीज पर पड़ी कि सेल्समैन उसे फुर्ती से उसकी सेवा में हाजिर कर देते और अच्छी तरह देखने का अनुरोध करते। मिस लिन स्प्रिंगदार किवाड़ों वाले दरवाजे के पास बैठी बाहर की तरफ देखती रहती। बीच-बीच में मिस्टर लिन उसे भी बाहर बुला लेते और अप्रत्याशित रूप से आने वाले ग्राहक "चाचा" का अभिवादन करने को कहते। नौसिखिए सेल्समैन ग्राहक की खिदमत में चाय की प्याली या कोई अच्छी-सी सिगरेट पेश करते।

मोलभाव के दौरान भी मिस्टर लिन बेहद लचीलापन दिखाते थे। जब कोई ग्राहक किसी चीज की कीमत कुछ फन कम करके उसे पूरे य्वान तक पहुँचाने का आग्रह करता, तो मिस्टर लिन सेल्ममैन के हाथ से गिनती-चौखट खुद ले लेते और हिसाब लगाने लगते। फिर किसी ऐसे दुकानदार के अन्दाज में जिसके सामने और कोई उपाय न रह गया हो, पूरे बिल में कुछ फन घटा देते।

"इस सौदे में हमें घाटा उठाना पड़ रहा है," वे एक फीकी-सी मुस्कान के साथ कहते। "पर आप हमारे पुराने ग्राहक हैं। आपको खुश करना भी जरूरी है। शीघ्र ही फिर तशरीफ लाइए और कुछ सामान और खरीद ले जाइए।"

अपराह्न का सारा समय इसी तरह बीता। नकद और उधार खरीदने वालों की बड़ी-छोटी खरीद को मिलाकर दस से कुछ ज्यादा चीजें बिकीं। मिस्टर लिन पसीने से तर हो गये। हालाँकि वे बहुत थक गये थे, फिर भी खुश थे। बीच-बीच में सड़क के उस पार वाली दुकान की तरफ कनखियों से देख लेते। उस दुकान के लोग इतने ज्यादा व्यस्त नहीं जान पड़ रहे थे। मिस लिन का चेहरा खुशी से खिल

उठा। वह दरवाजे के पास बैठी टकटकी लगाकर बाहर की तरफ देख रही थी। मिसेज लिन की हिचकियाँ भी कुछ कम हो गई थीं।

अँधेरा होने से कुछ पहले मिस्टर लिन ने पूरे दिन की बिक्री का हिसाब लगाया। दोपहर से पहले कोई बिक्री नहीं हुई थी; दोपहर बाद सोलह य्वान पिच्यासी फन का माल बिका, जिसमें से आठ य्वान की बिक्री उधार और बाकी नकद थी। मिस्टर लिन पहले मुस्कराए और फिर चिन्तित हो उठे। वास्तव में वे अपना माल खरीद के भाव बेच रहें थे। इसलिए दैनिक खर्चा निकालना भी सम्भव न था, मुनाफा कमाना तो दूर रहा। कुछ देर तक वे जड़वत बैठे रहे। फिर बहीखाता निकालकर काफी देर तक हिसाब-किताब करते रहे। "आमदनी" के खाते में तेरह सौ य्वान का उधार अभी वसूल नहीं हो पाया था—छः सौ से ज्यादा रकम कस्बे से और सात सौ य्वान से ज्यादा रकम देहात से वसूल करनी थी। लेकिन "खर्च" के खाते में आठ-सौ य्वान सिर्फ शाङहाए के थोक व्यापारी को ही चुकाने थे। कुछ मिलाकर मिस्टर लिन दो हजार य्वान से ज्यादा रकम के देनदार थे!

मिस्टर लिन ने एक ठण्डी साँस भरी। अगर बिक्री इतनी मन्दी रही, तो नववर्ष तक गाड़ी धकेलना मुश्किल होगा। उन्होंने शोकेसों में लगी लाल व हरे रंग की कागज की पट्टियों पर नजर डाली, जिन पर लिखा था : "भारी सेल, 10 प्रतिशत छूट"। अगर हमने आज की ही तरह दामों में कटौती जारी रखी, तो बिक्री जरूर बढ़ेगी, उन्होंने मन की मन सोचा। फिलहाल हम कोई मुनाफा नहीं कमा रहे, पर अगर बिल्कुल बिक्री ने हुई, तब भी तो हमें दैनिक खर्च का बोझ उठाना ही पड़ेगा। मुख्य बात यह है कि दुकान में ग्राहक आयें, फिर धीरे-धीरे चीजों के दाम बढ़ाए जा सकते हैं... अगर देहात में कुछ थोक बिक्री की जा सके तो और भी अच्छा होगा!...

अचानक किसी ने दुकान में प्रवेश किया। मिस्टर लिन का मधुर स्वप्न भंग हो गया। आगन्तुक एक बुढ़िया थी, जिसके हाथ में नीले कपड़े में लिपटी एक पोटली थी। बुढ़िया के हाथ-पाँव काँप रह थे। मिस्टर लिन ने सिर उठाया तो वह बिल्कुल करीब आ चुकी थी। मिस्टर लिन वहाँ से भाग जाना चाहते थे, पर इसके लिए समय नहीं रह गया था। खड़े होकर उसका अभिवादन करने के सिवाय उनके सामने और कोई चारा नहीं था।

"ओह, मिसेज चू हैं? नए साल के मौके पर खरीदारी करने आई हैं क्या? कृपया पीछे के कमरे में जाकर कुछ आराम कीजिए। बेटी, मिसेज चू को अन्दर ले जाओ!"

मिस लिन ने नहीं सुना। कुछ देर पहले वह दरवाजे के पास से उठकर चली गई थी। मिसेज चू ने हाथ हिलाकर अन्दर जाने से इंकार कर दिया और दुकान में ही एक कुर्सी पर बैठ गयीं। उन्होंने बड़ी गम्भीरता के पोटली खोली, उसमें से एक बहीखाता बाहर निकाला और उसे काँपते हाथों से मिस्टर लिन की नाक के ठीक

नीचे तक पहुँचा दिया। अपने मुरझाए होंठों से वे कुछ कहने ही वालीं थीं कि मिस्टर लिन ने बहीखाता हाथ में उठा लिया और बोले :

"मैं समझ गया। कल आपके घर जरूर पहुँचा दूँगा।"

"हाँ, अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर—तीन महीनों का सूद है। तीन तियाँ नौ, यानी नौ य्वान बनते हैं। ठीक है ना? कल घर पहुँचा दोगे ना? पर नहीं, तुम्हें पहुँचाने की जरूरत नहीं है। मैं खुद ही ले जाऊँगी।"

मिसेज चू के मुरझाए होठों से शब्द बड़ी कठिनाई से निकल रहे थे। उन्होंने मिस्टर लिन की दुकान को सूद पर तीन सौ य्वान का कर्जा दिया था और वे हर महीने तीन य्वान सूद वसूल करने की हकदार थीं। पिछले तीन महीनों से मिस्टर लिन उन्हें सूद नहीं दे पाए थे और साल के अन्त में सारी रकम एक साथ चुकाने का वायदा कर चुके थे। अगले दिन पाकशाला-देवता का पर्व था। इस अवसर पर मिसेज चू कुछ उपहार खरीदना चाहती थीं। इसलिए मिस्टर लिन के पास आई थीं। उसे देखकर मिस्टर लिन समझ गये थे कि पैसा वसूल किए बिना वे यहाँ से टलने वाली नहीं हैं।

मिस्टर लिन चुपचाप खड़े सिर खुजाते रहे। सूद देने में उन्होंने कभी जानबूझकर कुताही नहीं की थी। दरअसल पिछले तीन महीनों से उनके व्यापार में बहुत मन्दी चल रही थी। रोजाना सिर्फ उतनी ही बिक्री होती थी जिससे महज खाने और टैक्स का खर्चा निकल सकता था। इसलिए चाहते हुए भी वे इस बुढ़िया का सूद नहीं चुका पाये थे। उन्होंने सोचा, अगर आज भी सूद न चुकाया, तो यह बुढ़िया दुकान में शोर मचा सकती है। यह बड़ी शर्म की बात होगी और इससे दुकान की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचेगा।

"ठीक है, ठीक है। सूद की रकम अभी ले जाइए!" मिस्टर लिन ने झुँझलाकर कहा। उनकी आवाज कुछ भर्राई हुई थी। वे फुर्ती से खजाँची के कठघरे में जा पहुँचे और पूरे दिन की बिक्री से प्राप्त सारी नकदी उठा लाए। उसमें बीस फन अपनी जेब से मिलाकर उन्होंने पूरी रकम बुढ़िया के हाथ में थमा दी। बुढ़िया ने एक-एक फन कई बार गिरा और फिर पूरी रकम नीले रूमाल में बाँध ली। मिस्टर लिन ने एक ठण्डी साँस भरी। सहसा उनके मन में एक वहशियाना विचार आया—क्यों न इस रकम का एक भाग अभी झाड़ लिया जाये!

"यह नीला रूमाल बहुत घिस गया है, मिसेज चू," उन्होंने फीकी हँसी हँसते हुए कहा। "सफेद लिनन का एक अच्छा-सा रूमाल क्यों नहीं खरीद लेतीं? हमारे यहाँ बढ़िया किस्म के तौलिए और साबुन भी हैं। नए साल के लिए कुछ लेती क्यों नहीं जातीं। दाम बिल्कुल वाजिब हैं!"

"नहीं, मुझे आज कुछ नहीं खरीदना है। मुझे जैसी बुढ़िया के लिए इन चीजों की क्या जरूरत है?" मिसेज चू ने हाथ हिलाकर इंकार करते हुए अपने बहीखाते

को जेब में डाल लिया और नीले कपड़े में बँधी रकम को मजबूती से पकड़कर दुकान से बाहर चली गयीं।

मिस्टर लिन मायूस होकर "अन्तःकक्ष" में चले गये। मिसेज चू के आगमन की घटना से उन्हें दो और लोग याद आ गये, जिनका कर्जा उन्हें चुकाना था। बुजुर्ग छन और विधवा चाङ से भी उनकी दुकान ने क्रमशः दो सौ और एक सौ पचास य्वान का कर्जा लिया हुआ था। उन्हें भी दस य्वान सूद देना था। इसे चुकाने में देरी करना सम्भव न था। वास्तव में इसे समय से पहले ही चुकाना जरूरी था। मिस्टर लिन उँगलियों पर गिनने लगे—चौबीस, पच्चीस, छब्बीस। छब्बीस तारीख तक देहात की सारी बकाया रकम वसूल होने की उम्मीद थी। सैल्समैन शओशङ परसों ही पैसे उगाहने गया था। वह ज्यादा से ज्यादा छब्बीस तारीख तक लौटने वाला था। कस्बे के उधार की उगाही का काम अट्ठाईस-उनतीस तारीख से पहले शुरू करना सम्भव नहीं था। पर शाङ्हाए की उस थोक दुकान का कारिन्दा एक-दो दिन में आ सकता था जिसका हिसाब मिस्टर लिन अभी नहीं चुका पाए थे। ऐसी स्थिति में उनके सामने एकमात्र रास्ता यह रह गया था कि स्थानीय बैंक से कुछ और कर्जा लें। कौन जानता था कि अगले दिन की बिक्री कैसी होगी?...

मिस्टर लिन गरदन झुकाकर गहरे सोच-विचार में डूब गये और दुकान के अन्दर चहलकदमी करने लगे। सहसा बेटी की आवाज कानों में पड़ी।

"पापा, यह रेशम का कपड़ा कैसा है? सात फुट के दाम सिर्फ चार य्वान बीस फन हैं! ज्यादा महँगा तो नहीं है ना?"

मिस्टर लिन का दिल बैठ गया। उन्हें जैसे काठ मार गया। अवाक होकर बेटी की ओर देखते रह गये। मिस लिन रेशम का कपड़ा हाथ में लिए हँस रही थी। चार य्वान बीस फन। यह कोई बड़ी रकम न थी। पर दुकान में पूरे दिन में सिर्फ सोलह य्वान की बिक्री हुई थी। वह भी खरीद के भाव पर! मिस्टर लिन जड़वत खड़े थे। धीमी-सी आवाज में बेटी से बोले :

"पैसे कहाँ से लाई?"

"उधार ले आई हूँ।"

एक खर्चा और बढ़ गया! मिस्टर लिन की त्यौरियाँ चढ़ गयीं। पर उन्होंने बेटी की आदत खुद ही बिगाड़ी थी। उनकी पत्नी भी हर बात में बेटी का ही पक्ष लेती थी। असहायों जैसी दर्दभरी मुस्कान के साथ उन्होंने एक गहरी उसाँस ली।

"तुझे हमेशा जल्दी पड़ी रहती है," वे कुछ बौखलाकर बोले। "क्या नए साल तक इन्तजार नहीं कर सकती थी?"

## 3

दो दिन और बीत गये। "भारी सेल" लगाने की वजह से मिस्टर लिन की दुकान की बिक्री सचमुच बहुत बढ़ गई। रोजाना तीस य्वान से ज्यादा का सौदा बिकने लगा। मिसेज लिन की हिचकियाँ काफी कम हो गयीं; अब उन्हें हर पाँच मिनट में सिर्फ एक हिचकी आ रही थी। मिस लिन दुकान और "अन्तःकक्ष" के बीच फुदकती नजर आ रही थी। उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था। कभी-कभार बिक्री काउण्टर पर मदद करने भी जा पहुँचती। माँ के बार-बार बुलाने पर ही वह पीछे के कमरे में लौटती और माथे का पसीना पोंछकर विरोधी के स्वर में कहती :

"माँ, मुझे फिर क्यों बुला लिया? क्या तुम सोचती हो मैं थक गई हूँ? पापा का बुरा हाल है। वे बुरी तरह थक गये हैं, पसीने से तरबतर हो गये हैं। आवाज भी बैठ गई है। एक ग्राहक अभी-अभी पाँच य्वान का सामान खरीद ले गया! माँ, यह न सोचो कि मैं थक जाऊँगी! पापा ने कहा है, कुछ देर आराम करके फिर दुकान में आ जाना।"

मिसेज लिन सिर्फ सिर हिलाती जा रही थीं और रह-रहकर हिचकियाँ लेती जा रही थीं। वे थोड़ी-थोड़ी देर बार कहती जा रही थीं : "हे भगवान, हम पर दया करो!" "अन्तःकक्ष" में करुणामूर्ति भगवान अवलोकितेश्वर की चीनी मिट्टी की प्रतिमा के सामने धूप जल रही थी। मिसेन लिन ने प्रतिमा के सामने माथा टेककर उसे प्रणाम किया। उन्होंने भगवान अवलोकितेश्वर की दयादृष्टि के लिए उनके प्रति आभार प्रकट किया और उनसे दुआ माँगी कि मिस्टर लिन का व्यापार हमेशा फलता-फूलता रहे, मिस लिन जल्दी बड़ी हो जाये और अगले वर्ष तक उसे अच्छा-सा वर मिल जायें

बाहर दुकान में मिस्टर लिन को सिर उठाने की भी फुरसत न थी। हालाँकि उनके चेहरे पर मुस्कान बनी हुई थी, फिर भी उन्हें लग रहा था जैसे उनके दिल को किसी ने रस्सी से जकड़ दिया हो। जब भी कोई ग्राहक लिफाफा बगल में दबाए सन्तुष्ट होकर दुकान से बाहर जाता, तो मिस्टर लिन के दिल में एक टीस-सी उठती, क्योंकि वे अपनी खून-पसीने की कमाई के हर य्वान पर लागत से पाँच प्रतिशत कम दाम ले रहे थे और घाटा उठा रहे थे। उन्होंने कई बार कोशिश की कि घाटा तीन प्रतिशत रह जाये, लेकिन चाहे जैसे हिसाब लगाते, घाटा पाँच प्रतिशत ही निकलता। बिक्री लगातार बढ़ती जा रही थी। पर जितनी ज्यादा बिक्री होती मिस्टर लिन की परेशानी भी उतनी ही ज्यादा बढ़ती जाती। ग्राहकों को माल दिखाते समय उनके मन का अन्तर्द्वन्द्व कभी-कभी इतना बढ़ जाता कि उन्हें चक्कर आने लगता। जब कभी उनकी नजर सड़क के उस पार वाली दुकान पर पड़ती तो उन्हें लगता मानो उस दुकान के मालिक और सेल्समैन काउण्टर के पीछे खड़े होकर उनकी खिल्ली उड़ा रहे हों और कह रहे हों : जरा इस मुर्ख लिन को तो देखो!

लागत से भी कम दाम पर माल बेच रहा है! कुछ दिन ठहर जाओ! जितनी ज्यादा बिक्री होगी, इस मूर्ख का उतना ही ज्यादा घाटा उठाना पड़ेगा! और एक दिन दुकान पर ताला पड़ जायेगा!

मिस्टर लिन होंठ चबाने लगे। उन्होंने सौगन्ध खाई कि अगले दिन वे भी अपने माल के दाम बढ़ा देंगे। दूसरे दर्जे का माल पहले दर्जे के माल के दाम बेचेंगे।

तभी व्यापार-मण्डल का प्रधान दुकान में आ पहुँचा। यह वही व्यक्ति था जिसने जापानी माल बेचने के सवाल के बारे में क्वोमिन्ताङ के मुखिया से मिस्टर लिन की सिफारिश की थी। उसने मुस्कराकर मिस्टर लिन को बधाई दी और उनकी पीठ थपथपाने लगा।

"कैसा कारोबार चल रहा है, लिन भाई? चार सौ य्वान खर्च करना बेकार नहीं गया ना!" वह धीमे से बोला। "बेहतर यह होगा कि क्वोमिनताङ के कमिश्नर फू को भी कोई छोटा-मोटा तोफा दे दो। वरना वह नाराज हो-जायेगा और झूठमूठ परेशान करेगा। व्यापार अच्छा चल रहा हो, तो बहुत से लोग ईर्ष्या करने लगते हैं। अगर कमिश्नर फू के मन में कुछ भी न हो, तो भी लोग उसे उकसाने की कोशिश करेंगे!"

व्यापार-मण्डल के प्रधान को मिस्टर लिन ने उसके द्वारा दिखाई गई चिन्ता के लिए धन्यवाद दिया। पर मन में वे बहुत क्षुब्ध हो उठे और उनका सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया।

पर सबसे ज्यादा परेशान वे इस बात से थे कि उनका सेल्समैन शओशङ अभी तक उधार का पैसा उगाहने के बाद लौटा नहीं था। शाङहाए की थोक दुकान का हिसाब चुकाने के लिए पैसे की सख्त जरूरत थी। उसका कारिन्दा दो दिन पहले शाङहाए से आ चुका था और तकाजे पर तकाजा कर रहा था। अगर शओशङ जल्दी ही न लौटा, तो मिस्टर लिन को बैंक से उधार लेना पड़ेगा। इस तरह पचास-साठ य्वान सूद का बोझ और बढ़ जायेगा। मिस्टर लिन के लिए, जो हररोज घाटा उठा रहे थे, यह स्थिति कोड़ों की मार सहने से कहीं ज्यादा दुखदायी होगी।

शाम के लगभग चार बजे मिस्टर लिन को अचानक सड़क पर भारी कोलाहल सुनाई पड़ा। लोग सहमे-सहमे लग रहे थे, मानो कोई भारी विपत्ति आ गई हो। मिस्टर लिन को, जो केवल शओशङ के सुरक्षित वापस लौटने के बारे में चिन्तित थे, पक्का विश्वास होता जा रहा था कि जिस नाव पर बैठकर शओशङ लौटने वाला है उसे जलदस्युओं ने कब्जे में कर लिया है। उनका दिल तेजी से धड़कने लगा। सड़क पर जा रहे एक आदमी से उन्होंने चिन्ता के स्वर में पूछा :

"क्या हुआ? क्या जलदस्युओं ने लीशि से आने वाली नाव को लूट लिया है?"

"ओह! तो जलदस्यु फिर सक्रिय हो गये हैं! सफर करना सचमुच कितना खतरनाक होता जा रहा है! लूटमार आम बात हो गई है! नाव से उतरते ही यात्रियों का अपहरण कर लिया जाता है!" कुख्यात शोहदे लू ने शिकायतभरे स्वर में कहा।

वह मिस्टर लिन की दुकान के पासे से गुजर रहा था। दुकान में प्रदर्शित रंगबिरंगी चीजों की तरफ उसने ललचाई नजरों से देखा।

मिस्टर लिन उसकी बात सुनकर कोई निष्कर्ष नहीं निकाल पाए। उनकी चिन्ता बढ़ने लगी। लू के कुछ देर बाद वाङ उनकी दुकान के सामने आ पहुँचा।

"क्या यह सच है कि लीशि से आने वाली नाव को लूट लिया गया है?"

"हो न हो, यह आशू के गिरोह का ही काम है। आशू को तो गोली मार दी गई है, लेकिन उसके गिरोह को काबू करना अब भी मुश्किल हो रहा है!" वाङ ने उत्तर दिया और वह बिना रुके आगे बढ़ गया।

मिस्टर लिन के माथे पर पसीने की बूँदें झलक आईं। उन्हें यकीन था कि शओशङ आज ही लौटने वाला है और लीशि से ही लौटने वाला हे। बहीखाते की सूची के मुताबिक यह अन्तिम स्थान था जहाँ से उसे पैसे वसूल करने थे। शाम के चार बज चुके थे। पर शओशङ अभी तक नहीं पहुँचा था। वाङ की बात सुनकर मिस्टर लिन के मन में सन्देह की कोई गुँजाइश नहीं रह गई। वे भूल गये कि नाव के लूटे जाने की कहानी का आविष्कार उन्होंने खुद ही किया था। उनका पूरा चेहरा पसीने से तर हो गया। वे फौरन "अन्तःकक्ष" में चले गये। हड़बड़ाहट में वे दरवाजे की चौखट से जा टकराए और गिरते-गिरते बचे।

"पापा, सुना है शाङहाए में लड़ाई हो रही है! जापानी फौजें चापेई क्षेत्र पर बम बरसा रही हैं!" मिस लिन दौड़कर पिता के पास आ गई।

मिस्टर लिन एकाएक रुक गये। शाङहाए में लड़ाई? यह सब क्या है? उन्होंने सोचा, इससे उन्हें क्या मतलब? मगर इस घटना से "जापानियों" का सम्बन्ध भी था। इसलिए उन्होंने कुछ और पूछताछ करना उचित समझा। बेटी के उत्तेजित चेहरे पर नज़र टिकाकर उन्होंने पूछा :

"क्या जापानियों ने बम भी बरसाए हैं? किसने बताया तुम्हें?"

"कस्बे के हर आदमी की जबान पर यही चर्चा है। जापानी सैनिक भारी गोलाबारी कर रहे हैं और बम बरसा रहे हैं। सारा चापेई जलकर खाक हो गया है!"

"क्या किसी ने यह भी कहा कि लीशि से आने वाली नाव लूट ली गई है?"

मिस लिन ने सिर हिलाकर इंकार कर दिया और बिजली की सी फुर्ती के साथ कमरे से बाहर चली गई। मिस्टर लिन हक्केबक्के रह गये और सिर खुजाते हुए दरवाजे के पास खड़े रहें मिसेज लिन हिचकियाँ लेती जा रही थीं और धीमी आवाज में भगवान से प्रार्थना करती जा रही थीं।

"हे बुद्ध भगवान, हमारी रक्षा करो! हे दयानिधान, हमें बम के गोलों से बचाओ!"

मिस्टर लिन पीछे मुड़े और फिर दुकान में जा पहुँचे। वहाँ उनकी बेटी दोनों सेल्समैनों से गरमागरम बहस में उलझी हुई थी। सड़क के उस पार वाली दुकान का मालिक काउण्टर के पीछे से बाहर निकल आया था और बड़े नाटकीय ढंग से

बातें कर रहा था। शाङहाए में लड़ाई चल रही है; जापानी विमान चापेई पर बम बरसा रहे हैं और उसे तहस-नहस कर चुके हैं; शाङहाए के व्यापारियों ने अपना कारोबार बन्द कर दिया है—ये सब खबरें सच थीं। लेकिन क्या जलदस्युओं द्वारा नाव के लूटे जाने की खबर भी सच थी? इसके बारे में किसी ने कुछ नहीं सुना था। और लीशि आने वाली नाव? वह सही-सलामत आ पहुँची थी। सड़क के उस पार वाले दुकानदार ने अभी-अभी नाव से उतारी गयी दो बड़ी-बड़ी पेटियाँ उठाए गोदी-मज़दूरों को देखा था। मिस्टर लिन ने राहत की साँस ली। शओशङ अभी नहीं लौटा था। पर यह निश्चित था कि उसे जलदस्युओं ने नहीं लूटा।

पूरे कस्बे में शाङहाए के संकट की जोरों से चर्चा हो रही थी। नौजवान कर्मचारी जापानी हमलावरों की भर्त्सना कर रहे थे। लोग यहाँ तक कह रहे थे : "जो साला जापानी माल खरीदेगा, वह कमीना कुत्ता है!" ये शब्द सुनकर मिस लिन का मुँह लाल हो गया था, पर मिस्टर लिन के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई थी। सभी दुकानें जापानी माल बेच रही थीं। यही नहीं, कुछ सौ य्वान खर्च करने के बाद व्यापारियों ने क्वोमिन्ताङ के मुखियों से जापानी माल बेचने की विशेष अनुमति भी प्राप्त कर ली थी, जिसमें कहा गया था, "लेबिल उतारकर जपानी माल बेचा जा सकता है"। मिस्टर लिन की दुकान में मौजूद सभी चीजों को "स्वदेशी माल" में बदल दिया गया था। ग्राहक भी उन्हें "स्वदेशी माल" ही कहने लगे थे और खरीदारी के बाद अपने-अपने पैकेट उठाकर घर लौट जाते थे।

शाङहाए में युद्ध छिड़ने के कारण कस्बे के लोगों को खरीदारी में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी। पर मिस्टर लिन अपनी दुकान की चिन्ता में डूबे हुए थे। वे स्थानीय बैंक से भारी सूद पर ऋण नहीं लेना चाहते थे। इसलिए शाङहाए की थोक दुकान के कारिन्दे से यह अनुरोध करने के सिवाय कि मित्रता के नाते वह एक-दो दिन और रुक जाये, उनके सामने कोई अन्य उपाय नहीं रह गया था। उन्होंने कहा, शओशङ कल शाम तक जरूर आ जायेगा, तब सारा हिसाब चुका देंगे।

"लिन साहब, आप इतने समझदार आदमी हैं। फिर भी ऐसी बात क्यों कह रहे हैं? शाङहाए में लड़ाई चल रही है। कहीं कल-परसों तक ट्रेन-सर्विस बन्द न हो जायें मैं आज रात जरूर लौटना चाहता हूँ! एक-दो दिन और इन्तजार कैसे कर सकता हूँ? मेहरबानी करके आज ही मेरा हिसाब चुका दीजिए, जिससे कल सुबह पहली गाड़ी से चला जाऊँ। मैं अपनी मरजी का मालिक थोड़े ही हूँ। मुझ पर तरस खाइए!"

शाङहाए का कारिन्दा अपनी बात पर अड़ा रहा। मिस्टर लिन को लगा, उसे मनाना मुश्किल है। स्कानीय बैंक से कर्जा लेने के सिवाय उनके सामने और कोई उपाय नहीं था। पर चिन्ता यह थी कि वह "बुड्ढा मक्खीचूस" बैंक-मैनेजर उनकी

फौरी जरूरत को देखते हुए मनमाना सूद माँगेगा। मिस्टर लिन ने जब बैंक-मैनेजर से बात शुरू की तभी से उन्हें लगने लगा कि वातावरण अनुकूल नहीं है। जब मिस्टर लिन अपनी बात कह चुके, तब भी तपेदिक का मरीज वह बुड्ढा आदम के जमाने की चिलम गुड़गुड़ाता रहा। जब हुक्के का सारा तम्बाकू जलकर खाक हो गया, तो वह धीरे से बोला :

"मैं लाचार हूँ। जापानियों ने युद्ध छेड़ दिया है। शाङहाए में सारे कारोबार ठप हो चुके हैं। सारे बैंक बन्द हो गये हैं। कौन जानता है, हालत कब सुधरेगी! शाङहाए से सम्बन्ध टूटा, तो मेरा बैंक उस केकड़े की तरह हो जायेगा जिसके पाँव कट चुके हों। अगर पैसे आने-जाने बन्द हो गये, तो मैं तुम जैसे अच्छे ग्राहकों से भी लेन-देन नहीं कर सकूँगा। माफ करो भाई। मैं तुम्हारी मदद तो करना चाहता हूँ, पर लाचार हूँ। मेरे हाथ-पाँव बिल्कुल बँधे हुए हैं!"

मिस्टर लिन मौन रहे। उन्होंने सोचा, तपेदिक का मरीज बैंक-मैनेजर ज्यादा सूद ऐंठने के लिए भूमिका बाँध रहा है। अभी वे अपना अनुरोध फिर एक बार दोहराने ही जा रहे थे कि मैनेजर ने और अधिक कड़ा रुख अपनाकर उन्हें अचम्भे में डाल दिया। वह बोला :

"हमारे मालिक की हिदायतें हमारे पास पहुँच चुकी हैं। उन्हें पता चला है कि परिस्थिति और अधिक खराब होने जा रही है। उन्होंने हमें सख्ती बरतने का आदेश दिया है। तुम्हारी दुकान ने पहले पाँच सौ य्वान उधार लिए; बाईस तारीख को तुम सौ और ले गये—कुल छः सौ हो गये। नए साल से पहले तुम्हें सारी रकम चुकानी है। तुम्हारे साथ हमारा लेन-देन काफी लम्बे समय से चल रहा है, इसलिए मैं तुम्हें यह सब पहले से ही बता रहा हूँ। मैं चाहता हूँ, ऐन मौके पर बदमगजी न पैदा हो और विवाद न उठ खड़ा हो।"

"सो तो है, पर इस समय हमारी छोटी सी दुकान को बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, मैनेजर साहब," मिस्टर लिन ने परेशानी के स्वर में कहा। "मुझे यह भी देखना है कि उधार-खाते की कितनी उगाही होती है।"

"ओह! इतनी विनम्रता दिखाने की क्या जरूरत है? पिछले कुछ दिनों से तो तुम्हारी बिक्री बाकी लोगों से कहीं ज्यादा हो रही है! सिर्फ छः सौ य्वान ही तो चुकाना है। यह तुम्हारे लिए क्या मुश्किल है? लिन भाई, मैंने सारी बात तुम्हें साफ-साफ बता दी है। उम्मीद है कि तुम सारा कर्जा फौरन चुका दोगे। इस तरह मैं भी अपने मालिक द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी को पूरा कर सकूँगा।"

तपेदिक के मरीज मैनेजर के शब्दों में उदासीनता थी। वह उठ खड़ा हुआ। मिस्टर लिन का दिल बैठ गया। वे समझ गये कि स्थिति काबू के बाहर है। लड़खड़ाते कदमों से बैंक से बाहर निकलने के सिवाय उनके सामने और कोई उपाय नहीं रह गया। अब उन्हें समझ में आ गया कि दूर शाङहाए में होने वाले युद्ध का उनकी

छोटी-सी दुकान पर भी असर पड़ने जा रहा है। उन्होंने सोचा, इस बार नववर्ष के पहले बड़ी कठिन स्थिति का सामना करना पड़ रहा है : शाङहाए का कारिन्दा बार-बार तगादा कर रहा है; बैंक नववर्ष तक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार नहीं है; शओशङ अभी तक नहीं लौटा और यह कतई नहीं मालूम कि उस पर क्या बीत रही है। जहाँ तक कस्बे की उगाही का ताल्लुक है, पिछले साल सिर्फ अस्सी प्रतिशत रकम उगाही जा सकी थी। जैसी हालत इस समय चल रही है, उसे देखते हुए इस साल उतने पैसे वसूल होने की भी गारण्टी नहीं है।

मिस्टर लिन के सामने अब सिर्फ एक ही रास्ता रह गया था : "बहीखाते तैयार करने के लिए व्यापार अस्थायी रूप से बन्द!" और यह दिवालिएपन के समान था। काफी समय से दुकान की पूँजी में उनका अपना एक भी पैसा नहीं रह गया था। जिस दिन बहीखाते तैयार हो जायेंगे और ऋणदाताओं का भुगतान कर दिया जायेगा, उस दिन शायद उनके पास अपने परिवार की नग्नता को ढकने के लिए भी कुछ नहीं बचेगा!

मिस्टर लिन जितना सोचते जाते, उतने ही दुखी भी होते जाते। पुल पार करते समय उन्होंने नदी के गदले पानी में नजर डाली। वे नीचे कूदकर अपनी जीवनलीला समाप्त करने ही वाले थे कि किसी ने पीछे से अभिवादन किया और पूछा :

"लिन साहब, क्या यह सच है कि शाङहाए में युद्ध चल रहा है? मैंने सुना है, सैनिकों की एक टुकड़ी ने, जिसे अभी-अभी कस्बे के पूर्वी द्वार के बाहर तैनात किया गया है, व्यापार-मण्डल से बीस हजार य्वान के 'कर्जे' की माँग की है। इस पर विचार करने के लिए इस समय व्यापार-मण्डल की मीटिंग चल रही है!"

मिस्टर लिन हड़बड़ाकर पीछे मुड़े तो देखा उनका एक अन्य ऋणदाता बुजुर्ग छन खड़ा है, जिसनें अपने दो सौ य्वान उनकी दुकान में सूद पर लगाए हुए थे।

"ओह!" मिस्टर लिन ने काँपती आवाज में कहा और पुल पार करके तेजी से घर लौट गये।

## 4

उस दिन शाम के भोजन के लिए मिसेज लिन ने रोजमर्रा की तरह एक गोश्त और दो सब्जियाँ बनाने के अलावा बाजार से धीमी आँच में पका गोश्त भी खरीदा था, जो मिस्टर लिन को बहुत पसन्द था। साथ ही एक पाइन्ट पीली शराब भी खरीदी थी। मिस लिन लगातार मुस्कराती जा रही थी। वह बहुत खुश थी, क्योंकि दुकान में बिक्री अच्छी हुई थी, उसकी नई रेशमी पोशाक सिलकर तैयार हो गई थी, और चीन के लोग शाङहाए में जापानियों का प्रतिरोध कर रहे थे। मिसेज लिन की हिचकियाँ भी कम हो गई थीं—हर दस मिनट में सिर्फ एक हिचकी आ रही थी।

मगर मिस्टर लिन चिन्ता में डूबे हुए थे। उन्होंने बड़ी उदासीनता से शराब का घूँट लिया और फिर बेटी और पत्नी की तरफ देखा। मन में कई बार विचार आया कि उस बुरी खबर का सबके सामने बम के गोले की तरह विस्फोट कर दें, पर साहस न हुआ। फिर वे अभी पूरे तरह हताश भी नहीं हुए थे और संघर्ष जारी रखना चाहते थे; कम से कम जीविका चलाने के प्रयास में तो वे अपनी असफलता पर पर्दा पड़ा रहने देना चाहते थे।

इसलिए जब व्यापार-मण्डल ने सैनिकों को पाँच हजार य्वान देने का प्रस्ताव पास किया और मिस्टर लिन से बीस य्वान देने को कहा, तो उन्होंने जरा भी हिचकिचाए बिना एकदम मंजूर कर लिया। उन्होंने फैसला कर लिया कि वे अपनी पत्नी और बेटी को अन्तिम क्षण तक सच्चाई नहीं बतायेंगे। उन्होंने इस तरह हिसाब लगाया; जो रकम लोगों से लेनी है उसका अस्सी प्रतिशत वसूल हो जायेगा; जो रकम लोगों को देनी है उसका भी अस्सी प्रतिशत चुका दिया जायेगा। जो हो, उनके पास यह बहाना तो था ही कि शाङहाए में युद्ध होने के कारण बैंक से उधार लेना सम्भव नहीं है। पर मुश्किल यह थी कि जो रकम लोगों से वसूल करनी थी और जो लोगों को चुकानी थी उसके बीच लगभग छः सौ य्वान को फर्क था। यह सवाल हल करने के लिए कोई कारगर उपाय अपनाना और कीमतों में भारी कमी करना जरूरी था। इस तरह कुछ पैसे और खींचकर फौरी समस्या को तो हल किया जा सकता था। बाकी बाद में देखा जायेगा। ऐसे संकटकाल में भविष्य की किसे पड़ी थी? फौरी समस्या हल हो जाये, यही काफी था।

मिस्टर लिन ने इस तरह अपनी योजना तय कर डाली। एक पाइन्ट पीली शराब पेट में पहुँचकर अपना रंग दिखाने लगी। उस दिन मिस्टर लिन को पूरी रात गहरी नींद आई और एक भी बुरा सपना नहीं दिखाई दिया।

सुबह आँख खुली तो साढ़े छः बज चुके थे। आसमान में बादल छाए हुए थे। मिस्टर लिन का सिर कुछ भारी था। चावल की लपसी के दो कटोरे जल्दी-जल्दी पेट में उतारकर वे दुकान में जा पहुँचे। वहाँ सबसे पहले शाङहाए की थोक दुकान के कारिन्दे से साक्षात्कार हुआ, जो त्यौरियाँ चढ़ाए "उत्तर" की प्रतीक्षा कर रहा था। पर जिस बात से मिस्टर लिन को खास तौर पर धक्का लगा वह यह थी : सड़क के उस पार वाली दुकान ने भी अपने शोकेसों में कागज की लाल व हरी पट्टियों पर "भारी सेल, 10 प्रतिशत छूट" लिखकर लगा दिया था। मिस्टर लिन ने कल रात जो योजना बनाई थी उस पर प्रतिद्वन्द्वी की सेल की पट्टियों ने पूरी तरह पानी फेर दिया था।

"यह क्या मजाक है, लिन साहब? अब तक आपने पैसों के बारे में कोई उत्तर नहीं दिया। सुबह आठ बजे नाव चली जायेगी। मुझे आगे ट्रेन भी पकड़नी है। आठ बजे वाली नाव से जाना मेरे लिए निहायत जरूरी है! मेहरबानी करके जल्दी

कीजिए—" शाङहाए के कारिन्दे ने बेचैन होकर कहा और आवेश में मुट्ठी जोर से मेज पर दे मारी।

मिस्टर लिन ने अफसोस जाहिर किया और माफी माँगी। उन्होंने कहा, यह सब सचमुच शाङहाए में चल रहे युद्ध के कारण और बैंक से उधार लेने में कठिनाई होने के कारण ही हुआ है। आखिर वे इतने साल से व्यापार कर रहे है। इस बात का उसे कुछ तो लिहाज करना चाहिए।

"तो क्या मुझे खाली हाथ ही लौटना पड़ेगा?"

"नहीं, ऐसा हरगिज नहीं होगा। शओशङ के लौटते ही उसके द्वारा वसूल की गई पूरी रकम तुम्हें दे दूँगा। मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ जिसने कभी किसी का एक भी पैसा मारा हो!" मिस्टर लिन की आवाज काँपने लगी। उन्होंने बड़ी मुश्किल से अपने आँसू थामे।

और कुछ कहने को बाकी नहीं रह गया था। शाङहाए के कारिन्दे ने शिकायत करना बन्द कर दिया। पर वह अपनी जगह से हिला नहीं, जमकर वहीं बैठा रहा। मिस्टर लिन की चिन्ता बढ़ती गई। उनका दिल तेजी से धड़कने लगा। पिछले कुछ वर्षों से उनकी मुश्किलें लगातार बढ़ती जा रही थीं। फिर भी समाज में प्रतिष्ठा पहले की ही तरह बनी हुई थी। पर आज पैसे उगाहने के लिए कारिन्दा उनकी दुकान पर बैठा हुआ था और सारी दुनिया देख रही थी। अगर यह बात फैल गई, तो मिस्टर लिन की सारी साख धूल में मिल जायेगी। उन्होंने अनेक लोगों से कर्ज लिया था। अगर वे सभी तगादा करने आ पहुँचे, तो क्या होगा? शायद दुकान पर फौरन ताला पड़ जायेगा। वे शाङहाए के कारिन्दे से पिछले कमरे में जाकर आराम से बैठने का आग्रह करते-करते हार गये, पर उसने एक न सुनी।

बाहर बरफ जैसी ठण्डी बारिश पड़ने लगी। सड़क ठण्ड की वजह से बिल्कुल सुनसान-वीरान हो गई थी। नए साल के मौके पर ऐसा मनहूस माहौल पहले कभी देखने में नहीं आया था। उत्तर की हवा के थपेड़ों से दुकानों के साइनबोर्ड खड़खड़ाने लगे। बरफ जैसी ठण्डी बारिश धीरे-धीरे बरफबारी में बदलने लगी। सड़क के दोनों तरफ की दुकानों से सेल्समैन काउण्टर पर झुककर शून्य दृष्टि से आसमान की ओर ताक रहे थे।

मिस्टर लिन और शाङहाए का कारिन्दा बीच-बीच में एक दूसरे से कुछ उखड़ी-पुखड़ी बेतरतीब बातें करते जा रहे थे। अनानक मिस लिन "अन्तःकक्ष" के दरवाजे से बाहर निकली और सामने के शोकेस के पास खड़ी होकर बरफ जैसी ठण्डी बारिश को देखने लगी। पीछे के कमरे में मिसेज लिन की हिचकियों की आवाज लगातार बढ़ती जा रही थी। शाङहाए के कारिन्दे के प्रति अपने व्यवहार में कुछ मिठास लाने का प्रयास करते हुए मिस्टर लिन ने बेटी की तरफ देखा और पत्नी की हिचकियों को सुना। उनका हृदय अत्यन्त खिन्न हो उठा। उन्होंने सोचा,

क्या वजह है कि मैं जिन्दगीभर कभी सुख-चैन से नहीं रह पाया; आखिर कौन जिम्मेदार है मेरी इस दयनीय दशा के लिए!

शाङ्हाए का कारिन्दा अब कुछ शान्त हो चुका था। "लिन साहब," वह बड़े सौहार्दपूर्ण स्वर में बोला, "आप एक नेक आदमी हैं। अय्याशी की जिन्दगी से दूर रहते हैं। ईमानदारी और लगन से व्यापार करते हैं। बीस साल पहले की हालत होती, तो आप काफी धनवान हो जाते। पर आज हालत कुछ और ही है। टैक्स आसमान को छू रहे हैं, खर्चे बढ़ गये हैं, व्यापार मन्दा है—कारोबार को चलाते रहना भी एक बड़ी उपलब्धि है!"

मिस्टर लिन ने एक ठण्डी साँस भरी और हताश होने पर भी नम्रता से मुस्करा दिए।

कुछ रुकने के बाद शाङ्हाए के कारिन्दे ने अपनी बात जारी रखी : "इस साल कस्बे में व्यापार की हालत पिछले साल से कुछ ज्यादा खराब है। क्यों, है या नहीं? भीतरी इलाकों के कस्बों का व्यापार गाँव वालों पर निर्भर है। पर किसान कंगाल होते जा रहे हैं। कहीं कोई हल नजर नहीं आ रहा।... ओह, नौ बज चुके हैं। आपका आदमी अभी तक नहीं आया! वह भरोसे का आदमी तो है ना?"

मिस्टर लिन को यह सुनकर धक्का-सा लगा। कुछ देर तक उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझा। शओशङ पिछले सात-आठ साल से उनके पास सेल्समैन का काम कर रहा था। उससे कभी कोई कुताही नहीं हुई थी। फिर भी किसी के बारे में सौ फीसदी गारण्टी कैसे की जा सकती थी! फिर उसके लौटने में भी तो जरूरत से ज्यादा देर हो चुकी थी! शाङ्हाए के कारिन्दे ने मिस्टर लिन के चेहरे पर सन्देह की रेखाएँ उभरती देखीं, तो वह हँस पड़ा। पर उसकी हँसी बड़ी रहस्यपूर्ण थी।

शोकेस के पास खड़ी मिस लिन पीछे मुड़कर जोर से चिल्लाई : "पापा, शओशङ आ गये हैं! उनके सारे कपड़े मिट्टी से सने हैं!"

उसकी आवाज में एक अजीब-सा कम्पन था। सुनते ही मिस्टर लिन उछल पड़े। उनके चेहरे पर घबराहट भी थी और खुशी भी। वे दौड़कर बाहर जाना चाहते थे और शओशङ को देखना चाहते थे। पर भावावेश के कारण उनके हाथ-पाँव जवाब दे रहे थे। तब तक शओशङ दुकान में पहुँच गया। उसके कपड़े सचमुच मिट्टी से सने थे। वह हाँफता हुआ आया और धम्म से बैठ गया। मुँह से एक भी शब्द नहीं बोल पाया। उसकी हालत बड़ी नाजुक थी। मिस्टर लिन बेहद घबरा गये और मौन खड़े रहे। शाङ्हाए के कारिन्दे की भौंहें तन गयीं। कुछ देरे मौन रहने के बाद शओशङ हाँफता हुआ बोला :

"जान बची लाखों पाए! उन्होंने तो मुझे लगभग पकड़ ही लिया था!"

"क्या नाव को लूट लिया गया है?" मिस्टर लिन ने अपने को सम्भालते हुए ऊँची आवाज में पूछा।

"नहीं, नाव को नहीं लूटा गया। वे लोग फौज के लिए जबरन कुली भरती कर रहे थे। मैं कल तीसरे पहर नाव नहीं पकड़ पाया; आज सुबह छोटी नाव से चला। अभी हम लोग रास्ते में ही थे, तो मालूम हुआ कि वे लोग हमारी नाव को घेरने के लिए घाट पर इन्तजार कर रहे हैं। इसलिए हम लोगों ने घाट से कुछ दूर नाव किनारे लगाई। नाव से उतरने के बाद हम अभी आधा ली भी नहीं चल पाए होंगे कि फौज के लिए जबरन भरती करने वालों ने घेर लिया। कपड़े की दुकान के कर्मचारी को उन्होंने पकड़ लिया। पर मैं भाग निकला और छोटे रास्ते से दौड़ता हुआ यहाँ आ पहुँचा। सत्यानाश हो उनका! मैं उनके चंगुल से बाल-बाल बचकर आया हूँ!"

शओशङ ने बात करते-करते अपनी जाकिट ऊपर उठाई और पैसे रखने की पेटी से कपड़ें में लिपटी एक पोटली निकालकर मिस्टर लिन के हवाले कर दी।

"सारा पैसा इसी में है," वह बोला। "लीशि में ह्वाङ की दुकान बड़ी वाहियात जगह है। अगले वर्ष से हमें इस तरह के ग्राहकों से सतर्क रहना चाहिए।... मैं मुँह-हाथ धोकर और कपड़े बदलकर अभी आता हूँ।"

पोटली को दबाते ही मिस्टर लिन का चेहरा चमक उठा। वे फौरन खजाँची के कठघरे में जा पहुँचे और पोटली खोल ली। पहले उन्होंने देनदारों की सूची की सारी रकम को जोड़ा; फिर उगाही गई कुल रकम को गिना : ग्यारह चाँदी के य्वान, दो सौ च्याओ*, चार सौ बीस य्वान के नोट तथा क्रमशः पास ल्याङ** और पैंसठ ल्याङ चाँदी के दो बैंक ड्राफ्ट, जिनका भुगतान सरकारी दर पर होना था। अगर वे यह सारी धनराशि भी शाङहाए के कारिन्दे के हवाले कर देतें, तो भी थोक व्यापारी का पूरा उधार चुकाने के लिए सौ य्वान से कुछ ज्यादा रकम कम पड़ती।

मिस्टर लिन गहरी चिन्ता में डूब गये। उन्होंने कई बार कनखियों से शाङहाए के कारिन्दे की तरफ देखा। वह चुपचाप सिगरेट के कश लगा रहा था। अन्त में मिस्टर लिन ने एक गहरी उसाँस भरी और दोनों बैंक-ड्राफ्ट तथा चार सौ य्वान नकद शाङहाए के कारिन्दे के हाथ में इस तरह थमा दिए मानो अपने शरीर का कोई अंग काटकर उसके हवाले कर रहे हों। इसके बाद वे उसे तब तक समझाते रहे जब तक उसने "ठीक है" नहीं कह दिया।

कारिन्दे ने बैंक-ड्राफ्टों को दो बार उलट-पलटकर देखने के बाद मुस्कराते हुए कहा, "एक तकलीफ और करें, लिन साहब। जरा ये ड्राफ्ट भी भुनवा दें।"

"जरूर, जरूर," मिस्टर लिन ने झट उत्तर दिया। उन्होंने फौरन ड्राफ्टों के पीछे दुकान की मोहर लगाई और एक सेल्समैन को उन्हें भुनवाने स्थानीय बैंक में भेज दिया। पर कुछ देर बाद सेल्समैन खाली हाथ लौट आया। बैंक ने ड्राफ्ट तो स्वीकार

---

* एक य्वान का दसवाँ भाग।

** एक ल्याङ=1.0047 औंस।

कर लिए थे, पर नकद भुगतान करने के बदले यह रकम मिस्टर लिन के ऋण-वसूली खाते में डाल दी थी। बाहर भारी बरफबारी हो रही थी। उसकी परवाह किए बगैर मिस्टर लिन बिना छतरी उठाए व्यक्तिगत रूप से अनुनय करने बैंक में जा पहुँचे। पर उनका प्रयास व्यर्थ गया।

"अब क्या होगा?" शाङहाए के कारिन्दे ने मिस्टर लिन को खाली हाथ लौटते देखकर बेचैनी से पूछा।

मिस्टर लिन के चेहरे से व्यथा स्पष्ट झलक रही थी। वे रुआँसे हो गये। उनके मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला। केवल गहरी उसाँसें लेते रहे। कारिन्दे से कुछ और अधिक नरमी दिखाने का अनुरोध करने के सिवाय वे कर ही क्या सकते थे? शओशङ ने भी मिस्टर लिन की पैरवी की। उसने यकीन दिलाया कि बाकी दो सौ य्वान नववर्ष के पहले महीने की दस तारीख तक अवश्य शाङहाए पहुँच जायेंगे। उसने कहा, मिस्टर लिन पुराने ग्राहक हैं और हमेशा समय पर पैसा चुकाते रहे हैं। आज उनकी दुकान की ऐसी हालत होगी, इसकी किसे उम्मीद थी! उनकी भी मजबूरियाँ हैं। ऐसी बात नहीं है कि वे आनाकानी कर रहे हैं।

शाङहाए का कारिन्दा अड़ा रहा। मजबूर होकर मिस्टर लिन बड़ी व्यथा के साथ वे पचास य्वान भी निकाल लाए जिन्हें उन्होंने पिछले कुछ दिनों में कमाया था। जब कारिन्दे के हाथ में चार सौ पचास य्वान पहुँच गये, तब कहीं मिस्टर लिन उससे अपना पिण्ड छुड़ा पाए।

सुबह के ग्यारह बज चुके थे। बरफ के मुलायम रेशे अब भी लगातार गिर रहे थे। सड़क पर एक भी ग्राहक नहीं दिखाई दे रहा था। मिस्टर लिन थोड़ी देर चुपचाप कुछ सोचते रहे, फिर शओशङ के साथ मशविरा करने लगे कि कस्बे में उगाही कैसे की जायें दोनों ही परेशान थे; किसी को भरोसा नहीं था कि कस्बे में कुछ छः सौ य्वान के उधार में से ज्यादा उगाही हो सकेगी। शओशङ मिस्टर लिन के कान के पास जाकर धीरे से फुसफुसाया :

"सुना है कस्बे के दक्षिणी दरवाजे और पश्चिमी दरवाजे की दोनों दुकानों की हालत नाजुक है। इन दुकानों से हमें तीन सौ य्वान वसूल करने हैं। यह रकम जितनी जल्दी वसूल कर लें उतना अच्छा होगा। अगर उनका दिवाला पिट गया, तो हम लोग हाथ मलते रह जायेंगे!"

मिस्टर लिन के चेहरे का रंग उड़ गया; होंठ काँपने लगे। शओशङ ने धीमी आवाज में एक और दिल दहलाने वाली ख़बर सुनाई :

"इधर एक अफवाह हमारी दुकान के बारे में भी फैली हुई है। जरूर बैंक में भी पहुँच चुकी होगी। शायद इसीलिए वह हम पर जरूरत से ज्यादा दबाव डाल रहा है। इसकी भनक शायद शाङहाए के कारिन्दे के कानों में भी पड़ चुकी है। हमारे खिलाफ ऐसी हरकत आखिर कौन कर सकता है? यह कहीं सड़क के उस पार

वाली दुकान की करतूत तो नहीं है?"

शओशङ ने होंठ दबाकर सड़क के उस पार वाले दुकानदार की तरफ इशारा किया। मिस्टर लिन की आँखें उसके संकेत का अनुसरण करती हुई वहाँ पहुँच गईं। उनका दिल बैठता जा रहा था, चेहरे पर विषाद की रेखाएँ उभर आई थीं। कुछ देर तक मुँह से एक भी शब्द नहीं बोल पाए। मन में एक टीस-सी अनुभव हो रही थी। लग रहा था, तबाही निश्चित है! अगर कोई चमत्कार ही हो जाये, तो शायद बच जायें। क्वोमिन्ताङ के मुखिया उन्हें निचोड़ रहे थे; बैंक उन पर दबाव डाल रहा था; दूसरे दुकानदार उनकी पीठ पर छुरा मार रहे थे; जिन दो-एक दुकानदारों से पैसे वसूल करने थे, उनका दिवाला पिट रहा था। ऐसे भीषण थपेड़ों को भला कौन बर्दाश्त कर सकता था! उन्होंने कौन सा पाप किया था कि ये दुर्दिन देखने पड़े! जब से उन्होंने अपने पिता की दुकान का कारोबार सम्भाला था तभी से फिजूलखर्ची से कोसों दूर रहे थे। वे अपना व्यापार बड़ी संजीदगी से करते थे। उन्होंने कभी किसी को नहीं सताया था; कभी किसी के खिलाफ साजिश नहीं रची थी। उनके पिता और दादा भी ऐसे ही थे। फिर भी जिन्दगी के कड़वे घूँट पीने के सिवाय उनके हाथ क्या आया था!

"कोई बात नहीं। फैलाने दो उन्हें अफवाहें! आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है," शओशङ ने मिस्टर लिन को दिलासा दिया, हालाँकि वह खुद भी यह सब देखकर बड़ा खिन्न हो उठा था। "मन्दी के वर्षों में अफवाहों का बाजार गरम रहता है। लोग कह रहे हैं, कस्बे में दस में से नौ दुकानें साल खत्म होने से पहले कर्जा नहीं चुका पायेंगी। वक्त बड़ा खराब आ गया है। बाजार में सभी कारोबार बिल्कुल चौपट होते जा रहे हैं। जिन दुकानों की हालत आम तौर पर अच्छी रहती थी, वे भी इस वर्ष तंग हैं। सिर्फ हमारी ही दुकान ऐसी नहीं जिसे संकट का सामना करना पड़ रहा है! आसमान गिरेगा तो हर आदमी कुचल जायेगा। व्यापार-मण्डल को कोई रास्ता जरूर निकालना होगा। सभी दुकानें एक साथ नहीं उजड़ सकतीं; अगर ऐसा हुआ, तो बाजार भला बाजार कहाँ रह जायेगा!"

बरफबारी तेज होती जा रही थी। हिम के मुलायम रेशे जमीन पर चिपकने शुरू हो गये थे। सड़क पर यदा-कदा कोई कुत्ता टाँगों के बीच दुम दबाए, काँपता हुआ आता दीख जाता। वह सहसा रुक जाता और बदन को जोर से झकझोरता हुआ अपनी खाल पर जमी बरफ की मोटी तहें झाड़कर हल्का हो जाता। इसके बाद वह फिर एक बार दुम दबाकर आगे बढ़ जाता। इस सड़क ने अपने लम्बे इतिहास में इतना ठण्डा और भयावह नववर्ष शायद कभी नहीं देखा था। ठीक उन्हीं दिनों दूर शाङहाए में जापानी फौजें देश के उस फलते-फूलत व्यापार केन्द्र पर बड़े वहशियाना ढंग से भीषण गोलाबारी कर रही थीं।

## 5

वह सचमुच एक बड़ा ही मनहूस नववर्ष का दिन था। वह दिन आया और चला गया। कस्बे की कोई अट्ठाईस छोटी-बड़ी दुकानों पर ताला पड़ गया। उनमें "सबसे ऊँची साख वाली" रेशम की दुकान भी थी। जिन दो दुकानों ने मिस्टर लिन के तीन सौ य्वान चुकाने थे, उनका भी दिवाला निकल चुका था। अन्तिम दिन शओशङ उनके पास जाकर कई घण्टे तकाजा करने के बाद भी सिर्फ बीस य्वान निकाल पाया था। पता चला कि बाद में उनसे कोई एक भी दमड़ी वसूल नहीं कर पाया। दोनों दुकानों के मालिक कहीं छिप गये थे और उनका अता-पता किसी को मालूम नहीं हो सका था। व्यापार-मण्डल के मुखिया की मध्यस्थता की बदौलत कम से कम मिस्टर लिन के छिपने की नौबत तो नहीं आई थी। पर उन्हें वायदा करना पड़ा था कि नए साल के पहले महीने की पन्द्रह तारीख तक बैंक का चार सौ य्वान का कर्जा चुका देंगे। इसके लिए उन्हें बहुत कड़ी शर्तें स्वीकार करनी पड़ी थीं : पाँच तारीख से, जब कारोबार शुरू होगा; बैंक का प्रतिनिधि दुकान में बैठकर सारी रोकड़ की रक्षा करेगा। जब तक बैंक के पूरे कर्जे का भुगतान नहीं हो जायेगा, तब तक दैनिक आमदनी का अस्सी प्रतिशत बैंक उठा ले जायेगा।

नववर्ष की छुट्टियों में लिन परिवार का घर बरफ की तरह ठण्डा था। मिस्टर लिन बार-बार ठण्डी उसाँसें भर रहे थे। मिसेज लिन की हिचकियाँ पटाखे की लड़ी की तरह छूट रही थीं। मिस लिन न तो हिचकियाँ ले रही थी और न उसाँसें भर रही थी। वह उदास होकर एक ऐसे व्यक्ति की तरह चुपचाप बैठी थी जो बरसों से पीलिया से पीड़ित हो। उसकी नई रेशमी पोशाक को कस्बे के एकमात्र साहूकार की दुकान पर गिरवी रखकर नौकरानी की तनखाह के पैसे जुटाए गये थे। सुबह सात बजे एक नौसिखिए सेल्समैन को उसे गिरवी रखने भेजा गया था। जब वह भीड़ को चीरता हुआ सिर्फ दो य्वान लेकर साहूकार की दुकार से बाहर निकला था, तो नौ बज चुके थे। इसके बाद उस दिन साहूकार की दुकान में लेनदेन बन्द कर दिया गया था। सिर्फ दो य्वान! आपके माल की असली कीमत चाहे कितनी ही क्यों न हो, साहूकार के पास उसका मूल्य ज्यादा से ज्यादा दो य्वान ही लगाया जाता था! यह "दो य्वान की सीमा" कहलाता था। जब कोई किसान कड़ाके की सरदी की परवाह किऐ बिना अपना रूईदार कोट उतारकर काउण्टर पर देता, तो साहूकार का मुंशी उसे ऊपर उठाकर जोर से हिलाता और फिर नाक-भौं सिकोड़कर "यह नहीं चाहिए" कहता हुआ किसान के मुँह पर दे मारता!

नववर्ष दिवस के बाद आसमान साफ हो गया और मौसम में निखार आ गया। मन्दिर के विशाल अहाते में पुराने रिवाज के मुताबिक खोमचेवालों व फेरीवालों की दुकानें लग गयीं और नटकला व जादू के खेल दिखाने वाली मण्डली आ पहुँची। लोग दुकानों के सामने खड़े होकर सामान को देखते, अपनी खाली जेबें टटोलते

और मन मसोसकर आगे निकल जाते। बच्चे माँ का पल्ला पकड़े आतिशबाजियों की दुकान छोड़ने का तब तक राजी नहीं होते जब तक माँ मजबूर होकर एक जोर का चपत न जड़ देती। फेरीवाले, जिन्हें इस बार नए साल के बाजार में अच्छी रकम बनाने की उम्मीद थी, खाने के पैसे भी नहीं जुटा सके। वे लोग स्थानीय सराय का किराया चुकाने लायक पैसे भी नहीं कमा पाए। सराय के मालिक और उनके बीच किराये की अदायगी के बारे में रोज झगड़ा होता था।

सिर्फ नटकला मण्डली ही ऐसी थी जो अब तक आठ य्वान कमा चुकी थी। उसे क्वोमिन्ताङ के मुखियों ने "शान्ति और व्यवस्था" का वातावरण पैदा केरने के लिए बुलवाया था।

चार तारीख की शाम को मिस्टर लिन ने, जो जैसे-तैसे सिर्फ तीन य्वान जुटा सके थे, अपने कर्मचारियों को हर साल की तरह खाने पर बुलाया। इस अवसर पर सबने अगले दिन दुकान खुलने पर अपनाए जाने वाले दाँवपेंचों के बारे में सोच-विचार किया। सभी सम्भावनाएँ मिस्टर लिन के मस्तिष्क में बिल्कुल स्पष्ट थीं : अगर दुकान खोलते हैं, तो घाटा होना अनिवार्य है; अगर बिल्कुल नहीं खोलते, तो उनका और उनके परिवार का जीविका-निर्वाह का साधन समाप्त हो जायेगा। फिर उन्हें लोगों से भी अभी चार-पाँच सौ य्वान वसूल करने हैं; अगर दुकान नहीं खोलेंगे, तो ये पैसे उगाहना और भी मुश्किल हो जायेगा। सो अब केवल एक ही चारा रह गया था—खर्चे में कटौती की जायें लेकिन टैक्स और फौजी शुल्क से बचना सम्भव नहीं था; "निचोड़े जाने" से बचने की सम्भावना बहुत कम थी। तो क्या दो-एक सेल्समैनों की छँटनी कर दी जाये? उनके पास कुल तीन ही सेल्समैन तो थे। तीनों में शओशङ उनका दायाँ हाथ था; बाकी दोनों बहुत गरीब थे। साथ ही ग्राहकों को निपटाने के लिए उनकी मदद जरूरी थी। घर में भी बचत की कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी। नौकरानी को पहले ही निकाल चुके थे। मिस्टर लिन को लगा, अब उनके सामने एकमात्र उपाय यह है कि मैदान में कूद पड़ें। अगर भगवान बुद्ध की दया से किसान लोग वसन्त में कच्चा रेशम बेचकर चार पैसे कमा सकते हैं, तो क्या वे अपना घाटा पूरा नहीं कर सकते?

लेकिन दुकान खोलने में सबसे बड़ी बाधा यह थी कि उनके पास माल बहुत कम रह गया था। शाङहाए को पैसे भेजे बिना नया माल मँगवाना असम्भव था। वहाँ लड़ाई लगातार बढ़ती जा रही थी। इसलिए माल उधार मिलने की कोई सम्भावना नहीं रह गई थी। तो क्या सुरक्षित स्टाक को बेचा जाये? दुकान का बाकी सारा माल दरअसल काफी पहले ही बिक चुका था। अलमारी में रखे जांघिये-बनियान के डिब्बे खाली थे। उन्हें सिर्फ दिखाने के लिए रखा गया था। पूरी दुकान में मुँह-हाथ धोने के तसलों और तौलियाँ के सिवाय और कुछ नहीं बच गया था। हाँ, ये चीज़ें उनके पास काफी थीं।

सब लोग गहरे अवसाद में डूबे शराब की चुस्कियां ले रहे थे। वे हतबुद्धि होकर बैठे थे। किसी को कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। कुछ समय तक वे लोग इधर-उधर की बातें करते रहे। अचानक सेल्समैन आसि बोल पड़ा :

"दुनिया एकदम नरक बनती जा रही है। लोग कुत्तों से भी गया-बीता जीवन बिता रहे हैं! सुना है, शाङहाए में चापेइ क्षेत्र पूरी तरह भस्म हो चुका है। लाख-दो लाख आदमियों को घरबार छोड़कर भागना पड़ा है। हुङखओ क्षेत्र में आगजनी की कोई वारदात नहीं हुई, फिर भी लोग वहाँ से भाग गये हैं। जापानी बड़े खूँखार होते हैं। उन्होंने लोगों को अपना सामान भी साथ नहीं ले जाने दिया। शाङहाए की सुरक्षित बस्तियों में मकान के किराए आसमान को छू रहे हैं। शरणार्थी देहातों की तरफ भाग रहे हैं। उनका एक जत्था कल हमारे कस्बे में भी आया है। सब लोग भले घर के मालूम होते हैं, पर इस समय बेघर हो चुके हैं!"

मिस्टर लिन ने सिर हिलाकर एक ठण्डी उसाँस भरी। पर जब ये शब्द शओशङ के कान में पड़े, तो उसके मस्तिष्क में सहसा एक अनोखा विचार कौंध गया। चापस्टिकें मेज पर रखकर उसने शराब की प्याली उठा ली और पूरा पेग एक ही साँस में गटक गया। फिर मुस्कराता हुआ मिस्टर लिन को सम्बोधित करके बोला :

"आपने आसि की बात सुनी? इसका मतलब है हमारे तसले, तौलिए, साबुन, मोजे, मंजन, टुथ-बुरुश धड़ाधड़ बिक सकते हैं! जितने भी स्टाक में हैं वे सब के सब निकल सकते हैं!"

मिस्टर लिन आँखें फाड़कर देखते रहे। वे नहीं समझ पाए कि शओशङ कह क्या रहा है।

"यह एक बेहद सुनहरा मौका है। शाङहाए के शरणार्थी कुछ न कुछ पैसे तो साथ लाए ही हैं। उन्हें रोजमर्रा के इस्तेमाल की चीजें भी चाहिए। चाहिए कि नहीं? हमें उनकी जरूरत की चीजें बेचने के लिए फौरन तैयारी शुरू कर देनी चाहिए?"

शओशङ ने अपनी प्याली में फिर एक बार शराब उंडेली और फौरन गले के नीचे उतार ली। उसका चेहरा चमक रहा था। बाकी दोनों सेल्समैनों ने भी उसकी बात पकड़ ली। वे खुश हो गये। लेकिन मिस्टर लिन अभी सारी बात नहीं समझ पाए थे। मुसीबत की मार ने उनके दिमाग को बिल्कुल बोदा बना दिया था।

"क्या यह मुमकिन है?" उन्होंने सन्देह व्यक्त किया। "दूसरी दुकानें भी तो तसले और तौलिए बेच रही हैं—"

"पर ऐसे माल का ज्यादा स्टाक हमारी ही दुकान में है। सड़क से उस पार वाली दुकान के पास मुश्किल से दस तसले होंगे, और वे भी दूसरे दर्जे के। व्यापार का यह सुनहरा मौका इस समय हमारी मुट्ठी में है! कुछ इश्तहार कस्बे के चारों दरवाजों पर लगा दिये जाये, उन सभी जगहों पर लगा दिए जायें जहाँ शरणार्थी रहते हैं—आसि, यह तो बताओ वे लोग वहाँ ठहरे हुए हैं? हम वहीं जाकर इश्तहार

लगा देंगे!"

"जिनके रिश्तेदार कस्बे में हैं, वे लोग उनके पास टिक हुए हैं। बाकी लोगों ने पश्चिमी दरवाजे के बाहर रेशम कारखाने की खाली इमारत में डेरा डाला हुआ है।" आसि का चेहरा खुशी से चमक उठा। उसने अनजाने में ही जिस उपाय का सृजन कर डाला था उस पर उसे बड़ा गर्व अनुभव हो रहा था।

अन्त में मिस्टर लिन सारी बात समझ गये। वे खुश हो गये; उनका मुरझाया हुआ दिल फिर से खिल उठा। उन्होंने झटपट इश्तहार का मसौदा तैयार कर डाला। इश्तहार में रोजमर्रा के इस्तेमाल की वे तमाम चीजें शामिल कर ली गयीं जो दुकान में मौजूद थीं। सूची में कोई एक दर्जन से ज्यादा चीजें शामिल की गयीं। शाङहाए की बड़ी-बड़ी दुकानों की नकल करते हुए उन्होंने "एक य्वान में एक पैकेट" की तकनीक अपनाई। सिर्फ एक य्वान में ग्राहक का एक पैकेट मिल सकेगा, जिसमें एक तसला, एक तौलिया, एक टुथ-बुरुश और एक मंजन का डिब्बा होगा। "एक य्वान में एक पैकेट!" इश्तहार के बड़े-बड़े अक्षर मानो जोर-जोर से पुकार रहे थे। शओशङ लाल व हरे कागज के बाकी वर्क भी उठा लाया और उन्हें लम्बी-लम्बी पट्टियों की शकल में काटने के बाद उन पर कूची से लिखने लगा। सेल्समैनों और नौसिखिए सेल्समैनों ने खूब उत्साह के साथ तसलों, तौलियों, टुथ-बुरुशों और मंजन के डिब्बों को बटोरकर उन्हें एक-एक सैट के रूप में पैक करना शुरू कर दिया। काम पूरा करने के लिए आदमी काफी नहीं थे। मिस्टर लिन ने बेटी को भी दुकान में बुला लिया, उसे भी इश्तहार लिखने और पैकेट बाँधने में लगा दिया। उन्होंने दैनिक उपयोग की कुछ अन्य चीजों के पंचमेल पैकेट भी बनाए।

उस रात सब लोग बहुत देर तक दुकान में व्यक्त रहे। पौ फटने से पहले लगभग सभी चीजें सलीके से लगाई जा चुकी थीं। अगले दिन जब पटाखों की आवाज के साथ दुकानें खुलीं, तो लिन परिवार की दुकान की सजधज देखने वाली थी। उसके इश्तहार पूरे कस्बे में लग चुके थे। पश्चिमी दरवाजे के बाहर रेशम कारखाने की दीवारों पर इश्तहार लगाने का काम शओशङ ने खुद किया था। इश्तहार देखकर शरणार्थियों के झुण्ड के झुण्ड उन्हें इस तरह पढ़ने लगे मानो कोई समाचार-बुलेटिन पढ़ रहे हों।

"अन्तःकक्ष" में मिसेज लिन भी उस दिन काफी जल्दी उठ गयीं। उन्होंने करुणामूर्ति भगवान अवलोकितेश्वर की प्रतिमा के सामने धूप जलाई और घुटनों के बल बैठकर काफी देर तक उनके चरणों में बार-बार माथा टेकती रहीं। उन्होंने लगभग सभी चीजों के लिए दुआ माँगी। सिर्फ एक चीज के लिए दुआ माँगना वे भूल गयीं—हे अवलोकितेश्वर, कस्बे में और शरणार्थी आ जायें!

शओशङ की भविष्यवाणी सौ फीसदी सच निकली। मिस्टर लिन की दुकान ही कस्बे की एकमात्र दुकान थी जिसमें नववर्ष की छुट्टी के बाद पहले दिन तेजी से

बिक्री हुई। शाम के चार बजे तक सौ य्वान से ज्यादा की बिक्री हो चुकी थी—पिछले दस वर्षों में कस्बे की किसी भी अन्य दुकान में एक दिन में इतनी ज्यादा बिक्री नहीं हुई थी। "एक य्वान के पैकेट" सबसे ज्यादा बिके। इसका प्रभाव छतरी और रबड़ के बूट जैसी चीजों पर भी पड़ा। सभी चीजों को बिक्री खूब हुई। शरणार्थी आखिर शाङहाए से आए थे। बड़े शहरों के रहन-सहन और तौर-तरीकों के आदी थे। कस्बे कें लोगों या आसपास के गाँवों के किसानों की तरह तंगदिल नहीं थे। जब कोई चीज खरीदने लगते, तो फैसला करने में देर न लगाते। चीज को उठाते, उसे एक नजर देखते और झट पैसे थमा देते। सारा माल उलट-पुलट कर देखने की जरूरत न समझते। दो-चार पैसों के लिए मोलभाव भी न करते।

खुशी से निहाल बेटी अच्छी बिक्री की खबर माँ को सुनाने एक क्षण के लिए "अन्तःकक्ष" में पहुँची, तो मिसेज लिन ने करुणामूर्ति भगवान अवलोकितेश्वर की प्रतिमा के सामने नतमस्तक होकर फिर एक बार प्रणाम किया। मव में विचार आया, अगर शओशङ की उम्र और बेटी की उम्र में ज्यादा अन्तर न होता, तो क्या वह एक अच्छा दामाद नहीं बन सकता था! और यह भी असम्भव न था कि शओशङ की आँख अपने मालिक की सत्रहवर्षीय कन्या पर लगी हो, जिसे वह इतने करीब से जानता-समझता था।

उस दिन सिर्फ एक बात ऐसी हुई जिससे मिस्टर लिन के दिल को बड़ी ठेस पहुँची और रंग में भंग पड़ गया—उनकी प्रतिष्ठा की जरा भी परवाह किए बिना स्थानीय बैंक ने दुकान की अस्सी प्रतिशत दैनिक आमदनी वसूल करने अपना आदमी भेज दिया था। और न जाने किसके उकसावे पर दुकान के तीन ऋणदाता भी यह बहाना बनाकर वहाँ पहुच गये थे कि उन्हें "चावल खरीदने के लिए कुछ पैसे चाहिए" और कुछ सूद पेशगी चाहिए। वे लोग माँग करने लगे कि उन्हें सिर्फ सूद ही नहीं बल्कि असल का भी एक हिस्सा चाहिए। दूसरी तरफ मिस्टर लिन के पास एक अच्छी खबर भी पहुँची—शरणार्थियों का एक और जत्था कस्बे में पहुँच गया था।

उस रोज मिस्टर लिन ने अपने कर्मचारियों को इनाम के तौर पर रात के खाने के साथ गोश्त के दो अतिरिक्त पकवान खिलाए। सभी ने शओशङ की सूझबूझ की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मिस्टर लिन खुश तो थे, पर उन्हें रह-रहकर वह घटना याद आ रही थी जब उनके तीन ऋणदाताओं ने दुकान में आकर कर्जा वसूल करने के लिए तकाजा किया था। नववर्ष के आरम्भ में ऐसी घटना को एक अशुभ लक्षण माना जाता था।

"ये तीनों दरअसल कुछ नहीं समझते!" शओशङ ने कुछ तैश में आकर कहा। "इन लोगों को जरूर किसी न किसी ने उकसाया है!" यह कहकर उसने आँखों से सड़क के उस पार वाली दुकान की तरफ इशारा किया।

मिस्टर लिन ने सहमति में सिर हिला दिया। तीनों ऋणदाता चाहे कुछ समझते हों या न समझते हों, एक बात निश्चित थी : उनसे निपटना असान नहीं था। उनमें एक ऋणदाता बुजुर्ग था और दो विधवाएँ थीं। उनके प्रति न तो नरमी बरती जा सकती थी और न सख्ती। मिस्टर लिन कुछ देर सोचते रहे; अन्त में उन्होंने फैसला किया कि वे व्यापार-मण्डल के प्रधान से इन तीनों अनमोल ऋणदाताओं को समझाने का अनुरोध करेंगे। उन्होंने शओशङ से राय ली। वह एकदम सहमत हो गया।

रात का खाना खाने के बाद मिस्टर लिन ने पूरे दिन की आमदनी का हिसाब किया। फिर व्यापार-मण्डल के प्रधान से मुलाकात करने जा पहुँचे। प्रधान ने मिस्टर लिन का अनुरोध पूरी तरह स्वीकार कर लिया। यही नहीं, जिस होशियारी के साथ मिस्टर लिन ने अपनी बिक्री बढ़ाने में सफलता प्राप्त की थी, उसकी सराहना भी की। उसने आशा व्यक्त की कि मिस्टर लिन की दुकान अवश्य ही मजबूती से अपने पैरों पर खड़ी रहेगी और उनकी हालत दिन ब दिन बेहतर होती जायेगी। व्यापार-मण्डल का प्रधान अपनी ठोढ़ी हिलाता हुआ मुस्कराया और मिस्टर लिन की तरफ झुककर बोला :

"एक बात तुम्हें बहुत दिनों से कहना चाहता हूँ। कहने का मौका नहीं निकाल पाया। क्वोमिन्ताङ कमिश्नर फू ने तुम्हारी बेटी को पता नहीं कहाँ देखा। वह उन्हें बेहद पसन्द आई है। कमिश्नर फू कोई चालीस के होंगे। उनके कोई औलाद नहीं है। घर में दो स्त्रियाँ हैं, पर एक से भी बाल-बच्चा नहीं। अगर तुम्हारी बेटी भी उनके घर चली जाये और उनके पुत्र को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त कर सके, तो वह निश्चित रूप से उनकी पत्नी बन जायेगी, कमिश्नर की बेगम बन जायेगी। ओह, अगर तुम मेरी बात मान जाओ, तो तुम्हारे साथ-साथ मैं भी बहती गंगा में हाथ धो लूँगा!"

मिस्टर लिन ने सपने में भी नहीं सोचा था कि वे इस तरह के धर्म संकट में पड़ जायेंगे। वे बिल्कुल मौन बैठे रहे। व्यापार-मण्डल के प्रधान ने गम्भीरता से अपनी बात जारी रखी :

"तुम जानते हो, हम दोनों पुराने दोस्त हैं। एक-दूसरे से कोई दुराव-छिपाव नहीं रखते। पुरानी मान्यताओं पर चलोगे, तो शायद तुम्हारी जमीर नहीं मानेगी। लेकिन अब मान्यताएँ पहले जैसी नहीं रहीं। आजकल तो यह आम बात हो गई है। तुम्हारी बेटी का उनके घर जाना शादी के बराबर ही माना जायेगा। चूँकि कमिश्नर फू के मन में यह बात बैठ गई है, इसलिए मना करोगे तो कुछ मुश्किल में पड़ सकते हो। अगर मंजूर कर लोगे, तो तुम्हारा भविष्य सचमुच बड़ा उज्ज्वल हो जायेगा। मैं तुम्हारा सच्चा हितैषी न होता, तो शायद तुमसे यह सब न कहता।"

"आपने मुझे सतर्क कर दिया है। शुक्रिया। मैं जानता हूँ कि आपका इरादा नेक है। पर मैं एक मामूली सा आदमी हूँ। मेरी बेटी ऊँचे समाज के तौर-तरीकों से

बिल्कुल अनभिज्ञ है। हम लोगों के दिल में कमिश्नर तक पहुँचने की ख्वाहिश कैसे हो सकती है!" मिस्टर लिन ने अपने रोष को काबू में रखते हुए उत्तर दिया। उनका दिल तेजी से धड़क रहा था।

"नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं हैं सवाल तुम्हारी ख्वाहिश का नहीं बल्कि उनकी पसन्द का है।... फिलहाल तुम इस मसले को छोड़ दो। लौटकर घरवाली से मशविरा कर लो। मैं भी इसे एक तरफ रख देता हूँ। जब कमिश्नर फू से मुलाकात होगी, तो कह दूँगा तुमसे बात करने का मौका ही नहीं मिल पाया। ठीक है ना? पर कम से कम मुझे जरूर जल्दी उत्तर दे देना!"

काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। अन्त में मिस्टर लिन ने मजबूर होकर कह दिया, "हाँ, जल्दी ही उत्तर दे दूँगा।" उनके चेहरे का रंग एकदम उड़ गया था।

घर लौटते ही उन्होंने बेटी को बाहर भेज दिया और सारी घटना पत्नी को विस्तार से सुना दी। पूरी बात खत्म होने से पहले ही मिसेज लिन की हिचकियाँ इतनी तेज हो गईं कि उन्हें पड़ोसी भी सुन सकते थे। वे काफी कोशिश के बाद हिचकियों के ज्वार पर कुछ काबू पा सकीं और हाँफती हुई बोली :

"यह प्रस्ताव हम कैसे मंजूर कर सकते हैं? हिक—अगर रखैल बनाने की बात न भी हो—हिक—हिक अगर पत्नी बनाने की बात भी हो, तो भी मैं उसे अपनी बेटी देने को हरगिज राजी नहीं हूँ!"

"मैं भी यही सोचता हूँ। लेकिन—"

"हिक—हम लोग व्यापार में कानून का उल्लंघन कभी नहीं करते। अगर हमने इंकार कर दिया, तो क्या तुम समझते हो वह हमारी बेटी को जबरन उठा ले जायेगा? हिक—"

"ऐसा तो नहीं होगा। पर कोई बहाना बनाकर हमारे सामने किसी न किसी तरह की मुसीबत जरूर खड़ी कर देगा। ऐसा आदमी डाकू से भी ज्यादा खूँखार होता है!" मिस्टर लिन ने पत्नी के कान में धीरे से कहा। उन्हें रोना आ रहा था।

"बेटी को ले जाने से पहले उसे मेरी लाश पर से गुजरना होगा! हिक—भगवान अवलोकितेश्वर, हमारी रक्षा करो!" मिसेज लिन ने काँपती आवाज में कहा। वे उठीं और कमरे के बाहर जाने लगीं। मिस्टर लिन ने आगे बढ़कर रास्ता रोक लिया।

"तुम आखिर जा कहाँ रही हो? जा कहाँ रही हो?" उन्होंने अनुनयभरे स्वर में पूछा।

तभी मिस लिन कमरे में आ गई। स्पष्ट था कि वह उनकी काफी बातचीत सुन चुकी थी। उसका रंग चूने की तरह सफेद पड़ गया था और आँखें खुली की खुली रह गई थीं। मिसेज लिन ने दोनों बाँहें खोलकर बेटी को गले से लगा लिया तथा रोती हुई और हिचकियाँ लेती हुई रुक-रुककर बड़ी तकलीफ से बोलीं :

"हिक—बेटी—हिक—जो भी तुझे मुझसे छीनने की कोशिश करेगा—हिक—उसे

पहले मेरी लाश पर से गुजरना होगा! हिक—जिस साल तू पैदा हुई थी ठीक उसी साल मुझे यह नामुराद बीमारी लग गई थी। हिक—सत्रह साल मैंने तुझे कितनी मुश्किल से पाला-पोसा! हिक—हिक—चाहक जियें या मरें, हम दोनों एक साथ रहेंगे! हिक—हाय, हमने बड़ी गलती की, तेरी सगाई काफी पहले ही शओशङ से क्यों नहीं कर दी! हिक—वह कमिश्नर फू का बच्चा बड़ा बदमाश है! उसे जरा भी डर नहीं कि भगवान एक न एक दिन उसे भी मिट्टी में मिला देगा।"

मिस लिन "हाय माँ" कहकर रोने लगी। मिस्टर लिन हाथ मलते हुए ठण्डी साँसें भरते रहे। माँ-बेटी जोर-जोर से रो रही थीं। मिस्टर लिन को डर था कि कहीं उनकी आवाज घर की पतली दीवारों को पार करके पड़ोसियों तक न पहुँच जायें नए साल के शुरू में ऐसी घटना को एक अशुभ लक्षण समझा जाता था। अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखते हुए, उन्होंने पत्नी और बेटी को शान्त करने की पूरी कोशिश की।

उस रात लिन परिवार के तीनों सदस्य अच्छी तरह नहीं सो सके। मिस्टर लिन को अगले दिन सुबह-सवेरे ही दुकान पर जाना था, फिर भी पूरी रात उनके मन में तरह-तरह के बुरे विचार आते रहे। अचानक छत पर कोई आवाज हुई, तो डर के मारे उनके होश उड़ गये। उन्हें लगा, कमिश्नर फू उन पर झूठे इल्जाम लगाने आ रहा है! थोड़ी देर में उन्होंने अपने मन को शान्त किया और इस मामले पर अच्छी तरह विचार किया। उनका परिवार खानदानी व्यापारियों का परिवार था, जिसने कानून की कभी अवहेलना नहीं की थी। अगर उनका व्यापार अच्छी तरह चलता रहा और उन पर कर्जे का बोझा न रहा, तो कमिश्नर फू उनका बाल भी बाँका नहीं कर पाएगा। भाग्यवश अब उनकी दुकानदारी कुछ जमने भी लगी थी। यह सारी मुसीबत सिर्फ इसलिए खड़ी हो गई थी क्योंकि उनकी एक खूबसूरत जवान बेटी अभी अविवाहित थी! उन्हें चाहिए था कि अब से कई बरस पहले ही उसकी सगाई कर देते। उस सूरत में शायद आज यह समस्या न खड़ी होती!.. क्या व्यापार-मण्डल का प्रधान सचमुच उनकी मदद करना चाहता था? उनके सामने एकमात्र उपाय यह रह गया था कि सहायता की याचना करने फिर एक बार उसके पास जायें। मिसेज लिन की हिचकियाँ फिर शुरू हो गईं। ओह! यह भी कैसी अजीब बीमारी है!

उजाला होते ही मिस्टर लिन ने बिस्तर छोड़ दिया। उनकी आँखें लाल सुर्ख थीं; पलकें सूज गई थीं; सिर चकरा रहा था। फिर भी अपनी सारी शक्ति बटोरकर दुकान में जा पहुँचे। दुकान का पूरा कामकाज शओशङ पर कैसे छोड़ा जा सकता था। वह बेचारा पिछले कुछ दिनों से दुकान की हालत सुधारने के लिए कमरतोड़ मेहनत कर रहा था।

खजाँची के कठघरे में पहुँचने के बाद भी मिस्टर लिन की बेचैनी कम न हुई। बिक्री अच्छी हो रही थी। फिर भी उनका पूरा तन रह-रहकर सिहर उठता था। जब भी कोई अपरिचित आदमी दुकान में आता, तो मिस्टर लिन उस पर सन्देह करने

लगते। सोचते, कहीं उसे कमिश्नर फू ने जासूसी करने तो नहीं भेजा, गड़बड़ी पैदा करने तो नहीं भेजा? और यह विचार आते ही उनका दिल तेजी से धड़कने लगता।

ताज्जुब की बात यह थी कि उस रोश आशा से अधिक बिक्री हुई। दोपहर तक कोई साठ य्यान का माल बिक चुका था। ग्राहकों में कस्बे के स्थानीय लोग भी थे। ग्राहक चीजों को सिर्फ खरीद ही नहीं रहे थे, बल्कि झपट रहे थे। ऐसा दृश्य आम तौर पर केवल उस दुकान में दिखाई देता है जिसका दिवाला निकल रहा हो और जहाँ सारा माल मिट्टी के भाव बिक रहा हो। मिस्टर लिन काफी खुश थे। पर साथ ही कुछ सशंकित भी थे। इस तरह के व्यापार को वे ठीक नहीं समझते थे। दोपहर के भोजन के समय शओशङ आ पहुँचा और धीरे से बोला :

"बाहर अफवाह फैली हुई है कि आपने बचाखुचा माल निकालने के लिए दामों में भारी कटौती कर दी है और कुछ पूँजी जमा होते ही आप उसे लेकर चम्पत हो जायेंगे।"

यह सुनते ही मिस्टर लिन बौखला उठे। साथ ही घबरा भी गये। मुँह से एक भी शब्द न निकला। अचानक दो वर्दीधारी व्यक्ति भीतर आ घुसे और कड़कती आवाज में बोले :

"लिन साहब कौन हैं? दुकान के मालिक कहाँ हैं?"

मिस्टर लिन हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए। उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वर्दीधारी व्यक्ति उन्हें पकड़कर ले जाने लगे। शओशङ ने रास्ता रोककर कारण पूछना चाहा। पर उन्होंने बड़ी सख्ती से फटकार दिया :

"तुम कौन होते हो कारण पूछने वाले? हट जाओ रास्ते से। इन्हें क्वोमिन्ताङ के दफ्तर में पूछताछ के लिए बुलाया गया है!"

## 6

शाम हो गई, पर मिस्टर लिन नहीं लौटे। तीसरे पहर दुकान में सब लोग बेहद व्यस्त रहे। इसलिए शओशङ उनका पता लगाने खुद नहीं जा पाया। उसने यह बात मिसेज लिन को भी नहीं बताई। पर उन्हें एक नौसिखिए सेल्समैन से पता चल गया। सुनते ही मिसेज लिन गुस्से से पागल हो उठीं। उन्होंने मिस लिन को घर से बाहर नहीं निकलने दिया।

"ये बदमाश तेरे पिता को पकड़ ले गये हैं अब तेरी बारी है! हिक—"

शओशङ को अन्दर बुलाकर मिसेज लिन ने विस्तार से पूछताछ की। पर उसने उन्हें ज्यादा बताना उचित नहीं समझा।

"घबराओ नहीं, माँ जी," उसने दिलासा दिया, "यह कोई खास बात नहीं है। लिन साहब क्वोमिन्ताङ के दफ्तर गये हैं। ऋणदाताओं का मसला हल करने। दुकान

में बिक्री अच्छी हो रही है। हमें डर किस बात का है!"

मिसेज लिन से आँख बचाकर शओशङ ने मिस लिन के कान में कहा, "यह सब क्या हो रहा है, इसे अभी हम लोग अच्छी तरह नहीं समझ पाए।" उसने मिस लिन को सलाह दी कि अपनी माँ की अच्छी तरह देखभाल करे। दुकान के काम की चिन्ता न करे। उसे वह खुद सम्भाल लेगा। मिस लिन बिल्कुल नहीं समझ पा रही थी कि वह क्या करे। इसलिए शओशङ की हाँ में हाँ मिलाती जा रही थी।

ग्राहकों को निपटाने और मिसेज लिन के सवालों का बार-बार जवाब देने में शओशङ इतना व्यस्त रहा कि उसे मिस्टर लिन की खबर लेने का समय भी नहीं मिल पाया। अन्त में जब साँझ हो गई, तो व्यापार-मण्डल का प्रधान यह खबर लेकर आ पहुँचा : मिस्टर लिन को क्वोमिन्ताङ के मुखियों ने इसलिए पकड़ रखा है क्योंकि कस्बे में अफवाह है कि वे दुकान की सारी पूँजी बटोरकर चम्पत होने की तैयारी कर रहे हैं। बैंक और थोक व्यापारी का भुगतान करने के अलावा उन्हें अपने तीन गरीब ऋणदाताओं का कर्जा भी चुकाना है। इन ऋणदाताओं ने दुकान में जो छः सौ पचास य्वान की रकम लगाई है वह डूबने वाली है। क्वोमिन्ताङ इन गरीबों के हितों की विशेष रूप से खैरख्वाह है। इसलिए जब तक इनका पूरा हिसाब नहीं चुका दिया जायेगा, तब तक मिस्टर लिन को नहीं छोड़ा जायेगा।

शओशङ के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। साहस बटोरकर उसने पूछ ही लिया :

"क्या उन्हें जमानत पर छुड़ाया जा सकता है? जब तक उन्हें छुड़ाया नहीं जायेगा, पैसे कहाँ से जुटाए जा सकेंगे?"

"उँह! तो तुम उन्हें जमानत पर छुड़ाना चाहते हो! जब तक पैसे नहीं ले जाओगे, जमानती कैसे बन सकते हो?"

"प्रधान जी, कोई न कोई रास्ता जरूर निकालिए। मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ। हम पर मेहरबानी कीजिए। लिन साहब आपके पुराने दोस्त हैं। उनकी मदद कीजिए।"

व्यापार-मण्डल के प्रधान ने गहरे सोच-विचार के अन्दाज में अपनी भौंहें सिकोड़ लीं, एक क्षण के लिए शओशङ की तरफ देखा और फिर उसे दुकान के एक कोने में ले जाकर धीरे से कहा :

"मिस्टर लिन की परेशानी देखकर मैं हाथ पर हाथ धरे कैसे बैठ सकता हूँ। पर इस समय स्थिति बड़ी तनावपूर्ण है। बात यह है कि मैं कमिश्नर फू से मदद करने का निवेदन पहले ही कर चुका हूँ। कमिश्नर साहब चाहते हैं कि मिस्टर लिन अगर उनकी एक बात मान लें तो वे पूरी मदद करेंगे। मैं अभी-अभी क्वोमिन्ताङ के दफ्तर में मिस्टर लिन से मिलकर आ रहा हूँ। मैंने उन्हें कमिश्नर फू की बात मान लेने की सलाह दी और वे मान भी गये। क्या मामले को रफादफा करने के लिए इतना काफी नहीं था? पर कौन जानता था कि वह चेचक के दाग वाला काला-कलूटा क्वोमिन्ताङ अफसर इतनी दुष्टता दिखाएगा? वह अब भी इस बात पर अड़ा हुआ

है कि–"

"जाहिर है कि वह कमिश्नर फू के खिलाफ काम नहीं कर सकता।"

"मैं भी यही सोचता था! पर वह चेचक के दाग वाला अफसर लगातार भुनभुनाता-बड़बड़ाता रहा। कमिश्नर फू बड़ी मुश्किल में पड़ गये। दोनों में जबरदस्त तूतू-मैंमैं हो गई। देखा तुमने, मामला कितना जटिल हो गया है!"

शओशङ ने एक गहरी उसाँस भरी। उसे इन सब बातों का कुछ पता न था। थोड़ी देर खामोशी छाई रही। कुछ देर बाद उसने फिर एक बार गहरी उसाँस भरी और बोला

"लेकिन मिस्टर लिन ने आखिर क्या अपराध किया है?"

"वे लोग भला तर्क करना क्या जानें! वे तो बस एक ही बात जानते हैं–जिसकी लाठी उसकी भैंस! मिसेज लिन ने कह देना कि चिन्ता न करें। मिस्टर लिन के साथ अभी तक कोई बुरा सलूक नहीं किया गया। पर उन्हें छुड़ाने के लिए कुछ पैसे जरूर खर्च करने पड़ेंगे!"

व्यापार-मण्डल के प्रधान ने दो उँगलियाँ दिखाकर इशारा किया और तुरन्त वहाँ से चला गया।

शओशङ ने काफी माथापच्ची की। पर उसे कोई दूसरा रास्ता नहीं सूझा। बाकी दो सेल्समैनों ने तरह-तरह के सवाल पूछकर उसकी नाक में दम कर डाला। पर उसने टाल दिया। व्यापार-मण्डल के प्रधान की सारी बात मिसेज लिन को बताई जाये या नहीं, इसका फैसला वह नहीं कर पा रहा था। लगता था, उने लोगों को फिर एक बार पैसे खर्च करने पड़ेंगे! मिसेज लिन के पास अपना धन कितना है इसकी जानकारी तो उसे न थी, पर दुकान की माली हालत उससे छिपी न थी। पिछले दो दिनों में स्थानीय बैंक द्वारा दुकान की अस्सी फीसदी आमदनी उठाये जाने के बाद तिजोरी में सिर्फ पचास य्वान बाकी रह गये थे। इससे कैसे काम चल सकता था! व्यापार-मण्डल का प्रधान दो सौ य्वान की घूस देने का इशारा कर गया था। कौन जानता था कि इतने से ही काम चल जायेगा! जैसी हालत उस समय चल रही थी, उसमें अगर बिक्री बढ़ भी जाती, तो भी कोई फायदा नहीं होने वाला था। शओशङ का दिल टूट गया।

सहसा पीछे के कमरे से किसी ने उसे पुकारा। अन्दर जाने से पहले उसने सोच लिया कि वह पहले स्थिति को देखेगा और तब फैसला करेगा कि क्या कहा जायें मिसेज लिन बेटी के कन्धे का सहारा लिए खड़ी थीं।

"हिक–अभी-अभी–हिक–व्यापार-मण्डल का प्रधान आया था–हिक–"वह हाँफती हुई बोली। "वह क्या कह रहा था?"

"कहाँ आया था?" शओशङ जानता था कि वह झूठ बोल रहा है।

"क्या तुम मुझे धोखा देना चाहते हो?–हिक–मैं–हिक–सब जानती

हूँ—हिक—तुम्हारे चेहरे का रंग उड़ा हुआ है! मेरी बेटी ने उसे देखा है—हिक!"

"धीरज से काम लो, माँ जी। प्रधान कह रहा था, सब कुछ ठीक हो गया है। कमिश्नर फू मदद करने को तैयार है।—"

"क्या कहा? हिक—हिक—क्या कहा? कमिश्नर फू मदद करने को तैयार है! हिक—हिक—भगवान अवलोकितेश्वर, हमारी रक्षा करो! हिक—मुझे उसकी मदद नहीं चाहिए! हिक—हिक—मैं जानती हूँ कि लिन साहब—हिक—हिक टूट चुके हैं। हिक—मैं मरना चाहती हूँ। पर मुझे सिर्फ अपनी बेटी की—हिक—चिन्ता है! हिक—हिक—उसे तुम अपने साथ ले जाओ! हिक! तुम दोनों जाओ और जल्दी से शादी कर लो! हिक—हिक—शओशङ—हिक—तुम उसकी अच्छी तरह देखभाल करना। मैं इत्मीनान से मर सकूँगी! हिक! जाओ, जल्दी आओ! वे लोग बेटी आश्यू का अपहरण करने आ रहे हैं! हिक—वे जंगली जानवर हैं! हे भगवान अवलोकितेश्वर, तुम्हारी अलौकिक शक्ति कहाँ चली गई? उसे दिखाते क्यों नहीं?"

सुनकर शओशङ हक्काबक्का रह गया। समझ नहीं पाया कि क्या कहे। सोचा, मिसेज लिन शायद पागल हो गई हैं। पर पागलपन का कोई लक्षण उनके चेहरे पर नज़र नहीं आ रहा था। शओशङ का दिल तेजी से धड़कने लगा। उसने कनखियों से मिस लिन की तरफ देखा। मिस लिन का मुँह लज्जा से लाल हो गया था और वह सिर झुकाए चुपचाप खड़ी थी।

"शओशङ, कोई तुमसे मिलने आया है!" एक नौसिखिया सेल्समैन दौड़ा-दौड़ा अन्दर आया और शओशङ से बोला।

यह सोचकर कि व्यापार-मण्डल का प्रधान अथवा कोई अन्य जाना-माना व्यक्ति आया होगा, शओशङ फौरन दुकान में चला गया। पर जब उसने सड़क के उस पार वाली दुकान के मालिक ऊ को देखा, तो हैरान रह गया। वह आखिर किसलिए आया है, शओशङ नहीं समझ पाया और उसके चेहरे की ओर देखता रहा।

दुकानदार ऊ ने मिस्टर लिन के बारे में पूछताछ की और फिर मुस्कराते हुए कहा कि उसे पक्का यकीन है कोई "गम्भीर बात नहीं है"। शओशङ को उसकी मुस्कराहट बड़ी रहस्यपूर्ण मालूम हुई।

"मैं दरअसल तुम्हारी दुकान से कुछ सामान खरीदने आया हूँ—" दुकानदार ऊ के चेहरे से मुस्कराहट खत्म हो चुकी थी और उसकी तर्ज बदल गई थी। उसने अपनी आस्तीन के अन्दर से कागज की एक पर्ची निकाली, जिसमें एक दर्जन से कुछ ज्यादा चीजों की सूची थी—उन सभी चीजों की जिन्हें मिस्टर लिन अपने "एक य्वान के पैकेट" में बेच रहे थे। सूची देखते ही शओशङ समझ गया। अच्छा, तो यह षडयन्त्र रचा जा रहा है!

"आप जानते ही हैं कि लिन साहब यहाँ नहीं हैं," उसने तुरन्त उत्तर दिया, "मुझे इसका फैसला करने का अधिकार नहीं है।"

"मिसेज लिन से क्यों नहीं पूछ लेते? क्या उनसे पूछना काफी नहीं है?"

शओशङ शशोपंज में पड़ गया। वह उत्तर देने में हिचकिचा रहा था। अब उसे कुछ-कुछ समझ में आने लगा था कि मिस्टर लिन को क्यों पकड़ा गया है। पहले अफवाह उड़ाई गई कि मिस्टर लिन भागने की तैयारी कर रहे हैं, फिर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, और अब उनका प्रतिद्वन्द्वी माल हथियाने आ पहुँचा है। ये तीनों घटनाएँ निश्चित रूप से एक दूसरे से जुड़ी हुई थीं। शओशङ को गुस्सा आने लगा, और साथ ही कुछ घबराहट भी महसूस होने लगी। वह जानता था कि अगर उसने दुकानदार ऊ की माँग स्वीकार कर ली, तो मिस्टर लिन का कारोबार चौपट हो जायेगा। उनकी दुकान के लिए खुद उसने भी तो खून-पसीना बहाया है। वह सब भी बेकार जायेगा। लेकिन अगर इंकार कर दिया, तो न जाने और कितने षड्यंत्रों का सामना करना पड़ेगा? यह सोचने का साहस उसे नहीं था।

"अच्छा, तो मैं मिसेज लिन से पूछकर आता हूँ," उसने अनिश्चितता के स्वर में कहा। "लेकिन मिसेज लिन सिर्फ नकद लेनदेन करती हैं।"

"नकद लेनदेन? शओशङ, क्या मुझसे मजाक कर रहे हो?"

"मजाक नहीं, सच कह रहा हूँ। मिसेज लिन का यही तरीका है। उनके सामने मैं कुछ नहीं कर सकता। सबसे अच्छा यह होगा कि आप कल फिर आ जायें। व्यापार-मण्डल के प्रधान ने बताया है कि लिन साहब के मामले में कमिश्नर फू मदद करने को तैयार हैं। आज रात शायद वे घर लौट आयें।" शओशङ एक-एक शब्द बहुत सोच-समझकर बोल रहा था। उसने माल की सूची दुकानदार ऊ को लौटा दी।

दुकानदार ऊ के माथे पर बल पड़ गये। उसने फिर एक बार माल की सूची शओशङ को थमा दी।

"ठीक है, ठीक है। अगर तुम्हें नकद चाहिए, तो नकद ही सही। आज रात आऊँगा और माल उठा ले जाऊँगा। पैसे माल उठाते समय दूँगा।"

शओशङ परेशान होकर पीछे के कमरे में जा पहुँचा। उसने मिसेज लिन को बता दिया कि सड़क के उस पार वाला दुकानदार हमारा माल हथियाना चाहता है।

"जब व्यापार-मण्डल का प्रधान यहाँ आया था, तो उसने कहा था : लिन साहब अच्छी तरह हैं; उन्हें कोई परेशानी नहीं है। पर उन्हें रिहा कराने के लिए हमें कुछ पैसे खर्च करने होंगे। दुकान में सिर्फ पचास य्वान पड़े हैं। इधर सड़क के उस पार वाला दुकानदार हमसे सारा माल खरीदना चाहता है—उसे कोई डेढ़ सौ य्वान का माल चाहिए। यह माल उसे बेच क्यों न दिया जाये? मिस्टर लिन को जल्दी से जल्दी रिहा कराना जरूरी है!"

यह सुनकर कि उन्हें फिर पैसे खर्च करने पड़ेंगे, मिसेज लिन की आँखों से आँसू टपकने लगे और फिर से हिचकियों का ताँता लग गया। वे कुछ न बोल पाईं। सिर्फ हाथ हिलाती रहीं और अपना सिर जोर-जोर से मेज पर पटकती रहीं। जब शओशङ

ने देखा कि कोई बात नहीं बन पा रही, तो वह चुपचाप बाहर चला गया। मिस लिन भी उसके साथ दुकान में चली गई। उसका चेहरा सफेद पड़ गया था, गला रुँध गया था और आवाज काँप रही थी।

"माँ गुस्से में अपना होश-हवास खो बैठी है," मिस लिन घबराकर बोली। "वे बार-बार कह रही हैं, उन लोगों ने पापा को मार डाला है! तुम ऊ साहब की बात फौरन मान लो। पापा का बचा लो! जल्दी करो! शओशङ, जल्दी–" कहते-कहते उसका चेहरा अचानक लाल हो गया और वह पीछे के कमरे में लौट गई।

शओशङ हक्काबक्का रह गया और कोई आधे मिनट तक उसकी ओर देखता रहा। फिर प्रतिद्वन्द्वी दुकानदार को माल बेचने के इरादे से लैस होकर दुकान के काम में जुट गया। कम से कम मिस लिन तो उससे सहमत थी।

रात का खाना मेज पर लग चुका था। पर शओशङ को बिल्कुल भूख नहीं थी। ज्यों ही दुकानदार ऊ से पैसे मिले, शओशङ सौ य्वान हाथ में लेकर और अस्सी य्वान जेब में छिपाकर व्यापार-मण्डल के प्रधान की तलाश में निकल पड़ा।

कोई आधे घण्टे बाद शओशङ मिस्टर लिन को साथ लेकर वापस लौट आया। ज्यों ही वे दोनों "अन्तःकक्ष" में घुसे, मिसेज लिन भौचक्की रह गयीं। जब उन्होंने देखा कि वे सचमुच मिस्टर लिन ही हैं, तो भावनाओं के आवेश में भगवान अवलोकितेश्वर की मूर्ति के सामने लेटकर साष्टाँग प्रणाम करने के बाद घुटनों के बल बैठकर देवता के चरणों में बार-बार माथा टेकने लगीं। वे माथा टेकते समय अपना सिर इतनी जोर से जमीन पर पटक रही थीं कि उससे होने वाली आवाज में उनकी हिचकियों की आवाज डूब गई। मिस लिन आँखें फाड़कर देखती हुई एक तरफ खड़ी थी। लगता था, वह हँसना भी चाहती है और रोना भी। शओशङ ने कागज का एक पैकेट जेब से निकाला और उसे मेज पर रख दिया।

"ये अस्सी य्वान हमें इस्तेमाल नहीं करने पड़े।"

मिस्टर लिन ने एक ठण्डी साँस ली। फिर भर्राई हुई आवाज में बोले :

"तुमने मुझे मरने क्यों नहीं दिया, वहीं खत्म क्यों नहीं होने दिया? रिहा कराने के लिए और पैसे खर्च करने की क्या जरूरत थी? अब हमारे पास फूटी कौड़ी भी नहीं रह गई। सबको भूख से तड़प-तड़प कर मरना पड़ेगा!"

मिसेज लिन उत्तेजित होकर उठ खड़ी हुई। वे कुछ कहना चाहती थीं। पर हिचकियों की लड़ी में उलझकर शब्द गले में ही अटक गये और बाहर नहीं निकल पाए। मिस लिन चुपचाप सिसकियाँ भरने लगी। मिस्टर लिन नहीं रोए। वे बार-बार आहें भरते रहे और भर्राई हुई आवाज में बोले :

"हमारी दुकान का सारा माल उठ चुका है! अब हम अपना कारोबार भला कैसे चला सकते हें। दूसरी तरफ ऋणदाता अपना कर्जा वसूल करने के लिए जबरदस्त तकाजा कर रहे हैं–"

"लिन साहब!"

यह शओशङ की आवाज थी। चाय में उँगली डुबोकर उसने मेज पर लिख दिया—"सब कुछ छोड़छाड़कर भाग जाइए!"

मिस्टर लिन ने सिर हिलाकर इंकार कर दिया। उनकी आँखें गीली हो गई। उन्होंने पत्नी की ओर देखा, बेटी की ओर देखा, और फिर एक गहरी उसाँस भरी।

"इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं, लिन साहब! दुकान से सौ य्वान और खींचे जा सकते हैं। उन्हें साथ ले जाइए। महीने दो महीने गुजारा चल जायेगा। मैं यहाँ सब ठीक कर लूँगा।"

शओशङ धीरे-धीरे फुसफुसा रहा था, फिर भी मिसेज लिन ने सुन ही लिया। हिचकियाँ रोककर वे बोल पड़ीं :

शओशङ, तुम भी चले जाओ। तुम और आश्यू बेटी दोनों चले जाओ! मुझे यहाँ अकेली छोड़ दो। मैं अकेली ही आखिरी दम तक लड़ती रहूँगी! हिक!

मिसेज लिन सहसा पहले से ज्यादा तन्दुरुस्त और जवान लगने लगीं। वे पीछे मुड़ीं और सीढ़ियों से ऊपर जाने लगीं। मिस लिन "माँ!" कहकर उनके पीछे दौड़ी। मिस्टर लिन भौचक्के रह गये और सीढ़ियों की तरफ देखते रहे। उन्हें लगा, जैसे कोई महत्वपूर्ण बात उन्हें साफ-साफ याद न आ रही हो।

"आप आश्यू को भी अपने साथ ले जाइए," शओशङ ने अनुरोध किया। "अगर आश्यू यहाँ रही, तो मिसेज लिन चिन्ता से परेशान हो जायेंगी! वे कहती हैं, वे दुष्ट इसका अपहरण—"

मिस्टर लिन की आँखों से टपटप आँसू गिरते जा रहे थे। वे सिर हिलाते हुए शओशङ की बात सुनते रहे। पर कोई फैसला नहीं कर पाये।

शओशङ की आँखें डबडबा आयीं। उसने एक आह भरी और मेज के आसपास चक्कर लगाने लगा।

तभी मिस लिन के रोने की आवाज सुनाई दी। मिस्टर लिन और शओशङ फौरन सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जा पहुँचे। मिसेज लिन कागज का एक पैकेट हाथ में उठाए नीचे आ रही थीं। उन्हें देखकर फिर अपने कमरे में लौट गई और बोली :

"दोनों अन्दर आ जाओ और मेरी बात ध्यान से सुनो।" हाथ के पैकेट की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने अपनी बात जारी रखी। "यह मेरी निजी बचत है—हिक—लगभग दो सौ य्वान होंगे। इसे तुम दोनों में आधा-आधा बाँट रही हूँ। हिक! आश्यू बेटी, मैं तेरी शादी शओशङ के साथ कर रही हूँ! हिक—कल तू भी अपने पिता के साथ चली जा। हिक—मैं नहीं जाऊँगी! शओशङ कुछ दिनों तक मेरे साथ रहेगा, फिर देखा जायेगा। कौन जानता है मेरी जिन्दगी कितनी बाकी रह गई है! हिक—अगर तुम दोनों मेरी आँखों के सामने दाम्पत्य-सूत्र में बँध जाओ, तो मैं शान्ति से मर सकूँगी! हिक—"

मिसेज लिन ने एक हाथ से बेटी को और दूसरे हाथ से शओशङ को पकड़कर आदेश दिया कि दोनों घुटनों के बल बैठकर परिणय-सूत्र में बँधने का वचन दें। दोनों ने वैसा ही किया। दोनों के सिर झुक गये; गाल शर्म से लाल हो गये। शओशङ ने कनखियों से मिस लिन की ओर देखा। उसके आँसूभरे चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान खेल रही थी। शओशङ का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। आँखों से टपटप दो आँसू ढुलक गये।

"ठीक है। सब कुछ वैसा ही होगा जैसा तुम चाहती हो!" मिस्टर लिन ने एक ठण्डी आह भरी। "लेकिन शओशङ, एक बात याद रखना। जब तक यहाँ रहो, उन बदमाशों से निपटने में बेहद सावधानी बरतना!"

## 7

अन्त में लिन परिवार की दुकान पर ताला पड़ गया। मिस्टर लिन के भाग जाने की खबर जल्दी ही आग की तरह पूरे कस्बे में फैल गई। ऋणदाताओं में सबसे पहले स्थानीय बैंक ने अपने आदमी भेजकर स्टाक पर कब्जा कर लिया। उन्होंने बहीखाते ढूँढ़ने की कोशिश की। पर एक भी न मिला। शओशङ को बुलवाया गया। वह बीमार पड़ गया था, इसलिए नहीं आ सका। मिसेज लिन को कुरेदने की कोशिश की गई। पर उत्तर में विस्फोटक हिचकियों की लड़ी और आँसुओं की धार के सिवाय कुछ हाथ न आया। चूँकि उन्हें समाज में "मिसेज लिन" के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त थी, इसलिए वे लोग उनका कुछ नहीं बिगाड़ सके।

सुबह के ग्यारह बजे तक लिन परिवार की दुकान पर भारी कोलाहल होता रहा और ऋणदाता लड़ते-झगड़ते रहे। स्थानीय बैंक और अन्य ऋणदाताओं के बीच इस बात पर झगड़ा होता रहा कि बाकी परिसम्पत्ति को कैसे बाँटा जायें हालाँकि दुकान का स्टाक लगभग खत्म हो चुका था, फिर भी बचेखुचे माल और फर्नीचर आदि का मूल्य देनदारों का सत्तर प्रतिशत कर्जा उतारने के लिए काफी था। पर हर आदमी नब्बे प्रतिशत या शत प्रतिशत भुगतान के लिए संघर्ष कर रहा था। व्यापार-मण्डल का प्रधान चिल्ला-चिल्लाकर थक गया, पर कोई फायदा नहीं हुआ।

लाठी उठाए दो पुलिसमैन दुकान के दरवाजे पर तमाशा देखने के लिए एकत्रित भीड़ पर खौखिया रहे थे।

"मैं अन्दर क्यों नहीं जा सकती? इस दुकान में मेरे तीन सौ य्वान लगे हुए हैं! जिन्दगीभर की बचत लगी हुई है!" मिसेज चू अपने सूखे होंठ चबाती हुई एक पुलिसमैन से बहस कर रही थी वे भीड़ को चीरती हुई डगमगाते कदमों से आगे बढ़ गई। उनके माथे पर नीली धमनियाँ कानी उँगली की तरह उभर आई थीं। वे लगातार आगे बढ़ती जा रही थीं। अचानक उनकी नजर विधवा चाङ पर पड़ी, जो अपनेपाँच

वर्ष के बच्चे को गोद में उठाए एक अन्य पुलिसमैन से अन्दर जाने की अनुमति के लिए अनुरोध कर रही थी। पुलिसमैन ने विधवा की ओर कनखियों से देखा और गोद के बच्चे को चिढ़ाने के बहाने से अपनी हथेली की पुश्त से उसके उरोजों को मसल दिया।

"चाङ बहन–" मिसेज चू हाँफती हुई बोलीं। अपने झुर्रीदार मुँह को प्रयत्नपूर्वक हिलाती हुई वे पत्थर की सीढ़ियों पर बैठ गई।

विधवा चाङ आँखों में आँसू भरकर बरबस आगे बढ़ती जा रही थी। सहसा उसकी नजर मिसेज चू पर पड़ी, जो पत्थर की सीढ़ियों पर बैठी हाँफ रही थीं। वह मिसेज चू पर गिरते-गिरते बची और उनके बगल में जा बैठी। विधवा चाङ ने रोते-रोते अपना दुखड़ा सुनाना शुरू कर दिया :

"हाय! मुन्ने के बापू, तुम मुझे अकेला छोड़कर क्यों चले गये! हाय, मैं कितनी अभागिन हूँ! उन दुष्ट सैनिकों ने तुम्हारी हत्या कर दी–परसों ही तो इस घटना को तीन साल हुए हैं!.. इस पापी लिन का सत्यानाश हो–यह निपूता ही मर जाये! दुष्ट ने दुकान को ताला लगा दिया है! मैंने खून-पसीना एक करके डेढ़ सौ य्वान कमाए। वे सब समुद्र में डूब गये, रसातल में चले गये! हाय! हम गरीबों की यहाँ कौन सुनता है! धनवानों के दिल में दया कहाँ!–"

माँ को रोता देखकर बच्चा भी रोने लगा। विधवा चाङ ने उसे गले से लगा लिया और बिलख-बिलख कर रोने लगी।

मिसेज चू नहीं रोई, वे शान्त बैठी रहीं। गड्ढे में धँसी लाल-लाल आँखें फाड़कर वे गुस्से में बोलीं :

"गरीबों को एक ही बार जिन्दगी मिलती है और अमीरों को भी। अगर इन लोगों ने मेरे पैसे न लौटाए, तो मैं इनके लिए जीना हराम कर दूँगी!"

तभी एक आदमी दुकान से बाहर निकाला। वह बुजुर्ग छन था। छन के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। वह भीड़ को हटाता जा रहा था और कोसता जा रहा था :

"अरे ओ चालबाजो, तुम्हें इसकी कीमत जरूर चुकानी पड़ेगी! एक दिन तुम्हें जरूर नरक की आग में जलना पड़ेगा! जब घाटा हो, तो बचेखुचे माल का हिस्सा हर एक को मिलना चाहिए। अगर मुझे भी थोड़ा सा हिस्सा मिल जाता, तो कम से कम न्याय तो कहलाता–"

दोनों स्त्रियों को सीढ़ियों पर बैठा देखकर भी उसने कोसना जारी रखा।

"चाङ बहन, चू चाची, तुम यहाँ किसलिए रो रही हो!" वह जोर से चिल्लाया। "उन लोगों ने सारा माल आपस में बाँट लिया है। मेरा एक मुँह उनके बारह मुँहों का मुकाबला नहीं कर पाया। धूर्तों के इस गिरोह को उचित-अनुचित की जरा भी परवाह नहीं। कहते हैं, हमारे पैसों की कोई गिनती नहीं है–"

उसकी बात सुनकर विधवा चाङ फूट-फूट कर रोने लगी। रसिक पुलिसमैन फिर

उसके पास जा पहुँचा और लाठी से उसके कन्धे को कोंचता हुआ बोला :

"क्यों री, रो काहे को रही है? तेरा आदमी तो कब का मर चुका। अब किसके लिए आँसू बहा रही है?"

"चल हट नरक के कीड़े!" बुजुर्ग छन गरजा! "अन्दर वे लोग हमारा धन लूट रहे हैं और यहाँ तेरे जैसे लफंगे औरतों से छेड़छाड़ कर रहे हैं!" उसने पुलिसमैन को जोर से एक तरफ धकेल दिया।

पुलिसमैन की शातिर आँखें फैल गईं। वह लाठी उठाकर बुजुर्ग छन पर झपटने ही वाला था कि भीड़ ने चिल्लाकर उसे रोक दिया। दूसरा पुलिसमैन दौड़कर उसके पास जा पहुँचा और बुजुर्ग छन को अपनी तरफ खींचता हुआ बोला :

"हमारे खिलाफ क्यों बवंडर खड़ा कर रहे हो? हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? हमें यहाँ पहरा देने व्यापार-मण्डल ने भेजा है। हमें भी रोटी खानी है। हम इसमें क्या कर सकते हैं?"

"छन चाचा, जाओ, क्वोमिन्ताङ के दफ्तर में जाकर शिकायत दर्ज क्यों नहीं करा देते!" भीड़ में से एक आदमी बोल पड़ा। यह कुख्यात लोफर लू की आवाज थी।

"ठीक तो है, जाओ, जाते क्यों नहीं?" कई दूसरे लोगों ने सलाह दी। "देखें, वे लोग क्या कहते हैं?"

बीच-बचाव करने वाला पुलिसमैन बड़े व्यंग्यपूर्ण ढंग से मुस्कराया और बुजुर्ग छन को कन्धे से पकड़कर बोला : "मेरी सलाह मानो, तो वहाँ मत जाओ। जाने से कोई फायदा नहीं होगा, उल्टे कोई नई मुसीबत गले पड़ जायेगी। दुकानदार लिन के लौटने तक सबर करो और उसी से अपने पैसे वसूल करना। तुम्हारे पैसे लौटाने से वह भला कैसे इंकार कर सकता है!"

गुस्से से बुजुर्ग छन के नथुने फूल गये। पर वह फैसला नहीं कर पया। तमाशबीन भीड़ अब भी उसे "जाने" की सलाह दे रही थी। उसने मिसेज चू और विधवा चाङ की तरफ देखा और बोला :

"तुम दोनों का क्या ख्याल है? वे लोग दिन-रात गरीबों के खैर-ख्वाह होने का ढोल पीटते रहते हैं? देखें, आज हमारे लिए क्या करते हैं!"

"बिल्कुल ठीक कह रहे हो!" भीड़ मे से कोई बोल पड़ा। "कल उन्होंने दुकानदार लिन को भी यही कहकर गिरफ्तार किया था कि वह गरीबों के पैसे मारकर भाग जाना चाहता है!"

बुजुर्ग छन और उन दोनों स्त्रियों को भीड़ ने क्वोमिनताङ के दफ्तर में जाने के लिए मजबूर कर दिया। विधवा चाङ चलते-चलते रोती जा रही थी और अपने पति की हत्या करने वाले सैनिकों को कोसती भी जा रही थी। साथ ही भगवान से विनती भी करती जा रही थी कि दुकानदार लिन निपूता ही मर जाये ओर उस लम्पट पुलिसमैन का नाश हो!

क्वोमिनाताङ के दफ्तर के पास पहुँचकर उन्होंने देखा, दरवाजे के बाहर चार पुलिसमैन लाठियाँ उठाए खड़े हैं। पुलिसमैन दूर से ही चिल्लाए:

"वापस लौट जाओ! भीतर जाने की इजाजत नहीं है।"

"हम लोग अपनी शिकायत दर्ज कराने आए है।!" बुजुर्ग छन जोर से बोला। वह भीड़ की सबसे अगली पंक्ति में था। "लिन परिवार की दुकान पर ताला पड़ चुका है। उस दुकान में हमने जो रकम लगाई है वह डूब चुकी है।....."

अचानक चेचेक के दाग वाला एक काला-कलूटा अफसर सन्तरियों के पीछे से निकल आया और उसने चिल्लाकर भीड़ पर हमला करने का आदेश दे दिया। पर पुलिसमैन अपनी जगह खड़े रहे और सिर्फ धमकियाँ देते रहे। बुजुर्ग छन के पीछे खड़ा जनसमूह जोर-जोर से शोर मचा रहा था।

"अरे ओ  हरामजादो! यहाँ क्या करने आए हो?" चेचक के दाग वालाअफसर चिल्लाया। "तुम लोग अपना भला-बुरा कतई नहीं समझते! सोचते हो, तुम्हारा रोना-धोना सुनने के सिवाय हमारे पास और कोई काम नहीं! अगरतुम लोग फौरन यहाँ से न हटे, तो हमें मजबूर होकर गोली चलानी पड़ेगी!"

उसने जमीन पर जोर से पैर पटका और पुलिसमैनों को लाठीचार्ज का हुक्म दे दिया। बुजुर्ग छन सबसे अगली पँक्ति में खड़ा था। इसलिए उसे कई लाठियाँ लगीं। चारों तरफ भगदड़ मच गई। मिसेज चू बूढ़ी और कमजोर थी। इसलिए भाग नहीं सकीं और जमीन पर गिर पड़ीं हड़बड़ाहट में विधवा चाङ की चप्पलें गुम हो गई। धक्कमधक्का में वह जमीन पर औंधी गिरी। भागने वालों के पैरों तले रौंदे जाने से बचने की कोशिश करती हुई वह कुछ देर जमीन पर रेंगती रही। फिर उठी और तेजी से भाग निकली। तब कहीं उसे याद आया कि उसका बच्चा गोद में नहीं है। उसकी जाकिट के ऊपरी भाग में खून के धब्बे नजर आ रहे थे।

"हाय माँ! मेरा जिगर का टुकड़ा कहाँ गया! मेरी आँख का तारा कहाँ गया! इन खूनी डाकुओं ने उसे मार डाला! ये दुष्ट जनता के खून की होली खेल रहे हैं। हे परमेश्वर, हमें बचाओ!"

विधवा चाङ के बाल अस्तव्यस्त थे। वह भीषण विलाप करती हुई तेजी से भागती जा रही थी। लिन परिवार की दुकान के बन्द दरवाजों के सामने पहुँचते-पहुँचते वह पूरी तरह पागल हो गई।

18 जून 1932

# लेखक के बारे में

कथाकार माओ तुन, जिनका असली नाम शन येनपिङ है, चीन में 1919 के नव-साहित्य आन्दोलन के दौरान साहित्यिक क्षितिज पर प्रकट होने वाले एक मूर्धन्य क्रान्तिकारी यथार्थवादी लेखक हैं। उनका जन्म 1896 में चच्याङ प्रान्त की थुङश्याङ काउण्टी में हुआ था। नवम्बर 1920 में उन्होंने चङ चनत्वो, ये शङथाओ और अन्य लेखकों के साथ मिलकर साहित्यिक अनुसन्धान सोसाइटी नामक संगठन की स्थापना की, जो नए साहित्य का पक्षपोषण करने वाला एक प्रारम्भिक संगठन था। 1921 में उन्हें "कथा-कहानी" नामक एक साहित्यिक मासिक का सम्पादक नियुक्त किया गया, जिसे शाङहाए के वाणिज्य प्रेस द्वारा प्रकाशित किया जाता था। इस पत्रिका की विषयवस्तु में उन्होंने आमूल परिवर्तन कर डाला और तत्कालीन चीनी साहित्य पर छाए सामन्ती और दलाल-पूँजीवादी प्रभावों पर उसके माध्यम से निर्मम प्रहार किया।

1926 से 1927 तक उन्होंने हानखओ के क्रान्तिकारी दैनिक "मिनक्वो रपाओ" (गणतंत्र दैनिक) का सम्पादन किया। जब च्याङ च्येशि (च्याङ काई-शेक) ने क्रान्ति के साथ गद्दारी कर दी और क्वोमिनताङ ने घोर कम्युनिस्ट-विरोधी रास्ता अपना लिया, तो वे हानखओ छोड़कर शाङहाए लौट गये।

इसके बाद वे माओ तुन के नाम से उपन्यास लिखने लगे। इस काल की रचनाओं में उन्होंने क्वोमिनताङ के प्रतिक्रियावादी शासन का पर्दाफाश किया और जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों को प्रतिबिम्बित किया। उन्होंने 1927 में "नासूर" (उपन्यासत्रयी), 1930 में "इन्द्रधनुष", 1931 में "तीन साथी" औ 1933 में "आधी रात" नामक उपन्यास लिखे। साथ ही अनेक कहानियों, निबन्धों और लेखों की रचना भी की।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध (1937-45) के दौरान माओ तुन ने "साहित्यिक मोर्चा" नामक पत्रिका का सम्पादन करते हुए अपनी साहित्यिक गतिविधियाँ जारी रखीं तथा "ह्रास" (1941) और "वसन्त के फूल जैसे लाल तुषारमय पत्ते" (1942) नामक उपन्यासों, "छिङमिङ के त्यौहार के अवसर पर" (1944) नामक नाटक तथा अनेक कहानियों, निबन्धों और लेखों का सृजन किया।

1949 में चीन लोक गणराज्य की स्थापना के बाद माओ तुन को चीन का संस्कृति मंत्री नियुक्त किया गया ओर 1964 तक वे इसी पर पर काम करते रहे।

1954 में उन्हें चीन की प्रथम राष्ट्रीय जनप्रतिनिधि सभा का सदस्य निर्वाचित किया गया। तब से उन्हें हर राष्ट्रीय जनप्रतिनिधि सभा का सदस्य चुना जाता रहा। माओ तुन अखिल चीन कला-साहित्य संघ के उपाध्यक्ष, चीनी लेखक संघ के अध्यक्ष तथा चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की पाँचवीं राष्ट्रीय कमेटी के उपाध्यक्ष भी रहे। उनका निधन 27 मार्च 1981 को हुआ।